हिंदी दैनिक
कोयलांचल संवाद
रांची व धनबाद से एक साथ प्रकाशित
रांची, शनिवार, 12 जुलाई, 2025 वर्ष : 13 अंक : 53 मूल्य : 3 रुपए
www.koylanchalsamvad.com

YouTube Subscribe
Koylanchal samvad news

राहुल बोले-महाराष्ट्र की तरह बिहार में वोट चुराने की कोशिशः इलेक्शन...
सुप्रीम कोर्ट के सुझाव को मानेगा चुनाव आयोग?
सैमसंग की भारत में प्रोडक्शन बढ़ाने की तैयारीः एपल 97%...

झारखंड विधानसभा का मानसून सत्र एक अगस्त से

कैबिनेट की 27 एजेंडों पर मुहर, महंगाई भत्ता बढ़ा

रांची : झारखंड विधानसभा का मानसून सत्र 1 अगस्त से 7 अगस्त तक चलेगा. इस दौरान दो और तीन अगस्त को अवकाश रहेगा. इस तरह इस मानसून सत्र में पांच कार्यदिवस होंगे. झारखंड कैबिनेट की बैठक में आज शुक्रवार को इस प्रस्ताव पर मुहर लगी. झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की बैठक में कुल 27 एजेंडों को मंजूरी दी गयी.

राज्य सरकार के कर्मियों को अपुनरीक्षित वेतनमान (पंचम वेतनमान) में एक जनवरी 2025 के प्रभाव से महंगाई भत्ता की दरों में वृद्धि की स्वीकृति दी गयी है. राज्य सरकार के पेंशनधारियों/पारिवारिक पेंशनभोगियों को अपुनरीक्षित वेतनमान (छठा केन्द्रीय वेतनमान) में एक जनवरी 2025 के प्रभाव से महंगाई राहत की दरों में वृद्धि की स्वीकृति दी गयी है. राज्य सरकार के कर्मियों को अपुनरीक्षित वेतनमान (छठा केन्द्रीय वेतनमान) में एक जनवरी 2025 के प्रभाव से महंगाई भत्ता की दरों में वृद्धि की स्वीकृति दी गयी है.

दो वेतनवृद्धि पर रोक को यथावत रखने की स्वीकृतिः रांची के नामकुम की तत्कालीन सीओ (अंचल अधिकारी) कुमुदिनी टुडू (कोटि क्रमांक-35/20) द्वारा समर्पित अपील अभ्यावेदन को अस्वीकृत करते हुए उनके विरूद्ध विभागीय संकल्प सं०-26661, दिनांक-01.08.2024 द्वारा अधिरोपित दण्ड असंचयात्मक प्रभाव से दो वेतनवृद्धि पर रोक को यथावत रखने की स्वीकृति दी गयी. रांची के नामकुम स्थित नयाभुसूर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अभिनीति सिद्धार्थ को सेवा से बर्खास्त करने की स्वीकृति दी गयी. जामताड़ा जिले के नाला के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की चिकित्सा पदाधिकारी डॉ स्नेहा सिंह को सेवा से बर्खास्त करने की स्वीकृति दी गयी. जमशेदपुर के तत्कालीन प्रभारी सिविल सर्जन डॉ अरविन्द कुमार लाल (सम्प्रति सेवा से बर्खास्त) को झारखंड उच्च न्यायालय द्वारा वाद सं०-1855/2022 में दिनांक-03.04.2024 को पारित आदेश के आलोक में सेवा से बर्खास्तगी आदेश को निरस्त करने की स्वीकृति दी गयी.

झारखंड के सभी थानों के लिए गाड़ियों की खरीदारी की स्वीकृतिः झारखंड कैबिनेट ने राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली के तहत एकीकृत पेंशन योजना के संचालन की स्वीकृति दी. झारखंड अवर शिक्षा सेवा के पूर्व में सृजित पदों के आलोक में वर्त्तमान आवश्यकतानुसार पदों का प्रत्यर्पण एवं स्वीकृति दी गयी. झारखंड के सभी थानों के लिए चार पहिया एवं दो पहिया गाड़ियों की खरीदारी की स्वीकृति दी गयी.

साहिबगंज के करमाटांड़ से जुराल पथ को ग्रामीण कार्य विभाग से पथ निर्माण विभाग को हस्तांतरित करते हुए चौड़ीकरण, मजबूतीकरण एवं पुनर्निर्माण कार्य के लिए एक सौ इक्कीस करोड़ चौहत्तर लाख उनतीस हजार तीन सौ रुपए की प्रशासनिक स्वीकृति दी गयी. -शेष 3 पर

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने पूर्व मंत्री चंद्रशेखर दुबे को अर्पित की श्रद्धांजलि

रांचीः मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री और वरिष्ठ समाजवादी नेता स्वर्गीय चंद्रशेखर दुबे (ददई दुबे) के पार्थिव शरीर पर पुष्प चक्र अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की.मुख्यमंत्री ने दिवंगत नेता के आवास पर जाकर शोकाकुल परिजनों से मुलाकात की और अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की. उन्होंने इस अपूरणीय क्षति पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि "ददई दुबे जी का जीवन जनसेवा और सिद्धांतों के प्रति समर्पण का प्रतीक रहा है. उनका राजनीतिक और सामाजिक योगदान झारखंड के इतिहास में सदैव याद रखा जाएगा.मुख्यमंत्री ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति और परिजनों को इस दुःख की घड़ी में संबल एवं धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की.

संक्षिप्त खबरें

आंध्र प्रदेश में 1310 करोड़ से बनेगा देश का नया विलवणीकरण संयंत्र

अमरावती (ईएमएस)। आंध्र प्रदेश के काकीनाडा जिले के कोना गांव में खारे समुद्री जल को ताजे पानी में बदलने के लिए एक अत्याधुनिक विलवणीकरण संयंत्र स्थापित किया जाएगा। यह परियोजना ऑरो इंफ्रा रियल्टी एंड इंफ्रास्ट्रक्चर की अनुषंगी कंपनी काकीनाडा एसईजेड लिमिटेड द्वारा 1310 करोड़ रुपये के निवेश से विकसित की जा रही है। संयंत्र की क्षमता प्रतिदिन 3800 लाख लीटर (38 करोड़ लीटर) समुद्री जल को प्रसंस्कृत करने की होगी। इसके लिए समुद्र से संयंत्र तक दो विशेष समुद्री जल अंतर्ग्रहण पाइपलाइन बिछाई जाएंगी। संयंत्र से उत्पादित शुद्ध जल को उद्योगों और बंदरगाहों तक विशेष पाइपलाइनों के माध्यम से पहुंचाया जाएगा। इस परियोजना को हाल ही में केंद्र सरकार के वन मंत्रालय की विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति से कुछ शर्तों के साथ तटीय विनियमन क्षेत्र की मंजूरी मिली है। काकीनाडा विशेष आर्थिक क्षेत्र पहले से ही एक उभरता हुआ औद्योगिक और व्यापारिक केंद्र है, और यह संयंत्र क्षेत्र की जल आवश्यकताओं को पूरा कर औद्योगिक विकास को नई गति देगा। साथ ही, यह पर्यावरणीय दृष्टि से टिकाऊ जल समाधान की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है।

1 जनवरी से 125 सीसी से कम दोपहिया वाहनों में एबीएस अनिवार्य

- मंत्रालय ने कंपनियों की मांग खारिज की

नई दिल्ली (ईएमएस)। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (एमओआरटीएच) ने दोपहिया वाहन कंपनियों की उस मांग को खारिज कर दिया है, जिसमें उन्होंने एंटी-लॉक ब्रेकिंग सिस्टम (एबीएस) को सभी नए छोटे वाहनों में अनिवार्य न करने की अपील की थी। अब 1 जनवरी 2026 से 50 सीसी से अधिक या 50 किमी/घंटा से तेज रफ्तार वाले सभी नए दोपहिया वाहनों में एबीएस लगाना अनिवार्य होगा, चाहे वे पेट्रोल हों या इलेक्ट्रिक। इस फैसले से सबसे अधिक असर 125 सीसी से कम क्षमता वाले वाहनों पर पड़ेगा, जो कुल दोपहिया बाजार का 77 फीसदी हिस्सा बनाते हैं। कंपनियों का कहना है कि एबीएस लगाने से प्रति वाहन 3,500 से 6,000 रुपए तक की अतिरिक्त लागत आएगी। इससे उनकी सालाना लागत करीब 7,300 करोड़ रुपये बढ़ सकती है और वाहन कीमतें भी बढ़ेंगी। कंपनियों ने यह भी तर्क दिया कि वर्तमान में बाजार में मांग पहले से ही धीमी है, ऐसे में कीमत बढ़ाना ग्राहकों की जेब पर भी असर पड़ेगा। इसके अलावा एबीएस निर्माण में इस्तेमाल होने वाले दुर्लभ मैग्नेट की आपूर्ति पर चीन का नियंत्रण है, जिसने 4 अप्रैल से इनकी सप्लाई रोक दी है। इससे वाहन निर्माण पर वैश्विक स्तर पर असर पड़ रहा है। बजाज, हीरो, टीवीएस, सुजुकी, होंडा, एथर जैसी प्रमुख कंपनियों और सियाम के प्रतिनिधियों ने हाल ही में मंत्रालय से इस नियम को टालने की अपील की थी, लेकिन मंत्रालय ने सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए अपने फैसले पर अडिग रहने का संकेत दिया है। यह कदम सड़क सुरक्षा की दिशा में बड़ा सुधार माना जा रहा है, लेकिन इसके चलते कंपनियों और उपभोक्ताओं दोनों को आर्थिक दबाव का सामना करना पड़ सकता है।

शुभांशु शुक्ला 14 जुलाई को धरती पर लौटेंगेःचार दिन मिशन आगे बढ़ा; पहले 10 जुलाई को स्पेस स्टेशन से वापसी होनी थी

टेक्सासः भारतीय एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला 14 जुलाई को धरती पर लौटेंगे। अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा ने गुरुवार को इसकी जानकारी दी। एक्सियम-4 मिशन के तहत शुभांशु सहित चार क्रू सदस्य इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पहुंचे थे। एक्सियम मिशन को 25 जून को फ्लोरिडा के कैनेडी स्पेस सेंटर से लॉन्च किया गया था। ड्रैगन अंतरिक्ष यान 28 घंटे की यात्रा के बाद 26 जून को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर डॉक किया गया था। हालांकि, यह मिशन 14 दिनों का था। अब एस्ट्रोनॉट की वापसी चार दिन देरी से होगी। इससे पहले 6 जुलाई को शुभांशु के आईएसएस स्टेशन से कुछ तस्वीरें सामने आईं थीं। जिसमें शुभांशु कपोला मॉड्यूल के विंडो से पृथ्वी देखते नजर आ रहे थे। कपोला मॉड्यूल एक गुंबदनुमा ऑब्जर्वेशन विंडो है, जिसमें 7 खिड़कियां होती हैं।

भारतीय रेल INDIAN RAILWAYS
सत्यमेव जयते भारत सरकार

विकसित भारत का संकल्प
युवा सामर्थ्य से हुआ सशक्त

युवाओं को सरकारी नौकरी देने के लिए
रोजगार मेला

51,000 से अधिक चयनित अभ्यर्थियों को देशभर में 47 स्थानों पर आयोजित समारोहों में नियुक्ति पत्रों का वितरण

प्रधानमंत्री
नरेन्द्र मोदी
के द्वारा

शनिवार, 12 जुलाई, 2025 | प्रात: 11:00 बजे
(वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से)

- भारत सरकार और सहयोगी राज्य सरकारों द्वारा मिलकर रोजगार के अवसरों का निरंतर हो रहा सृजन
- महिलाओं, दिव्यांगजनों और विभिन्न जिलों के आकांक्षी अभ्यर्थियों को विशेष लाभ
- यूपीएससी, एसएससी, रेलवे भर्ती बोर्ड और आईबीपीएस जैसी प्रतिष्ठित एजेंसियों के माध्यम से नियुक्तियां
- समान अवसरों के लिए 13 क्षेत्रीय भाषाओं में भर्ती परीक्षाओं की सुविधा
- i-GOT कर्मयोगी पोर्टल पर 2800 से अधिक उच्च गुणवत्तायुक्त पाठ्यक्रमों से 1.21 करोड़ से अधिक सरकारी कर्मचारी प्राप्त कर रहे प्रशिक्षण
- ऑनलाइन सिस्टम से खाली पदों और भर्ती प्रक्रिया की निरंतर निगरानी
- पारदर्शी नियुक्ति प्रक्रिया सुनिश्चित एवं पेपर लीक के खिलाफ कड़ा कानून लागू

DD NEWS डीडी न्यूज पर कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखें

प्रशिक्षण सम्बन्धी अधिक जानकारी के लिए कर्मयोगी मॉड्यूल वेबसाइट https://igotkarmayogi.gov.in पर जाएं या क्यू आर कोड को स्कैन करें

हमें फॉलो करें

संक्षिप्त खबरें...

श्रावन माह की पहली दिन लगी शिवालयों में भीड़, किया जलाभिषेक

बड़कागांव(हज़ारीबाग)। बड़कागांव प्रखंड के दर्जनों शिवालयों में श्रावन की पहली दिन के अवसर पर शिव भक्तों ने शिवलिंग पर जलाभिषेक किया। देवों के देव महादेव से मनचाहा वर मांगा। इस दौरान बड़कागांव महुदी पहाड़ स्थित प्राचीन शिव मंदिर में शिवलिंग पर जल चढ़ाने को लेकर शिव भक्तों की भीड़ लगी रही। शिव भक्त अहले सुबह से ही बुढ़वा महादेव मंदिर में जल चढ़ाना शुरू कर दिए। शिव भक्त शाम तक शिवलिंग पर जल चढ़ाते नजर आए। इस दौरान बड़कागांव उप प्रमुख बचनदेव कुमार ने अपने सहयोगियों के साथ बुढ़वा महादेव मंदिर में पूजा अर्चना की और क्षेत्र की शांति के लिए महादेव से कामना की। बता दें कि बुढ़वा महादेव परिसर में श्रावन भर शिव भक्तों की भीड़ लगी रहती है। वहीं पूर्णिमा के दिन भव्य मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें हजारों की संख्या में शिव भक्त भाग लेते हैं।

जनप्रतिनिधियों ने किया आयुष आरोग्यम मंदिर का सोशल ऑडिट

हज़ारीबाग। शुक्रवार को सदर प्रखंड के मोरांगी पंचायत स्थित आयुष आरोग्यम मंदिर का सोशल ऑडिट किया गया। इस अवसर पर सदर प्रखंड प्रमुख बीणा देवी, उप प्रमुख रविकांत सिंह, करबेकला के सरपंच मुकेश कुमार एवं मोरांगी पंचायत की मुखिया दायामनी मिंज उपस्थित रहे। निरीक्षण के दौरान डॉक्टर मुकेश कुमार एवं सीएचओ द्वारा स्वास्थ्य केंद्र की विधि-व्यवस्था, संसाधनों एवं सुविधाओं की विस्तार से जानकारी दी गई। बताया गया कि केंद्र में लेबोरेटरी, लेबर रूम, आवश्यक जांच सुविधाएं एवं अन्य बुनियादी सेवाएं उपलब्ध हैं, जिससे ग्रामीणों को अब बेहतर उपचार सुलभ हो सकेगा। जनप्रतिनिधियों द्वारा औचक निरीक्षण में केंद्र की व्यवस्थाओं को देखा गया और सभी ने संतोष व्यक्त किया। प्रमुख बीणा देवी ने कहा कि आयुष आरोग्यम मंदिर ग्रामीण स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक प्रभावी पहल है और इसकी सुव्यवस्था निश्चित रूप से क्षेत्र के लोगों को लाभ पहुंचाएगी। इस अवसर पर उप प्रमुख रविकांत सिंह ने भी स्वास्थ्यकर्मियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि ग्रामीणों के लिए यह केंद्र आशा की किरण बनकर उभरेगा। जनता ने भी स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त किया और नियमित सेवाएं मिलने की उम्मीद जताई।

विश्व जनसंख्या दिवस पर परिवार स्वास्थ्य मेला माह सह परिवार नियोजन पखवाड़ा का शुभारंभ

बरकट्ठा(हज़ारीबाग)। बरकट्ठा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में विश्व जनसंख्या दिवस पर परिवार स्वास्थ्य मेला माह सह परिवार नियोजन पखवाड़ा का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि प्रखंड प्रमुख रेणु देवी, उपप्रमुख सूरजी देवी, चिकित्सा पदाधिकारी डॉ रत्ना रानी कुंज, प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष प्रदीप प्रसाद, उपाध्यक्ष कुदूश अंसारी, स्वास्थ्य मंत्री सह पंसस युसुफ अंसारी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर उदघाटन किया। प्रमुख रेणु देवी ने उपस्थित सहिया और सेविकाओं को डोर टू डोर जाकर जनसंख्या दिवस पर चलाए जा रहे कार्यक्रम के विषय में अधिक से अधिक लोगों को जागरूक करने का निर्देश दिया।साथ ही बढ़ रही जनसंख्या के कारण होने वाले समस्यायों से लोगों को अवगत कराया। कहा कि हम दो हमारे दो के नारों को अपनाने के लिए लोगों को जागरूक करें। चिकित्सा प्रभारी डॉ रत्ना रानी ने कहा कि जनसंख्या नियंत्रण के लिए सरकार द्वारा कई तरह के कार्यक्रम और सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही है लोगों को इसका लाभ लेना चाहिए।कार्यक्रम में उपप्रमुख प्रतिनिधि उत्तीम महतो, प्रधान लिपिक सोनी रविदास, बीपीएम रंजीत कुमार, हेल्थ मैनेजर पंकज कुमार, भावेश कुमार सिंह, सुधीर कुमार, बीटीटी प्रकाश पंडित, ज्ञानी प्रसाद समेत अन्य कई लोग मौजूद रहे।

विद्युत करंट के चपेट में आने से गाय की हुई मौत

बरकट्ठा(हज़ारीबाग)। बरकट्ठा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम मेरमगड्डा निवासी चेतलाल रविदास की गाय विद्युत करंट के चपेट में आने से मौत हो गई। शुक्रवार को खेत में चर रही गाय बिजली तार अर्थ के संपर्क में आने से उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई।मुखिया मुन्नी देवी ने बताया कि बीते एक साल से बिजली विभाग के अधिकारियों को झुल रहे तार के विषय में जानकारी दी जा रही है।साथ ही विडियो बनाकर भी विभाग को भेजा गया लेकिन किसी की निंद नहीं खुली. मवेशी मौत की जवाबदेही विद्युत विभाग की है। उन्होंने कहा कि इस समस्या का समाधान समय रहते नहीं किया गया तो कभी भी बड़ी घटना घट सकती है।उन्होंने बिजली विभाग से मुआवजे की मांग की है।

बस की चपेट में आकर 10 साल के बच्चे की मौत, विरोध में एनएच जाम

लातेहारः रांची-मेदिनीनगर राष्ट्रीजय उच्चह पथ-75 पर शुक्रवार की दोपहर बस की चपेट में आकर बाइक सवार 10 वर्षीय अंकित कुमार की मौत हो गयी. मनिका थाना क्षेत्र के नामूदाग गांव के पास हुई इस दुर्घटना में बाइक चला रहा नाबालिग राहुल कुमार गंभीर रूप से घायल है. दोनों आपस में चचेरे भाई हैं. मिली जानकारी के अनुसार, मेदिनीनगर से रांची की ओर जा रही माधव बस ने विपरित दिशा से आ रही बाइक को धक्का मार दिया. सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की मदद से गंभीर रूप से घायल राहुल कुमार को मनिका सीएचसी पहुंचाया. वहां प्राथमिक इलाज के बाद उसे रिम्सन रेफर कर दिया गया. हादसे के बाद चालक बस छोड़कर भाग निकला. घटना से गुस्सोये लोगों ने एनएच-75 को जाम कर दिया. परिवार वाले मुआवजा देने की मांग रहे थे. जाम की सूचना पर मनिका थाना प्रभारी शशि कुमार मौके पर पहुंचे और लोगों को समझा-बुझा कर करीब एक घंटा बाद जाम हटवाया. पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए लातेहार सदर अस्पोताल भेज दिया, जबकि बस को जब्त कर लिया है. थाना प्रभारी ने पीड़ित परिवार को प्रावधान के अनुसार मुआवजा दिलाने का आश्वासन दिया है.

संत तुलसीदास इंटर कॉलेज में शोक सभा का आयोजन, नम आंखों के बीच दी गयी श्रद्धांजलि

संवाददाता विश्रामपुर (पलामू) : रेहला-बी मोड़ स्थित संत तुलसीदास इंटर कॉलेज में शुक्रवार को शोक सभा का आयोजन किया गया। सभा में कॉलेजकर्मियों ने नम आंखों के बीच पूर्व मंत्री चन्द्रशेखर दुबे उर्फ ददई दुबे को श्रद्धांजलि अर्पित किया। स्व॰ दुबे के सम्मान में दो मिनट का मौन भी रखा गया। प्रभारी प्राचार्य अर्चना कुमारी ने कहा कि कॉलेज के उत्तरोत्तर विकास में ददई दुबे का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कॉलेज के ऊपरी मंजिल का भवन भी उन्होंने ही बनवाया था। इसके अलावा कई शैक्षणिक संसाधन भी कॉलेज को उपलब्ध कराया था। मौके पर इरफान अहमद,राजीव चौबे,रेणु कुमारी,रूपा कुमारी,सोनालिका कुमारी,सुशील यादव,इबारत खलीफा,संतोष ठाकुर,सोनी कुमारी,सुभाष पांडेय,लक्ष्मीकांत शुक्ला,अमित चौबे,पंकज चौबे,प्रभाकर सिंह,विशाल चंद्रवंशी,अनिल शुक्ला,रामा तिवारी,सुजीत चौबे,पानपति कुंवर,अनिमेष तिवारी सहित सभी कॉलेजकर्मी मौजूद थे।

पूर्व मंत्री ददई दुबे के निधन पर कई लोगों ने जताया दुःख

चंद्रशेखर दुबे उर्फ ददई दुबे के निधन पर कई लोगों ने दुःख जताया है। दुख व्यक्त करने वालों में पलामू सांसद विष्णु दयाल राम,पूर्व सांसद कामेश्वर बैठा,पूर्व मंत्री रामचंद्र चंद्रवंशी,वरीय समाजसेवी सह राजनेता अभिमन्यु सिंह उर्फ बबलू सिंह,पूर्व विस प्रत्यासी सुधीर कुमार चंद्रवंशी,सामाजिक सेवा समिति अध्यक्ष संजय पांडेय,समाजसेवी प्रेम शंकर दुबे,पूर्व प्रमुख संतोष चौबे,जिला पार्षद विजय रविदास,नप अध्यक्ष प्रतिनिधि नईमुदिन अंसारी,युवा समाजसेवी ऋतुराज मिश्रा,पूर्व नप अध्यक्ष देवनारायण सिंह,मजदूर नेता मनोज शुक्ला,अशोक सिंह,अरविंद पांडेय,कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष रवींद्र शुक्ला गुड्डू,कांग्रेस नगर अध्यक्ष ऋषि पांडेय,झामुमो प्रखंड अध्यक्ष एनामुल हक गुडु,बीस सूत्री अध्यक्ष रामचंद्र दीक्षित,पूर्व नप उपाध्यक्ष अजय बक्स राय उर्फ बढ़कू सिंह,संजय उपाध्याय,बचनदेव चौधरी,डॉ इलियास अंसारी सहित कई लोगों का नाम शामिल है।

रांची से आज आयेगा ददई दुबे का पार्थिव शरीर, वाराणसी में होगा दाह संस्कार

पूर्व मंत्री चन्द्रशेखर दुबे उर्फ ददई दुबे का पार्थिव शरीर सड़क मार्ग से शनिवार को रांची से आयेगा। शनिवार अहले सुबह तीन बजे पार्थिव शरीर लेकर परिजन रांची से चलेंगे,सात बजे मेदिनीनगर स्थित कांग्रेस के जिला कार्यालय में अंतिम दर्शन के लिये पार्थिव शरीर रखा जायेगा। उसके बाद पड़वा मोड़,भंडार,बी मोड़,रेहला होते हुये भाया गढ़वा पैतृक गांव चोका ले जाया जायेगा। जहां अंतिम दर्शन के बाद पार्थिव शरीर को वाराणसी ले जाया जायेगा। वहीं गंगा किनारे राजा हरिश्चंद्र घाट पर उनका दाह संस्कार होगा।

उपायुक्त ने जनता दरबार में सुनीं आमजनों की समस्याएं

हज़ारीबाग। हज़ारीबाग समाहरणालय सभागार में शुक्रवार को साप्ताहिक जनता दरबार का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह ने की। जिले के विभिन्न प्रखंडों एवं गांवों से आए 25 से अधिक आवेदकों ने अपनी समस्याएं उपायुक्त के समक्ष प्रस्तुत कीं। समस्याओं में मुख्यतः पेंशन, भूमि विवाद, अवैध कब्जा,अबुआ आवास, म्यूटेशन,मुआवजा, राशन कार्ड एवं व्यक्तिगत उत्पीड़न से जुड़ी शिकायतें प्रमुख रहीं।उपायुक्त ने प्रत्येक आवेदक से व्यक्तिगत रूप से भेंट की तथा उनकी शिकायतों को गंभीरता से सुनकर संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। कई मामलों में उन्होंने तत्काल टेलीफोन के माध्यम से अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई हेतु निर्देशित किया।उपायुक्त ने सदर अनुमंडल पदाधिकारी को मामले की जांच कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने और नियमानुसार कार्रवाई करने का निर्देश दिया। उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह ने सभी संबंधित पदाधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि वे प्रत्येक मामले की शीघ्र जांच कर पारदर्शी, न्यायसंगत और त्वरित समाधान सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि जनता दरबार आम नागरिकों से सीधा संवाद स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है, जिससे शासन की पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व को मजबूती मिलती है।

विधायक के पहल पर बारिश से टूट गए पुलिया को बनाया , आवागमन शुरू

जनता में खुशी, विधायक रोशनलाल चौधरी का जताया अभार

बड़कागांव(हज़ारीबाग)। बड़कागांव प्रखंड के कांडतरी पंचायत अंतर्गत ग्राम महुदी टोला सतबहिया डैम नाला पर शिवाडीह हेंदेगिर की मुख्य सड़क पर बना पुलिया भारी बारिश के कारण पूरी तरह से टूट गया था।जिसकी खबर प्रातः आवाज अखबार में पुख्ता से छपा था।टूटी पुलिया मामले को लेकर बड़कागांव विधायक रौशनलाल चौधरी ने हजारीबाग उपायुक्त से मिलकर बात रखी थी एवं पत्र भी लिखा था।और अंततः विधायक का पहला रंग लाया और पुलिया बनकर तैयार हो गया और अब सरपट गाड़ियां दौड़ने लगी है।गौरतलब है कि पिछले मूसलाधार बारिश से सतबहिया पुल पूरी तरह टूट कर बह गया था।जिसके कारण कई पंचायत के लोगों का आवागमन पूरी तरह बंद हो गया था।जिसमें विशेष कर पलांडू , कुंदरू , चेलंदाग सहित दर्जनों गांव के लोगों का संपर्क सीधे प्रखंड मुख्यालय से टूट गया था।वहीं विद्यार्थियों को स्कूल पहुंचने एंव लोगों को आने जाने काफी परेशानी हो रही थी।स्कूली बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे थे।विधायक के पहल पर आवागमन चालू होने पर आम जनता एवं स्कूली बच्चों में काफी खुशी देखी जा रही है।और सभी के द्वारा जनता विधायक रौशनलाल चौधरी का आभार जताया तथा इस कार्य में मेहनत करने वाले सभी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया है , इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वालों में मुख्य रूप से पूर्व वार्ड सदस्य सुरेंद्र महतो,समाज सेवा नारायण महतो का अहम सहयोग रहा।

हज़ारीबाग में फाइलेरिया उन्मूलन हेतु एमडीए-आईडीए अभियान 10 से 25 अगस्त तक

हज़ारीबाग। हज़ारीबाग जिले में फाइलेरिया उन्मूलन हेतु आगामी 10 अगस्त से 25 अगस्त 2025 तक MDA-IDA अभियान संचालित किया जाएगा। इस अभियान के माध्यम से जन-जन को फाइलेरिया की रोकथाम हेतु दवा सेवन कराना अनिवार्य है। यह जानकारी सिविल सर्जन-सह-मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जिला स्वास्थ्य समिति, हजारीबाग द्वारा दी गई।अभियान के सफल संचालन हेतु राज्य स्तर से प्राप्त निदेशानुसार स्वास्थ्य विभाग द्वारा तैयारी प्रारंभ कर दी गई है। जिले में फाइलेरिया उन्मूलन को लेकर सघन प्रचार-प्रसार, जनजागरूकता एवं सामुदायिक सहभागिता सुनिश्चित की जा रही है। इस अभियान के तहत MDA-IDA की दवाएं अभियान के पहले दिन निर्धारित बूथों यथा आंगनबाड़ी केंद्रों, वार्ड कार्यालयों, स्वास्थ्य उपकेंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, विद्यालय, महाविद्यालय तथा तकनीकी संस्थानों में दवा खिलाई जाएगी। छूटे हुए लोगों को शेष दिनों में घर-घर जाकर स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा मुफ्त उपलब्ध कराई जाएंगी।

स्वास्थ्य विभाग की टीम ने एसएनएमएमसीएच का किया निरीक्षण, सुविधाओं पर जताया संतोष

धनबादः राज्य के मेडिकल कॉलेजों में नेशनल मेडिकल कमीशन (NMC) द्वारा पाई गई कमियों के आकलन के लिए गठित स्वास्थ्य विभाग की टीम ने शुक्रवार को एसएनएमएमसीएच, धनबाद का निरीक्षण किया. टीम ने अस्पताल परिसर के विभिन्न विभागों के साथ-साथ सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल का भी दौरा किया और संसाधनों व मैन पावर की स्थिति का जायजा लिया. टीम ने अस्पताल में कैडेबर (शव संरचना) की कमी को गंभीरता से लिया और मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य को जल्द व्यवस्था करने का निर्देश दिया. टीम ने सेंट्रल लाइब्रेरी, इमरजेंसी, एक्स-रे, अल्ट्रासाउंड, ओपीडी सहित पूरे अस्पताल परिसर का भी निरीक्षण किया. इसके बाद SNMMCH के प्राचार्य अधीक्षक और अन्य पदाधिकारियों के साथ बैठक की.

टीम में शामिल डायरेक्टर मेडिकल एजुकेशन सह शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल हजारीबाग के प्राचार्य डॉ. एसके सिन्हा ने बताया कि एसएनएमएमसीएच के सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल में दो नए चिकित्सकों एक कार्डियोलॉजिस्ट और दूसरा नेफ्रोलॉजिस्ट की नियुक्ति की गई है. दोनों चिकित्सक अगले सप्ताह से अपनी सेवा देंगे.

सीटी स्कैन व एमआरआई की सुविधा तीन माह में

डॉ. एसके सिन्हा ने बताया कि अस्पताल में सीटी स्कैन और एमआरआई की सुविधा अगले तीन महीने में शुरू हो जाएगी. उन्होंने बताया कि निरीक्षण के दौरान कुछ संसाधनों की कमी जरूर पाई गई लेकिन कुल मिलाकर एसएनएमएमसीएच की स्थिति संतोषजनक है. उन्होंने कहा कि एसएनएमएमसीएच सहित झारखंड के कुल 5 मेडिकल कॉलेजों का निरीक्षण प्रस्तावित है. धनबाद के बाद टीम दुमका, पलामू, जमशेदपुर व हजारीबाग मेडिकल कॉलेजों का दौरा करेगी. निरीक्षण के बाद रिपोर्ट स्वास्थ्य विभाग को सौंपी जाएगी, जिसके आधार पर सुधारात्मक कदम उठाए जाएंगे.

जिला अधिवक्ता संघ का चुनाव 26 जुलाई को

लातेहारः लातेहार जिला अधिवक्ता संघ का चुनाव (सत्र 2025-27) 26 जुलाई को होगा. चुनाव अधिकारी अनिल ठाकुर, संतोष रंजन व गणेश प्रसाद ने शुक्रवार को चुनाव प्रक्रिया की तिथि की घोषणा कर दी है. मतदाता सूची का प्रकाशन 14 जुलाई को होगा. जबकि 16 व 17 जुलाई को नामांकन प्रत्र की ब्रिकी होगी और भरे हुए नामांकन जमा भी लिये जायेंगे. तय कार्यक्रम के अनुसार, 18 जुलाई को नामांकन प्रत्रों की जांच होगी. अगले दिन 19 जुलाई को सुबह नौ बजे से दोपहर एक बजे तक नामांकन वापस लिये जा सकते हैं.

पिपराडीह गांव निवासी लापता दिनेश की लाश कुएं से बरामद

बड़कागांव(हज़ारीबाग): 6 जुलाई को लापता पिपराडीह गांव निवासी 27 वर्षीय दिनेश प्रजापति की लाश विश्रामपुर शनिवार बाजार के बगल में कुम्हरडीहा गांव के श्मशान घाट मंगरदहा के एक कुएं से बरामद की गई है। घटना की जानकारी मिलते ही बड़कागांव थाना प्रभारी नेमधारी रजक सशस्त्र पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचकर स्थिति से अवगत हुए। इस दौरान पिपराडीह गांव के गुस्साए ग्रामीणों ने आवेदन में नाम आरोपी सुभाष प्रजापति के कुमहरडीहा गांव जाकर सुभाष के पिता 65 वर्षीय महेश प्रजापति को बेरहमी से पीट पीट कर मार डाला। तत्पश्चात इस दौरान ग्रामीणों ने सुभाष के मकान एवं मोटरसाइकिल को भी आग के हवाले कर दिया । पुलिस ने दोनों लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की कार्रवाई के लिए थाना लाई।बताते चलें कि पिपराडीह गांव निवासी 27 वर्षीय दिनेश प्रजापति की गुमशुदगी को लेकर पत्नी संगीता देवी के द्वारा बड़कागांव थाने में 7 जून को आवेदन देकर पुलिस से कार्रवाई करने की मांग की गई थी। इसी दरमियान ग्रामीणों ने कुमहरडीहा गांव निवासी सुभाष प्रजापति को पकड़ कर 7 जून को पुलिस के हवाले कर कार्रवाई की मांग की थी। सुभाष ने अपनी तबीयत खराब होने का पुलिस जानकारी दी। तत्पश्चात पुलिस ने उसे इलाज कराने के लिए छोड़ दिया। जिसके कारण ग्रामीणों ने पुलिस के प्रति नाराजगी व्यक्त की एवं गुस्सा जाहिर किया। गुस्साए ग्रामीणों ने 8 जून को 5:30 बजे शाम को डेढ़ घंटे तक थाने का घेरे रखा और पुलिस से सुभाष प्रजापति को त्वरित गिरफ्तार कर कार्रवाई की मांग की थी। मृतक दिनेश के पत्नी ने 8 जुलाई कोई इसी दरमियान दूसरा आवेदन भी पुलिस को दिया जिसमें पैसे की लेनदेन मामले को लेकर सुभाष प्रजापति के ऊपर पति दिनेश की अपहरण कर लेने की आशंका जताई थी। दो-दो लोगों की हत्या मामले को लेकर बड़कागांव पुलिस ने सभी बिंदुओं पर जांच पड़ताल में जुट गई है।

ददई दुबे के निधन से मजदूरों ने अपना एक मसिहा खो दिया- निसार खान

फाइल फोटो

हज़ारीबाग। हज़ारीबाग जिला कांग्रेस कमिटी मीडिया विभाग के अध्यक्ष निसार खान नें पूर्व सांसद व इंटक के वरिष्ठ नेता ददई दुबे के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है । खान ने अपने शोक संदेश में कहा कि दुबे जी के निधन से मजदूरों ने अपना एक मसिहा खो दिया है । उन्होंने कहा कि दुबे जी मृदुभाषी, मिलनसार, कुशल राजनीतिज्ञ के साथ-साथ एक प्रखर समाजसेवी थे । इनके निधन से कांग्रेस की बड़ी क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति तत्काल संभव नही । उन्होंने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा इस कठीन घड़ी इनके परिजनो को धैर्य व सहन शक्ति प्रदान करने कि प्रार्थना की है।

शर्मिंदगी का रास्ता बनकर रह गया है शिलाडीह का मार्ग

बरकट्ठा(हज़ारीबाग)। बरकट्ठा प्रखंड क्षेत्र का शिलाडीह एक ऐसा गांव जिसे भगवान ने प्रकृति से नवाजा लेकिन सरकारी अधिकारी एवं जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों ने मूलभूत सुविधा से वंचित रखा है। शिलाडीह पंचायत की सबसे बड़ी विडंबना है कि एकमात्र मुख्य सड़क है जो गांव को जीटी रोड़ से जोड़ती है। यह सड़क अब सड़क नहीं, एक गड्ढों की श्रृंखला बन चुकी है।दो दशक पूर्व बनी यह कच्ची-पक्की सड़क अब बोल्डर, धूल, कीचड़ और बदइंतज़ामी का प्रतीक बन चुकी है। बरसात के मौसम में यह सड़क जलमग्न दलदल बन जाती है और गर्मी में धूल के गुबार से सांस लेना दूभर हो जाता है।

शर्मिंदगी का रास्ता बनकर रह गया शिलाडीह मार्ग

जब कोई अतिथि गांव आता है चाहे शादी हो, मैय्यत हो, यज्ञ हो गांव वालों को अपने गांव से नहीं, उस रास्ते से शर्म आती है। एक ओर जहां देश मेट्रो और एक्सप्रेसवे की बात कर रहा है। वहीं शिलाडीह गांव अब भी मूलभूत आवागमन जैसी सुविधा वंचित है।

आखिर अधिकारी व जनप्रतिनिधियों की चुप्पी क्यों ?

शिलाडीह की इस दुर्दशा पर सबसे बड़ा सवाल है कहां हैं हमारे सांसद, विधायक और प्रशासन ? क्यों नहीं दिखता उन्हें यह अति जर्जर टूटा हुआ सड़क ? यह कोई आज, कल या परसों की टूटी हुई सड़क नहीं है बल्कि दशकों से खराब है।ग्रामीणों ने सड़क की दुर्दशा पर कहा क्यों हर चुनाव में सिर्फ वादे बनते हैं और चुनाव के बाद यह सड़क फिर टूटे हुए सपनों की तरह छोड़ दी जाती है।क्या हम ग्रामीण इंसान नहीं हैं ? क्या हम वोट देने के बाद अपने अधिकार खो देते हैं ? या फिर माननीयों से डरे-सहमे रहते हैं जो खुलकर इस सड़क पर बहस नहीं कर सकतें हैं. क्या सरकार की "विकास यात्रा" सिर्फ पोस्टर तक ही सीमित हैसड़क के विकास के नाम से पोस्टर तो खूब छपती हैं, लेकिन शिलाडीह का नाम शायद उनके नक्शे में भी नहीं है. यह कोई मामूली मांग नहीं है यह एक मूल अधिकार है।

सड़क नहीं, तो शिक्षा नहीं।
सड़क नहीं, तो स्वास्थ्य नहीं।
सड़क नहीं, तो रोज़गार नहीं।
सड़क नहीं, तो सम्मान नहीं।

ग्रामीणों ने अब ठान लिया है, अब मौन नहीं आंदोलन होगा। हम हर कार्यालय के दरवाज़े खटखटाएंगे. शांतिपूर्ण जन आंदोलन, धरना से आवाज बुलंद करनी होगी।

उपायुक्त का कार्यालय, हजारीबाग
(आपूर्ति शाखा)

—: नोटिस :—

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि हजारीबाग जिला में NFSA एवं JSFSS योजनान्तर्गत आच्छदित राशन कार्ड लाभुकों के द्वारा 06 माह, 12 माह, 03 वर्ष एवं 05 वर्ष से अधिक अवधि से खाद्यान्न इत्यादि का उठाव नहीं किया जा रहा है और न ही e-KYC किया जा रहा है। उठाव नहीं किये जाने वाले राशन कार्ड की प्रखण्डवार संख्या निम्न प्रकार हैः—

Block Wise RationCard NotLifted
District :- HAZARIBAGH

Sl No	Block Name	RationCard NotLifted Count (6 Months)	RationCard NotLifted Count (12 Months)	RationCard NotLifted Count (3 Years)	RationCard NotLifted Count (5 Years)
1	Barhi	786	662	456	368
2	Barkagaon	1200	996	776	621
3	Barkatha	943	791	586	454
4	Bishungarh	1540	1255	826	659
5	Chalkusa	267	234	164	112
6	Chauparan	1287	1058	723	626
7	Churchu	364	283	207	159
8	Dadi	720	616	508	402
9	Daru	330	281	173	167
10	Hazaribag	1204	1045	797	663
11	Hazaribag (Nagar Parishad)	1375	1209	904	759
12	Ichak	1383	1242	956	839
13	Katamdag	620	518	362	246
14	Katkamsandi	1032	846	554	470
15	Keredari	649	519	391	313
16	Padma	537	451	339	311
17	Tati Jhariya	428	380	279	244
	Total:-	14665	12386	9001	7413

लाभुकों के द्वारा खाद्यान्न उठाव नहीं करने तथा e-KYC नहीं करने के कारण राज्य स्तर पर हजारीबाग जिले की स्थिति खराब प्रदर्शित हो रही है।

"झारखण्ड लक्षित जन वितरण प्रणाली (नियंत्रण) आदेश, 2024" की कंडिका 6.(X)(ग) में उल्लेखित है कि यदि राशन कार्डधारी द्वारा लगातार छः माह से अधिक अवधि में जन वितरण प्रणाली दुकान से खाद्यान्न इत्यादि का उठाव नहीं करने वाले राशन कार्डधारी को नोटिस निर्गत के एक सप्ताह के अंदर अनिवार्य रूप से संबंधित जन वितरण प्रणाली दुकानों के माध्यम से खाद्यान्न का उठाव करते हुए e-KYC भी कराना है।

अतः वैसे राशन कार्डधारी जो 06 माह, 12 माह, 03 वर्ष एवं 05 वर्ष से अधिक अवधि तक खाद्यान्न का उठाव नहीं किये है तथा e-KYC नहीं किये है, उन्हें नोटिस दिया जाता है कि एक सप्ताह के अंदर संबंधित जन वितरण प्रणाली विक्रेता से खाद्यान्न का उठाव करते हुए e-KYC करना सुनिश्चित करेंगे अन्यथा यह माना जाएगा कि आपको खाद्यान्न उठाव में किसी प्रकार की रूची नहीं है एवं आप राशन कार्ड की पात्रता नहीं रखते हैं। तदोपरान्त उठाव नहीं करने वाले एवं e-KYC नहीं करने वाले लाभुक का राशन कार्ड रद्द करने की कार्रवाई की जाएगी।

जिला आपूर्ति पदाधिकारी,
हजारीबाग

PR 357096 (Food Public Distribution and Consumer Affairs)25-26*D

पेज 1 का शेष

इन प्रस्तावों को भी हरी झंडी

झारखंड उत्पाद (झारखंड राज्य बिवरेजेज कॉरपोरेशन लिमिटेड के माध्यम से खुदरा उत्पाद दुकानों का संचालन) नियमावली, 2022 के तहत राजस्वहित में अल्पकालीन वैकल्पिक व्यवस्था के अंतर्गत नई खुदरा उत्पाद नीति के तहत खुदरा उत्पाद दुकानों का संचालन प्रारंभ होने तक श्रम, नियोजन एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा निर्धारित दर के आलोक में दैनिक पारिश्रमिक पर मानव बल की सेवा प्राप्त कर झारखंड राज्य बिवरेजेज कॉरपोरेशन लिमिटेड के माध्यम से खुदरा उत्पाद दुकानों के संचालन के लिए निर्गत संकल्प संख्या 1138 दिनांक 05.07.2025 पर घटनोत्तर स्वीकृति दी गयी. संस्था निबंधन अधिनियम-1860 की धारा 24 के अन्तर्गत संस्था निबंधन नियमावली के गठन की स्वीकृति दी गई. माधुरी खलखो को छात्रवृत्ति देने के लिए मरड. गोमके जयपाल सिंह मुंडा पारदेशीय छात्रवृत्ति अंतर्गत वर्णित छात्रवृत्ति की अवधि और पाठ्यक्रम संबंधी पात्रता को विशेष परिस्थिति में क्षांत/शिथिल करने की स्वीकृति दी गयी है.

संक्षिप्त खबरें

रांची में नम आंखों से वरिष्ठ नेता ददई दुबे को दी गई श्रद्धांजलि

मंत्रियों ने कहा- यह अपूर्णीय क्षति

निधन बीते दिन दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में इलाज के दौरान हो गया. शुक्रवार को ददई दुबे के पार्थिव शरीर को रांची एयरपोर्ट से प्रदेश कांग्रेस कार्यालय लाया गया. जहां पर पार्टी के नेता, विधायक, मंत्री और पदाधिकारियों ने पुष्पांजलि कर श्रद्धांजलि दी. ददई दुबे के निधन पर झारखंड की ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय सिंह, स्वास्थ्य मंत्री डॉक्टर इरफान अंसारी, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर, विधायक अनूप सिंह, पूर्व मंत्री और विधायक रामेश्वर उरांव ने दुःख व्यक्त किया. उन्होंने इसे झारखंड के लिए अपूर्णीय क्षति बताया. कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा कि दिल्ली में मैंने ददई दा से मुलाकात की थी. उनके निधन से झारखंड ने एक मजबूत और बेबाक आवाज उठाने वाले नेता को खो दिया है. स्वास्थ्य मंत्री डॉक्टर इरफान अंसारी ने कहा कि ददई दुबे का निधन उनकी व्यक्तिगत क्षति भी है, उनका व्यवहार हमेशा पिता तुल्य रहा है. वहीं ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय सिंह ने कहा कांग्रेस पार्टी ने समर्पित कार्यकर्ता, झारखंड ने एक सच्चा नेता और मजदूरों ने अपनी मुखर आवाज को खो दिया है. कांग्रेस नेता और आवास बोर्ड के अध्यक्ष संजय पासवान के अनुसार यहां से शव वाहन उन्हें उनके पैतृक जिले गढ़वा के लिए रवाना किया. जहां राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया जाएगा.

झारखंड के देवपुजन ठाकुर का चतुर्थ वर्ल्ड विच कप इंटरनेशनल वुड बॉल चैंपियनशिप में चयन

संवाददाता रांचीः चन्द्रावती सह कांति कृष्ण फाउंडेशन,युवा नाट्य संगीत अकादमी एवं छात्र क्लब कला संस्कृति एवं खेलकूद कूद मंच (यूनिट,छात्र क्लब ग्रुप) के द्वारा झारखंड के वुड बॉल खिलाड़ी देव पूजन ठाकुर का चतुर्थ वर्ल्ड विच कप इंटरनेशनल वुड बॉल चैंपियनशिप 2025 मे चयन होने पर गोरखनाथ लेन होटल कांति कृष्ण मे संस्था के ऋषिकेश लाल, कामिनी ताम्रकार,शिव किशोर शर्मा,प्रसिद्ध नारायण मिश्रा,ऋषिका कुमारी द्वारा सम्मानित किया गया।वुडबॉल प्रतियोगिता विश्व स्तर पर आयोजित की जाती है और देवपुजन ठाकुर झारखंड से एकमात्र खिलाड़ी हैं जिन्हें इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला है। देवपुजन ठाकुर,रांची जिले के कांके प्रखंड स्थित सुकुरहुटू गांव के निवासी लगन लाल ठाकुर जी के सुपुत्र हैं। आर. सी.एम.प्राइवेट कंपनी मे कार्यरत है एवं वर्ष 2012 से बुडबॉल खेल से जुड़े हुए हैं। कई बार राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेकर अच्छा प्रदर्शन भी किए हैं। लेकिन वित्तीय संसाधनों की कमी और कई बार टूर्नामेंट के रद्द होने के कारण वे अब तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नहीं खेल पाए है।

परिवहन आयुक्त संजीव कुमार बेसरा का किशोर मंत्री ने किया स्वागत

संवाददाता रांचीः झारखंड चैंबर ऑफ़ कॉमर्स के निवर्तमान अध्यक्ष एवं झारखंड प्रदेश बस ओनर एसोसिएशन उपाध्यक्ष किशोर कुमार मंत्री ने परिवहन आयुक्त संजीव कुमार बेसरा से मुलाकात की। मंत्री ने शुक्रवार को एफएफपीबिल्डिंग के परिवहन विभाग में पदस्थापित नवनियुक्त झारखंड परिवहन आयुक्त का स्वागत किया। इस अवसर पर मंत्री ने कहा कि परिवहन आयुक्त का पद कई वर्षों से रिक्त था। संजीव बेसरा के आने से बस मालिकों में खुशी की लहर दौड़ी है। परिवहन कार्य को गति मिलेगी और परिवहन व्यवसाय का राज्य में विकास तेजी से होगी। किशोर मंत्री ने परिवहन आयुक्त से एक वर्षों से रुका हुआ परमिट नवीनीकरण का मामला को संचिका के माध्यम से नवीकरण करने का अनुरोध किया। साथ ही राज्य परिवहन प्राधिकार की बैठक एक वर्षों से नहीं हुई है, उसे जल्द कराने का अनुरोध किया। किशोर मंत्री ने परिवहन मंत्री दीपक बिरूवा को भी धन्यवाद दिया। जिन्होंने वर्षों से रिक्त पद परिवहन आयुक्त को पद स्थापित करने का कार्य किया। बेसरा ने आश्वस्त किया कि अब कार्य में तेजी लाई जाएगी। इस अवसर पर संयुक्त राज्य परिवहन आयुक्त प्रवीण प्रकाश, वकील, सुशील तिवारी एवं अशफाक आजम उपस्थित थे।

श्रावण माह का पहला दिन

रांची स्थित पहाड़ी मंदिर में उमड़ा आस्था का सैलाब, प्रशासन मुस्तैद

रांचीः श्रावण मास की पहली तारीख के साथ ही राजधानी रांची में शिवभक्तों की आस्था का रंग गहराता नजर आया. तड़के सुबह से ही रांची के तमाम शिवालयों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी. लेकिन सबसे खास नजारा देखने को मिला ऐतिहासिक पहाड़ी मंदिर में जहां हजारों श्रद्धालुओं ने भोलेनाथ पर जल अर्पित कर अपनी भक्ति प्रकट की. इस बार पहाड़ी मंदिर में बेहतर व्यवस्था के कारण भीड़ व्यवस्थित तरीके से मुख्य मंदिर तक पहुंची.

पहाड़ी मंदिर परिसर को विशेष रूप से सजाया गया है. फूल-मालाओं से सजे मुख्य द्वार से लेकर मंदिर शिखर तक आस्था और सौंदर्य का अद्भुत संगम देखने को मिला. भीड़ को व्यवस्थित तरीके से दर्शन कराने के लिए प्रशासन ने इस बार तकनीक का सहारा लिया है. मंदिर के मुख्य द्वार के पास एलईडी स्क्रीन लगाई गई है ताकि लंबी कतारों में न लग पाने वाले श्रद्धालु भी पहाड़ी बाबा के दर्शन दूर से ही कर सकें.

श्रावण मास में पहले दिन की तैयारियों का जायजा लेने रांची सदर के एसडीओ उत्कर्ष कुमार स्वयं पहाड़ी मंदिर पहुंचे. उन्होंने मंदिर परिसर और आस-पास के रास्तों का निरीक्षण किया और व्यवस्थाओं को अंतिम रूप देने के निर्देश दिए. एसडीओ उत्कर्ष कुमार ने बताया कि पहली सोमवारी तक शेष बची सभी व्यवस्थाओं को पूरी तरह मुकम्मल कर लिया जाएगा.

ट्रैफिक नियंत्रण और सुरक्षा व्यवस्था को लेकर भी प्रशासन ने कड़े कदम उठाए हैं. पहाड़ी मंदिर की ओर जाने वाले सभी मार्गों पर ट्रैफिक डायवर्जन और पार्किंग की व्यवस्था की गई है. मंदिर परिसर में कहीं अव्यवस्था न हो, इसके लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं और लगातार निगरानी की जा रही है. सुरक्षा को लेकर भी प्रशासन ने कोई कोताही नहीं बरती है. मंदिर परिसर के भीतर और बाहर पुलिस बल और विशेष रूप से महिला जवानों की तैनाती की गई है. महिला श्रद्धालुओं की सुरक्षा के मद्देनजर यह निर्णय लिया गया है. इसके अलावा, स्वयंसेवी संस्थाएं और स्काउट-गाइड की टीम भी भक्तों की सेवा में जुटी हैं. शहर के अन्य शिवालयों–चुटिया सुरेश्वर धाम, रातू रोड शिव मंदिर, अपर बाजार शिवालय, कांके रोड स्थित शिवधाम, हरमू मंदिर सहित दर्जनों मंदिरों में भी भक्तों की भीड़ देखी गई. कई जगहों पर भक्तों ने पूरे परिवार के साथ पहुंचकर भगवान शिव का जलाभिषेक किया और सावन माह में सुख-समृद्धि की कामना की.

प्रशासन की तैयारी और श्रद्धालुओं की भक्ति से साफ है कि इस बार का श्रावणी मेला, खासकर रांची के पहाड़ी मंदिर में, पूरी तरह भव्य और अनुशासित तरीके से मनाया जाएगा. आस्था और अनुशासन के इस संगम में रांची एक बार फिर सावन की भक्ति में डूब गई है.

महिला समूहों के आर्थिक विकास के लिए बेहतर योजना तैयार करना जरूरीः मंत्री

संवाददाता रांचीः रांची के चान्हो स्थित रघुनाथपुर आजीविका महिला संयुक्त संकुल प्राथमिक स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड के 5 वीं आम सभा में कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की शामिल हुई। आम सभा में पिछले साल की कार्य योजना का लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया। इस मौके पर महिला समूह के बीच ट्रैक्टर, बीज और बत्तख का चूजा वितरण किया गया। आम सभा को संबोधित करते हुए मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि रघुनाथपुर कलस्टर की महिलाओं पर मुझे नाज है। यहां की महिलाओं ने बहुत कुछ किया है और अभी बहुत कुछ करना बाकी है। लेकिन ये तभी संभव हो पाएगा जब JSLPS के अधिकारी बेहतर योजना तैयार करने में सफल होंगे। बदलाव और विकास का रास्ता राज्य के ग्रामीण इलाकों से हो कर ही गुजरे, इसे सुनिश्चित करना होगा। मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने कहा कि महिला समूहों को कृषि , पशुपालन एवं सहकारिता विभाग के साथ- साथ JSLPS के द्वारा संचालित योजनाओं के प्रति जागरूकता जरूरी है। आज विभाग के द्वारा अनुदान पर महिला समूहों को ट्रैक्टर, बीज, बत्तख का चूज़ा दिया जा रहा है। सरकार की इन योजनाओं से भविष्य को संवारा जा सकता है। FPO का गठन कर मैचिंग इंसेंटिव का लाभ महिलाएं ले सकती है। उन्होंने कहा कि आज गुमला जिले की दीदियों की मेहनत से उपजाया हुआ मड़ुआ विदेश तक पहुंच रहा है। ये रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं की सफलता को दर्शाता है। सरकार महिला समूहों को प्रसंस्करण से संबंधित हर तरह का सहयोग करने को तैयार है। सिर्फ महिलाओं आगे बढ़कर पहल करने की जरूरत है। महिलाएं खुद अपने रोजगार का चयन करें, वो उनके प्रतिनिधि होने के नाते मदद करेंगी। इस मौके पर यास्मीन खातून, मालती देवी, शिव उरांव, शाहिदा खातून, बसंती देवी, प्रमिला उरांव सहित प्रखंड विकास पदाधिकारी मौजूद रहें।

डॉ. संजय कुमार बने न्यूरोट्रॉमा सोसाइटी ऑफ़ इंडिया के प्रेसिडेंट-इलेक्ट

रांचीः झारखंड के वरिष्ठ न्यूरोसर्जन एवं क्यूरेस्टा हॉस्पिटल, रांची के डायरेक्टर (न्यूरोसाइंसेज़) डॉ. संजय कुमार को न्यूरोट्रॉमा सोसाइटी ऑफ़ इंडिया का प्रेसिडेंट-इलेक्ट चुना गया है। यह न सिर्फ डॉ. संजय कुमार की पेशेवर उपलब्धि है, बल्कि पूरे पूर्वी भारत और विशेष रूप से झारखंड राज्य के लिए गर्व का विषय है। यह पहली बार है जब पूर्वी भारत के किसी न्यूरोसर्जन को इस प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संस्था की अध्यक्षीय जिम्मेदारी सौंपी गई है, जो न्यूरोट्रॉमा और न्यूरोसर्जरी के क्षेत्र में नीति निर्माण, जागरूकता और अकादमिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देती है। न्यूरोट्रॉमा सोसाइटी ऑफ़ इंडिया (NTSI) एक राष्ट्रीय स्तर की वैज्ञानिक संस्था है जो भारत में मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी की चोटों (न्यूरोट्रॉमा) के क्षेत्र में काम करती है। इसका मुख्य उद्देश्य न्यूरोट्रॉमा प्रबंधन से जुड़े चिकित्सकों, शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों को एक मंच प्रदान करना और इस क्षेत्र में नीति, शिक्षा और जनजागरूकता को बढ़ावा देना है। यह संस्था देशभर के न्यूरोसर्जनों, ट्रॉमा स्पेशलिस्ट्स और अन्य स्वास्थ्य विशेषज्ञों को एक साथ जोड़ती है ताकि भारत में ट्रॉमा केयर सेवाओं को बेहतर बनाया जा सके। बताते चलें कि डॉ. संजय कुमार एसोसिएशन ऑफ़ न्यूरोसाइंटिस्ट्स ऑफ़ ईस्टर्न इंडिया (ANEI)के भी वर्तमान अध्यक्ष हैं। डॉ. संजय कुमार झारखंड में न्यूरोसर्जरी के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित नाम हैं। उन्होंने पूर्व में मेडिका हॉस्पिटल और पारस हॉस्पिटल में मेडिकल डायरेक्टर और वाईस चेयरमैन के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। उन्होंने रांची के अपोलो अस्पताल से न्यूरोसर्जरी की सुरुआत की थी।

रांची मे हैदराबादी जायका का तड़का, तीसरी ब्रांच का आगाज़

मंत्री इरफान अंसारी ने कहा अच्छी सेहत के लिए अच्छी खुराक ज़रूरी

संवाददाता रांची : झारखंड सरकार के स्वास्थ मंत्री डॉक्टर इरफान अंसारी और झारखंड सरकार के मंत्री राधा कृष्ण किशोर ने कहा कि अच्छी सेहत के लिए अच्छी खुराक ज़रूरी है। एक स्वस्थ आहार शरीर को ज़रूरी पोषक तत्व प्रदान करता है, जिससे बीमारियों से बचाव होता है। अच्छा खाना शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है, जिससे आप पूरे दिन सक्रिय और ऊर्जावान महसूस करते हैं। वह शुक्रवार को डंगरा टोली स्थित हैदराबादी जायका रेस्तरां के तीसरे ब्रांच के उद्घाटन कार्यक्रम में बोल रहे थे। मंत्री ने कहा कि हमने खाना खाया। खाना लाजवाब है। क्वालिटी का ध्यान, साफ सफाई का ध्यान रखा गया है। खाना और बिरयानी कि बात हो और हैदराबादी बिरयानी का नाम न आए ऐसा नहीं हो सकता। खाने के शौकीन के लिए अच्छी खबर है। हैदरबादी जायका की जिनका जलवा पुरे भारत से लेकर विदेश मे हर जगह कायम है। हैदराबाद के मसाले किसी भी व्यंजन के टेस्ट में चार-चांद लगा देते है।

इसी सिलसिले को ज़ारी रखते हुए नए रेस्तरां हैदराबादी जायका पुरुलिया रोड, रिलायंस मार्ट के पास, डंगराटोली चौक रांची का भव्य उद्घाटन झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी और वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। वेज हो या नॉनवेज हैदराबादी जब कुछ खास डिश बनाते हैं तो लोग उंगलियां चाटने को मजबूर हो जाते हैं। हैदराबादी जायका के डायरेक्टर शेख साहिल अली ने अपने तीसरे ब्रांच के उद्घाटन पर दस प्रतिशत छूट का ऐलान किया है। शेख साहिल हैदराबादी जायका रेस्टोरेंट्स का दावा है कि ऐसा टेस्ट कहीं और नहीं मिलेगा।

आगे बोलते हुए संचालक शेख साहिल अली ने कहा की यहां अरेबियन, मंडी स्पेशल, इंडियन और चाइनीस बिरयानी,शोरमा,तंदूर ,अलफहम,टर्किश डिशेज, गिरिल्ड, रेशमी कवाब, टिक्का कवाब, मलाई कवाब, हरयाली कवाब, लेमन टिक्का कवाब, तंदूरी चिकन, मुर्ग मुस्सल्लम, साउथ इंडियन डिशेज और मिठाइयां समेत कई खाद्य पदार्थ उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि उद्घाटन के मौके पर सभी ग्राहकों को तीन दिन के लिए 10% का डिस्काउंट दी जा रही है।

इस मौके पर संचालक शेख साहिल अली,मोहम्मद इस्माइल अंसारी, मुदस्सर नजर, असमत अली, अफजल अली, अफसर अली, इक़बाल सबा,नदीम ज़फर ज़िलानी,इरफान अंसारी, हदीसुन बीबी, मनव्वर अली, अफजल शेख, अस्मत शेख समेत कई विशिष्ट लोग मौजूद थे।

जनसंख्या वृद्धि से बुनियादी सुविधाओं और सेवाओं पर भी दवाब पड़ता है और असमानता बढ़ती है : शशि प्रकाश झा

संवाददाता रांचीः शशि प्रकाश झा (भा.प्र.से.), अभियान निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, झारखंड ने कहा कि विश्व जनसंख्या दिवस का उद्देश्य जनसंख्या से जुड़े मुद्दों जैसे गरीबी, बेरोजगारी, संसाधनों पर दवाब, शिक्षा और कौशल विकास में कमी पर्यावरण पर इसके नकारात्मक प्रभाव, सामाजिक समस्याएँ और प्रजनन स्वास्थ्य जैसे विषयों पर चर्चा करते है। जनसंख्या वृद्धि से बुनियादी सुविधाओं और सेवाओं पर भी दवाब पड़ता है और असमानता बढ़ती है। परिणामस्वरूप सामाजिक संघर्ष और कल्याणकारी योजनाओं पर निर्भरता बढ़ जाती है। भारत की वर्तमान जनसंख्या वृद्धि दर 0.90 तथा झारखण्ड का वृद्धि दर 1.25 है। Population Projection 2020 के अनुसार झारखण्ड का (Growth Rate) लगातर कम हो रहा है जिसमें परिवार नियोजन कार्यक्रम का अहम योगदान है। आज हमारे पास संसाधन की मात्रा काफी सीमित है अगर हमारी आबादी बढ़ती जाएगी और गुणवत्ता नहीं बढ़ेगी तो आगे जाकर हमें काफी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है

हमारा देश एक विकासशील देश है जहां जनसंख्या वृद्धि भी हो रही है लेकिन क्वालिटी ऑफ़ लाइफ पहले की तुलना में बढ़ी है। यानि की बेहतर हुई है साथ ही संभावित आयु भी पहले की तुलना में बढ़ी है आज लोग 65 वर्ष से ज्यादा जीवन जी रहे हैं । इसके बावजूद हमारे सामने कई तरह की समस्या है जैसे अशिक्षा, कम उम्र में बच्चों की शादी होना, जल्दी बच्चा होना, बच्चों में कम अंतर होना इत्यादि। इन सभी समस्याओं को हम प्रचार प्रसार एवं लोगों को जागरूक करके कम कर सकते हैं। यदि किसी घर में माँ की मृत्यु हो जाती है तो वह अगर बिखर जाता है और बच्चों को संभालने में काफी कठिनाई आती है इसीलिए महिला के स्वास्थ्य में ध्यान देने के साथ-साथ दो बच्चों के बीच में कम से कम 3 साल का अंतर रखना जरूरी है। हम गांव एवं पंचायत स्तर पर सहिया एएनएम इत्यादि के माध्यम से गांव की किशोरी बालिका, नई दंपत्ति इत्यादि को जागरूक करके इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। गांव एवं पंचायत स्तर पर नुक्कड़ नाटक तथा आई.ई.सी. सामग्री जैसे बैनर, पोस्टर के माध्यम से विस्तृत प्रचार प्रचार किया जाना चाहिए तभी यह कार्यक्रम सफल होगा साथ ही हमें जनसंख्या स्थिरीकरण पर ध्यान देना चाहिए।

भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान भागलपुर
INDIAN INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY BHAGALPUR
(An Institute of National Importance under Ministry of Education, Govt. of India)
Sabour, Bhagalpur-813210, Bihar

Walk-In-Interview for Engaegement of Guest Faculty

Advt No. IIITBH/ADVT/667/2025/04

Indian Institute of Information Technology Bhagalpur (IIIT Bhagalpur) is one of the IIITs set up by Ministry of Education (MoE), Govt. of India in Public-Private-Partnership (PPP) mode and it is an institute of national importance.

The Institute invites applications for the engagement of Guest Faculty through Walk-in-interview for the forthcoming semester in the Department of computer Science and Engineering, Electronic & Communication Engineering, and Mathematics & Computing at a consolidated remuneration of Rs. 70,000/- per month. The said engagement is on purely temporary basis initially for one semester which may be extended maximum for two more semesters based on the performance and requirements.

Sl. No.	Name of Department/ Centre	Date & Time of Walk-in-Interview	Minimum Qualifications/Eligibility Requirements
1	Computer Science & Engineering	22nd July 2025, 09:00 AM	B.Tech, M.Tech & Ph.D. Degree in the appropriate discipline with consistently good academic records. Note- The candidates who have submitted his/her Phd thesis may also apply. However, candidates with a Ph.D. degree will be given preference.
2	Electronics & Communication Engineering	22nd July 2025, 11:30 AM	
3	Mathematics & Computing	22nd July 2025, 03:00 PM	

Sd/-
Registrar

cbc 21379/12/0002/2526

Please visit www.iiitbh.ac.in for more information

श्री कृष्ण प्रणामी ट्रस्ट ने कराया निर्धन कन्या का विवाह

संवाददाता रांचीः श्री कृष्ण प्रणामी सेवा धाम ट्रस्ट द्वारा संचालित पुंदाग में श्री कृष्ण प्रणामी मंगल राधिका सदानंद सेवा धाम के श्री राधा- कृष्ण मंदिर के प्रांगण में गुरु पूर्णिमा पर्व के पुनीत अवसर पर सेवा, समर्पण और सामाजिक सरोकार की एक अद्भुत मिसाल पेश करते हुए एक निर्धन कन्या का विवाह पूरे विधि-विधान एवं पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ सम्पन्न कराया गया। वर- कमलेश कुमार (पलसा ग्राम खूंटी निवासी) एवं कन्या- आरती कुमारी (ग्राम बोडेया कांके निवासी) का विवाह मंदिर के मुख्य पुजारी अरविंद पांडे जी द्वारा पूरे विधि विधान वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पवित्र अग्नि को साक्षी मानकर वधू और वर

के सात फेरे के लिए तथा सात जन्मों तक एक दूसरे का साथ निभाना का संकल्प लिया। यह आयोजन न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक रहा, बल्कि समाज में सहृदयता एवं सेवा भावना को भी नया आयाम प्रदान करता है। यह विवाह समारोह मंदिर प्रांगण में अत्यंत श्रद्धा, गरिमा एवं धार्मिक वातावरण में संपन्न हुआ। इस पुनीत अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष डूंगरमल अग्रवाल, उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, निर्मल जालान, सचिव मनोज चौधरी, कोषाध्यक्ष सज्जन पाड़िया एवं प्रवक्ता संजय सर्राफ सहित सभी पदाधिकारीयों ने नवविवाहित दंपति को आशीर्वाद प्रदान किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा ट्रस्ट की ओर से वर-वधू को जीवनोपयोगी वस्तुएँ, वस्त्र, तथा आवश्यक घरेलू सामान उपहार स्वरूप प्रदान किया गया, ताकि नवजीवन का प्रारंभ आत्मनिर्भरता और आत्मसम्मान के साथ हो सके। साथ ही वर- वधु को विवाह का सर्टिफिकेट भी प्रदान किया गया।

Government of India
Ministry of Youth Affairs and Sports
Department of Youth Affairs
Shastri Bhawan New Delhi

No.1-12011/1/2025-NPYAD **12.07.2025**

The Ministry of Youth affairs and Sports invites nominations for the **Tenzing Norgay National Adventure Award 2024,** the highest national recognition for outstanding achievements in the field of adventure. The Award aims to honour individuals who have demonstrated exceptional courage, skill, and spirit of adventure on land, water, air, as well as those who have made alifelong and distinguished contribution to the field of adventure.

Details regarding the award, eligibility criteria, Guidlines etc. can be accessed on the portal **(https://awards.gov.in)** or through the "Latest News" section of the Ministry of Youth Affairs and Sports website **(https://yas.nic.in)**.

Eligible individuals are encouraged to submit their nominations only through the Government of India Award portal **(http://awards.gov.in)**. The last date for submission of nominations is **15th July 2025**.

Under Secretary
Department of Youth Affairs

cbc 47107/11/0005/2526

भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान भागलपुर
INDIAN INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY BHAGALPUR
(An Institute of National Importance under Ministry of Education, Govt. of India)
Sabour, Bhagalpur-813210, Bihar

Advertisement for Engagement of Adjunct Faculty

Advt No. IITBH/ADVT/668/2025/03

Indian Institute of Information Technology Bhagalpur (IIIT Bhagalpur) is an institute of national importance set up by Ministry of Education (MoE), Govt. of India Public-Private-Partnership (PPP) mode. The institute offers B.Tech, M.Tech and Ph.D. Program (s) in the Computer Science & Engineering, Mechatronics & Automation Engineering, Electronics & Communication Engineering and Mathematics & Computing. The institute invites applications from faculty member superannuating from Govt. service in IITs, NITs, IIITs/Centrally Funded Institute/Universities/State Government/comparable institutions at the level of Professor/Associate Professor in the Prescribed format for engagement of Adjunct Faculty at a consolidated honoranum of Rs. 1,00,000/- permonth for a maximum period of 3 years. The last date of submission of application form along with all the enclosures through email, **recruitment@iiitbh.ac.in** is **21.07.2025 upto 17:30 hrs**.

Sd/-
Registrar

cbc 21379/12/0003/2526

Please visit www.iiitbh.ac.in for more information

संक्षिप्त खबरें...

स्कूली बच्चों को मिला साइकिल,चेहरे में दिखा मुस्कान

ओरमांझी(मोहसीन): बीआसी ओरमांझी में शुक्रवार को सत्र 2024-25 में अध्यनरत सामान्य कोटि के बच्चों के बीच साइकिल वितरण समारोह आयोजित कर बीईईओ ओरमांझी सीमा कुमारी ने प्रखण्ड के राजकीय मध्य विद्यालय चकला,पांचा, कूचू,खटंगा, रूक्का,ईचादाग सहित कई विद्यालयों के बच्चों के बीच साइकिल वितरण किया । इस अवसर पर बीईईओ ने छात्र-छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि अब आप सभी को विद्यालय आने-जाने में परेशानी नहीं होगी। वही बच्चे साइकिल मिलने पर काफी खुश देखे गए हैं। इस अवसर पर शिक्षक संघ के प्रखंड अध्यक्ष सतीश बड़ाईक रेखा साहू अमूल्य कुमार अब्दुल रहमान अंसारी राजेश्वर महतो बीआरसी से राजेश दास ज्योति कुमारी नौशाद अंसारी सहित विभिन्न विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

एसडीऐ खूंटी ने लोरेटो कान्वेंट डोरंडा को हराया

ओरमांझी(मोहसीन):माउंट कारमेल स्कूल ओरमांझी में खेले जा रहे सीआईएससीइ क्षेत्रीय अंडर 14अंडर 17 और अंडर 19 फुटबॉल प्रतियोगिता के दूसरे दिन गर्ल्स अंडर 19 श्रेणी में एसडीऐ खूंटी एवं लोरेटो कान्वेंट डोरंडा के बीच फाइनल खेला गया जिसमे एसडीऐ खूंटी विजयी रही.माउंट कारमेल स्कूल ओरमांझी और उर्सेलाइन इंग्लिश मेडियम स्कूल के बीच अंडर 17 गर्ल्स फाइनल खेला गया.अंडर 17 बॉयज़ में माउंट कारमेल स्कूल ओरमांझी और डब्लू जोनेस मल्टीपरपज़ स्कूल सेमिफाइनल में पहुंची.अंडर 19 बॉयज़ संत जेवियर और डॉन बोस्को के बीच खेला गया,इस मौके पर कई विद्यालयों के प्राचार्य उपस्तिथ रहे और खिलाड़ियों की हौसला अफ़ज़ाई की. इस मौके पर मिस्टर प्रबीर पोद्दार प्रिंसिपल एसडीऐ सीनियर सेकेंडरी खूंटी स्वयं मौजूद रहे, वहीं विद्यालय के डायरेक्टर फादर दीपक कुजूर एवं प्राचार्य सिस्टर टेसी ने प्रतिभाघियों की हौसला अफ़ज़ाई की और अपनी शुभकामनायें दी. इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सुनील सर, अनिशा मैम,असद सर,निश्चल सर,फिरोज आलम,दत्ता सर एवं अन्य उपस्थित रहे।

झामुमो के चतरा जिला अध्यक्ष पहुंचे भद्रकाली मंदिर की पूजा अर्चना

कोयलांचल संवाद संवाददाता

इटखोरी (चतरा) झामुमो जिला अध्यक्ष नीलेश ग्यासेन उर्फ सोनू सिन्हा शुक्रवार को माँ भद्रकाली मंदिर परिसर पहुंच कर माता भद्रकाली की पूजा अर्चना कर राज्य एवं जिले की शांति, सुव्यवस्था और खुशहाली की कामना की। वहीं पूजा उपरांत कुछ दिन पहले हुई सड़क दुर्घटना में धनखेरी निवासी मारूफ अंसारी की मृत्यु हो गयी थी। उनके परिजनों से मुलाकात कर उन्हें सांत्वना देते हुए ढाढस बढ़ाया। अध्यक्ष ग्यासेन उर्फ सोनू ने मृतक के पिता जी और उनके बेटे से मिल कर कहा कि इस दुख की घड़ी में मैं हमेशा आपके साथ हूं। झामुम जिला अध्यक्ष ने दुर्घटना में अपनी जान गवाने वाले के पीड़ित परिवार को मिलने वाले मुवावजा को लेकर उन्होंने कहा कि हम से जो भी संभव हो सकेगा मैं सहयोग करूंगा। बच्चे की पढ़ाई लिखाई में जो कुछ भी मुझसे मदद बन पड़ेगा उसे करने के लिए सदा तैयार रहूंगा। इस मौके पर प्रखंड अध्यक्ष बबलू केसरी, मकसूद आलम, प्रदीप सिंह, पिंटू सिंह, फिरोज खाना, शाहीद बाबा समेत बड़ी संख्या में अन्य मौजूद थे।

नाबालिग के साथ दुष्कर्म के आरोपी को 22 साल सश्रम कारावास

पलामूः नाबालिग के साथ दुष्कर्म के मामले में अदालत ने शुक्रवार को फैसला सुनाया. पलामू के जिला एवं सत्र न्यायाधीश (चतुर्थ) व पोक्सो के स्पेशल जज पवन कुमार की अदालत ने आरोपी छोटू भुइयां उर्फ प्रमोद भुइयां उर्फ छठू भुइयां को दोषी पाते हुए 22 वर्ष सश्रम कारावास की सजा सुनाई है. साथ ही 25 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है. जुर्माना की राशि नहीं देने पर एक वर्ष की अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी. इस मामले में चैनपुर थाना क्षेत्र की बन्दुवा निवासी पीड़िता के बयान पर पुलिस ने धठवाताड़ निवासी आरोपी छोटू भुइयां के खिलाफ 18 सितंबर 2023 को एफआईआर दर्ज की थी. दर्ज एफआईआर के अनुसार, पीड़िता 16 सितम्बर 2023 की सुबह करीब 9 स्कूल जा रही थी. रास्ते में छोटू भुइयां उससे मिला और झांसा देकर उसे अपनी बाइक पर यह कहकर बैठा लिया कि स्कूल पहुंचा देगा. लेकिन उसे स्कूल नहीं ले जाकर अपनी नानी के घर ले गया, जहां उसे एक कमरे में दो दिनों तक रखा और उसके साथ दुष्कर्म किया. पीडिता जब अपने घर लौटी, तो अपनी मां को पूर बात बताई. इसके बाद थाने में मामला दर्ज कराया गया.

पिपरवार के बरटोला में अशोक परियोजना विस्तार के पर्यावरण स्वीकृति के लिए लोक सुनवाई का हुआ आयोजन

कोयलांचल संवाद संवाददाता

पपिरवार(चतरा) पिपरवार क्षेत्र के बरटोला मे शुक्रवार को अशोक विस्तार परियोजना को लेकर झारखण्ड राज्य प्रदुषण नियंत्रण पार्षद के द्वारा पर्यावरणीय स्वीकृति के लिए लोक सुनवाई का आयोजन किया गया।इस कार्यक्रम में अशोका वेस्ट से विस्थापित प्रभावित होने वाले चार पंचायतो के 14 गांव के विस्थापित प्रभावित ग्रामीण रैयत शामिल हुए।कार्यक्रम में चतरा के एडिशनल कलेक्टर (एसी) अरविन्द कुमार,आरओ जेएसपीसीबी हजारीबाग जेपी सिंह,जेई जेएसपीसीबी चंदन कुमार,असिस्टेंट साईसटिस प्रियंका, जेएसपीसीबी एनोसेन्ट हेम्ब्रम,टंडवा अंचलाधिकारी बिजय कुमार दास,प्रखंड विकास पदाधिकारी देवलाल उरांव,सीसीएल हेडक्वाटर के जीएम ईएनवी राजकुमार, सर्किल इंस्पेक्टर उत्तम कुमार तिवारी,थाना प्रभारी अभय कुमार,अवर निरीक्षक अंजनी कुमार सहित कई अधिकारी शामिल हुए।कार्यक्रम की अध्यक्षता पिपवार क्षेत्र के महाप्रबंधक संजीव कुमार और संचालन कार्मिक प्रबंधक शिशिर गर्ग ने किया।स्वागत भाषण अशोक परियोजना पदाधिकारी जितेंद्र कुमार सिंह ने दिया।कार्यक्रम में अशोका वेस्ट परियोजना से विस्थापित प्रभावित होने वाले ग्रामीणों की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा की गई, साथ ही प्रदूषण और विस्थापन पर ग्रामीणों का पक्ष लिया गया।कार्यक्रम में मौजूद विस्थापित ग्रामीणों ने कोयला खनन से प्रभावित होने वाले गांव में बुनियादी सुविधा जैसे सड़क,पानी, बिजली,शिक्षा,चिकित्सा, प्रदुषण के रोकथाम के लिए पहल करने सहित रोजगार जैसे मुद्दो को प्रमुखता के साथ उठाया।

श्रावणी मेला 2025 : हंसडीहा में टेंट सिटी सह प्रशासनिक शिविर का उद्घाटन विधायक प्रदीप यादव द्वारा फीता काटकर किया

दुमकाः श्रावणी मेला 2025 के अंतर्गत हंसडीहा में टेंट सिटी सह प्रशासनिक शिविर का उद्घाटन शुक्रवार को पोड़ैयाहाट विधायक प्रदीप यादव द्वारा मयूराक्षी कला मंच परिसर में फीता काटकर किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई। उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए विधायक प्रदीप यादव ने कहा कि उन्हें गर्व है कि वे लगातार 28वीं बार इस शिविर का उद्घाटन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि श्रावणी मेला आपसी प्रेम और समर्पण का प्रतीक है, जहां लोग जाति-धर्म से ऊपर उठकर एक-दूसरे की सेवा करते हैं। खासकर शनिवार और रविवार को स्थानीय लोग टोली बनाकर डाक कांवरियों की सेवा करते हैं। यह मेला कई परिवारों के लिए आजीविका का भी स्रोत है।उन्होंने श्रीकालाहस्ती मंदिर के भक्त कनप्पा की भक्ति की चर्चा करते हुए कहा कि भगवान शिव की भक्ति में समर्पण की कोई सीमा नहीं होती। उन्होंने यह भी कहा कि इस धार्मिक माहौल में राजनीति की कोई जगह नहीं होनी चाहिए।डीडीसी अनिकेत सचान ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा कांवरियों को हर संभव सुविधा प्रदान की जा रही है। इस वर्ष पहली बार एआई तकनीक का प्रयोग खोया-पाया केंद्र में किया जा रहा है, जिससे सेवा में और गति आएगी।

प्रशासन की ओर से बनायी गई सुविधाएँ

300 बेड की टेंट सिटी, जिसमें पेयजल, शौचालय, मोबाइल चार्जिंग आदि की समुचित व्यवस्था है।

24 घंटे कार्यरत अस्थाई अस्पताल जिसमें 5 ऑक्सीजनयुक्त बेड सहित चिकित्सक मौजूद रहेंगे।

सांस्कृतिक मंच, जहां मयूराक्षी कला मंच द्वारा प्रतिदिन भक्ति गीतों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है, जिससे कांवरियों को मानसिक शांति और आनंद मिल रहा है।

श्रावणी मेला के इस शुभ अवसर पर जिला प्रशासन और स्थानीय लोगों का संयुक्त प्रयास सराहनीय है, जो श्रद्धालुओं की सेवा में पूरी निष्ठा से जुटे हैं।

इस अवसर पर डीडीसी अनिकेत सचान,उप निदेशक जनसंपर्क रोहित कंडुलना,बीडीओ महेश्वरी प्रसाद यादव, सर्कल इंस्पेक्टर विशुन देव पासवान, चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. प्रभा रानी प्रसाद एवं थाना प्रभारी प्रकाश सिंह सहित कई अधिकारी एवं गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जिला परिषद उपाध्यक्ष ब्रजकिशोर तिवारी ने भद्रकाली मंदिर परिसर में निशुल्क भोजन शिविर का किया उद्घाटन

कोयलांचल संवाद संवाददाता

इटखोरी(चतरा) प्रखंड मुख्यालय अवस्थित पावन ऐतिहासिक माँ भद्रकाली मंदिर परिसर में शुक्रवार को माँ भद्रकाली सेवा संस्था द्वारा कांवरियों के लिए आयोजित निःशुल्क भोजन शिविर का विधिवत उद्घाटन जिला परिषद उपाध्यक्ष ब्रज किशोर तिवारी ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु और स्थानीय लोग मौजूद रहे। संस्था की ओर से सभी आगंतुकों का स्वागत किया गया और काँवरियों की सेवा को एक पुनीत कार्य बताया गया। इस भजन शिविर में मंदिर परिसर में यात्रा के आरंभ में मां भद्रकाली की पूजा अर्चना करने और बाबा धाम जाकर वहां से पुनः माता रानी की पूजा अर्चना करने वाले सभी कांवरियों को इस भोजन शिविर में निशुल्क भोजन की व्यवस्था रहेगी। विश्व की सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक शक्ति है और सभी कांवरिया आध्यात्मिक भावना से ओत-प्रोत हैं। बाबा बैद्यनाथ को जलाभिषेक करने वाले तथा उनको जलाभिषेक कर लौटने वाले सभी कांवरियों में शिव के स्वरूप का निवास रहता है इसलिए उनको निशुल्क भोजन उपलब्ध कराना परम पुण्य का कार्य है। जिला परिषद अध्यक्ष ने इस निशुल्क भोजन शिविर के व्यवस्थापकों और संचालकों के इस पुनीत कार्य की हृदय तल से सराहना की। मौके पर इटखोरी जिला परिषद सदस्या सरिता देवी, उप प्रमुख संजय गुप्ता,नवादा मुखिया विकास सिंह, रंजय भारती कोनी मुखिया, हलमता मुखिया प्रतिनिधि अशोक यादव, करनी मुखिया प्रतिनिधि संजय रजक, पंचायत समिति उर्मिला देवी, पंचायत समिति प्रीति कुमारी, भाजपा नेता प्रकाश कुमार दास, सतीश सिंह समेत सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित थे।

बाइक चोर गिरोह का भंडाफोड़, 3 गिरफ्तार, 6 बाइक बरामद

धनबादः निरसा थाना क्षेत्र के कालूबथान ओपी क्षेत्र में सक्रिय बाइक चोर गिरोह का पुलिस ने भंडाफोड़ करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है. उनके पास से चोरी की छह बाइक बरामद की गई हैं. यह जानकारी निरसा एसडीपीओ रजत माणिक बाखला ने प्रेसवार्ता में दी. उन्होंने बताया कि 10 जुलाई की रात कालूबथान ओपी प्रभारी को गुप्त सूचना मिली कि चोरी की दो बाइक पर सवार होकर दो युवक पिण्ड्राहाट से कलियासोल की ओर जा रहे हैं. इसके बाद एसडीपीओ के नेतृत्व में विशेष टीम गठित कर कलियासोल-पतलाबाड़ी मुख्य मार्ग पर चेकिंग अभियान चलाया गया.

जांच के दौरान दो बाइक सवार दिखाई दिए. पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश, तो दोनों भागने लगे. इस दौरान एक युवक को मोटरसाइकिल सहित दबोच लिया गया, जबकि दूसरा फरार हो गया. गिरफ्तार युवक ने अपना नाम विजय महतो उर्फ हरिबोल महतो बताया. वह सावलापुर पाथरडीह का रहने वाला है. उसके पास से चोरी की पैशनप्रो बाइक बरामद की गई. भागने वाले युवक का नाम उमेश महतो है. वह परसबनिया का रहने वाला है. वह मौके पर स्प्लेंडर बाइक छोड़कर फरार हो गया. पुलिस ने बाइक को जब्त कर लिया है.

पूछताछ में विजय महतो ने गिरोह के अन्य सदस्यों के नाम पुलिस को बता दिया. उसके बयान के आधार पर पुलिस ने छापेमारी कर दो आरोपियों बिट्टू महतो उर्फ विकास महतो (निवासी बेनागड़िया, चिरकुंडा, पंचेत ओपी) और रॉकी यादव (निवासी भालुकसुंडा, गोपीनाथपुर, थाना-निरसा) को गिरफ्तार किया. फिलहाल पुलिस गिरोह के अन्य सदस्यों की तलाश में जुट गई है.

ओरमांझी सीएचसी टुंडे में परिवार स्वास्थ्य कल्याण मेला आयोजित

बल्ड स्टोरेज यूनिट,डेन्टल यूनिट,न्यू बॉर्न स्पेशलाइजेशन यूनिट एवं एक्स रे वार्ड का हुआ उद्घाटन

ओरमांझी(मोहसीन): सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र,डुंडे ओरमांझी के अस्पताल प्रबंधन समिति की नियमित बैठकशुक्रवार को हुई। बैठक में केन्द्र को अत्याधुनिक तकनीक से लैस कर लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर उपस्थित प्रमुख रिजवान अंसारी,जिप सदस्य सरिता देवी, अस्पताल प्रबंधन समिति के शिव नारायण साहु,प्रो शैलेन्द्र मिश्र चिकित्सा प्रभारी डॉ. रेणू बाखला,डॉ. जेसिका डीन,डॉ.राजेश टोप्पो, डॉ.विशाल, अब्दुल्ला खान उपस्थित हुए। अतिथियों द्वारा फीता काटकर केंद्र में बल्ड स्टोरेज यूनिट,डेन्टल यूनिट,न्यू बॉर्न स्पेशलाइजेशन यूनिट एवं एक्स रे सुविधाका उद्घाटन किया गया। मौके में परिवार स्वास्थ्य कल्याण मेला का शुभारंभ किया गया एवं उत्कृष्ट कार्य के लिए आयुष्मान आरोग्य मंदिर,गगारी के एएनएम सावित्री गुप्ता, अनिता कुमारी, पिस्का की स्वास्थ्य सहिया झैरो देवी,लक्ष्मी देवी को सम्मानित किया गया। अतिथियों द्वारा परिवार कल्याण के प्रति लोगों में जन चेतना के संचार करने के उद्देश्य से प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

सिदो कान्हू मुर्मू विवि परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

दुमकाः रोटी बैंक दुमका की ओर से शुक्रवार को सिदो कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और भावी पीढ़ियों के लिए स्वच्छ व हरित वातावरण सुनिश्चित करना रहा।इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति,प्रो डॉ कुनुल कंडीर, कुलसचिव डॉ राजीव रंजन शर्मा, रोटी बैंक के संस्थापक जतिन कुमार, दंत चिकित्सक डॉक्टर श्वेता स्वराज की उपस्थिति में जामुन, कटहल, आम आदि पौधो का रोपण किया गया।मौके पर कुलपति प्रो डॉ कुनुल कंडीर ने कहा कि पेड़-पौधे हमारे जीवन के लिए अनमोल हैं। यह पहल समाज को एक सकारात्मक संदेश देने का प्रयास है कि हर व्यक्ति को पर्यावरण की रक्षा में अपनी भागीदारी निभानी चाहिए। कुलसचिव डॉ राजीव रंजन शर्मा ने रोटी बैंक के इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि ऐसी गतिविधियां न केवल पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में सहायक हैं, बल्कि छात्रों को प्रकृति के प्रति उत्तरदायी नागरिक बनने के लिए भी प्रेरित करती हैं।

बाबा बैद्यनाथ का जलाभिषेक करने के लिए इटखोरी से 71 कांवरियों का जत्था हुआ रवाना

कोयलांचल संवाद संवाददाता

इटखोरी (चतरा) पवित्र श्रावण मास के अवसर पर देवघर स्थित बाबा बैद्यनाथ के मंदिर में जलाभिषेक करने वाले कावरियो की यात्रा प्रारंभ हो चुकी है। श्रावण मास के पवित्र अवसर पर देवघर स्थित बाबा बैद्यनाथ का जलाभिषेक करने के लिए इटखोरी से कुल 71 कांवरियों का एक विशाल जत्था बाबाधाम देवघर के लिए शुक्रवार को रवाना हुआ। यात्रा आरंभ करने से पूर्व सभी श्रद्धालु कांवरियों ने इटखोरी स्थित प्राचीन ऐतिहासिक मां भद्रकाली मंदिर पहुंच कर मां भद्रकाली एवं परिसर अवस्थित सभी देवी देवताओं की पूजा-अर्चना कर सफल यात्रा की कामना करते हुए आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर पूरा मंदिर परिसर क्षेत्र "हर-हर महादेव" और "बोल बम" के गगन भेदी जयकारों से गूंजायमान हो उठा। बाबा नगरी की यात्रा के प्रति श्रद्धालुओं में जबरदस्त उत्साह और श्रद्धा देखने को मिला। इस जत्थे में शामिल सुबोध शर्मा ने बताया कि वे पूरे नियमों का पालन करते हुए और आत्मिक और आध्यात्मिक आस्था के बाबा नगरी जा रहे हैं। अपनी निष्ठा, आस्था और विश्वास के साथ देवघर पहुंचकर बाबा बैद्यनाथ का जलाभिषेक करेंगे। यात्रा में शामिल प्रमुख श्रद्धालुओं में सुबोध शर्मा, निरंजन पांडेय, बबलू बीईओ, बबलू, सूरज, सोनू स्टूडियो के संचालक, टिंकू, राजेंद्र दांगी, रंजीत रंजन और रामजनम सहित कल 71 श्रद्धालु शामिल हैं। जत्थे के सदस्यों ने बताया कि वे शनिवार को सुल्तानगंज पहुंचकर गंगाजल उठाएंगे और वहां से लगभग 105 किलोमीटर की पैदल यात्रा करते हुए देवघर बाबा धाम पहुंचकर भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक करेंगे। मौके पर स्थानीय ग्रामीणों एवं परिजनों ने सभी कांवरियों को भावभीनी शुभकामनाएं दी और उनकी यात्रा के सफलता व सुरक्षा के लिए मंगलकामनाओं के साथ आशीष प्रदान किया।

डालसा द्वारा बासुकीनाथ श्रावणी मेला में लगाया गया विधिक जागरूकता शिविर

दुमकाः झालसा, रांची के निर्देशानुसार तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकार, दुमका के प्रभारी प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-अध्यक्ष, शत्रुंजय कुमार सिंह के आदेशानुसार बासुकीनाथ में श्रावणी मेला 2025 में डालसा द्वारा विधिक जागरूकता शिविर लगाया गया1 महीने भर चलने वाली श्रावणी मेला के इस कानूनी जागरूकता शिविर द्वारा लोगों को कानूनी जागरूकता सहित सरकार द्वारा चलाये जा रहें विभिन्न योजनाओं एवं लाभों के बारे में बताया जाएगा। जिसके लिये प्राधिकार द्वारा पारा लिगल वालंटियर्स का एक टीम भी बनाया गया है जो प्रत्येक दिन श्रावणी मेला में आने वाले श्रद्धालुओं एवं दर्शनार्थियों को विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में समझाएंगे एवं कानूनी सहायता भी प्रदान करेंगे।

पूर्व विधायक किशुन कुमार दास पहुंचे भद्रकाली मंदिर की पूजा अर्चना

कोयलांचल संवाद संवाददाता

इटखोरी(चतरा) पावन श्रावण मास के प्रथम दिन शुक्रवार को अनुसूचित जाति मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष एवं सिमरिया विधानसभा के पूर्व विधायक किशुन कुमार दास ने इटखोरी अवस्थित ऐतिहासिक पावन भद्रकाली मंदिर पहुंचकर मां भद्रकाली की विधिवत पूजा-अर्चना कर समस्त प्रदेशवासियों के सुख-समृद्धि और मंगलमय जीवन की कामना की। पूर्व विधायक श्री दास ने पूजा उपरांत कहा कि सनातन धर्म में श्रावण मास अपना एक विशिष्ट महत्व होता है। यह वह महीना होता है जब भगवान शिव अपने ज्योति लिंगो पर उपस्थित होते हैं। श्रावण मास शिव और शक्ति की आराधना का विशेष काल होता है। इस पवित्र श्रावण मास में साधना, आराधना और उपासना का अपना विशिष्ट महत्व होता है। इस अवसर पर इटखोरी मंडल अध्यक्ष देव कुमार सिंह , भाजयुमो इटखोरी मंडल अध्यक्ष कमलेश कुमार सिंह, महामंत्री शिवकुमार राणा, भाजपा के निरंजन सिंह, ब्रह्मदेव यादव, सुरेंद्र सिंह,पिंटू सिंह, सिमरिया से विधायक प्रतिनिधि रहे भोला सिंह, सुधीर राय, सतीश सिंह, रतन शर्मा , रामाधीन सिंह, सीताराम दांगी, समाजसेवी संतोष कुमार दास, ज्ञानी यादव, योगेश्वर साव , प्रकाश दास सहित अनेक श्रद्धालु एवं गणमान्य लोगों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

श्रावणी मेला के पहले दिन फौजदारी दरबार बासुकीनाथ में शाम 4 बजे तक 38,925 श्रद्धालुओं ने किया बाबा बासुकीनाथ पर जलार्पण

दुमकाः श्रावणी मेला के पहले दिन फौजदारी दरबार बासुकीनाथ में शाम 4 बजे तक 38,925 श्रद्धालुओं ने बाबा बासुकीनाथ पर जलार्पण किया। रुट लाइन से 34690, शीघ्र दर्शनम से 1950 एवं जलार्पण काउंटर से 2285 श्रद्धालुओं ने जलार्पण किया।शीघ्र दर्शनम से 5,85,000 रुपये,गोलक से 2,57,400 रुपये एवं गोलक से चांदी 2350 ग्राम प्राप्त हुए। बताते चलें कि चाक चौबंद इंतजाम के बीच श्रद्धालुओं ने अहले सुबह से बोल बम के गगनभेदी नारों के साथ जलार्पण शुरू किया जो समाचार लिखे जाने तक अनवरत जारी था।

महाकालेश्वर धाम में कांवड़ यात्रा के साथ एक महीने का सावनी मेला शुरू

बाबा भोलेनाथ को जल मात्र अपित करने से जीवन खुशहाल होता हैः संजय सेठ

ओरमांझी(मोहसीन): पवित्र सावन मास के पहले दिन ओरमाझी प्रखंड के उलातु स्थित खुबसूरत वादियों में विराजमान महाकालेश्वर धाम में प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी एक महिने का श्रावणी मेला का आयोजन पर कांवड़ यात्रा निकाली गई जिसमें सैकड़ों महिला पुरुष भक्त गण भाग लिए और गाजे बाजे के महाकालेश्वर धाम दूर है जाना जरूर है हर हर महादेव आदि जय कारे लगाते डोमा नदी छठ घाट पहुंचे जहां से जल लेकर बाबा के दरबार पहुंचकर शिव लिंग में जल अर्पित किए और इस धार्मिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ पूर्व सांसद रामटहल चौधरी विशिष्ट अतिथि पुव विधायक रामकुमार पहान भाजपा नेत्री आरती कुजूर जिप सदस्य सरीता देवी रंधीर चौधरी मुखिया दीपक बडाईक मानकी राजेंद्र साही पंचायत समिति सदस्य ललीता मेहता ने नारीयल फोड़कर फीता काट कर व बाबा

भोलेनाथ का पुजा अर्चना कर एक महीने का श्रावणी मेला का उद्घाटन किया

वहीं मौके पर रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने कहा बाबा भोलेनाथ से कुछ मांगना है तो बस एक लोटा शिव लिंग पर जल चढ़ाते रहें जीवन खुशहाल रहेगा सारे दुःखों को हरने वाले पालन हार है

इसके सफल आयोजन करने में आयोजन समिति के मुख्य संरक्षक अमरनाथ चौधरी छेदी महतो अध्यक्ष सोनाराम मुण्डा सचिव दिलीप मेहता अजय मुण्डा अरूण मण्डल गोपाल सिंह कन्हाई महतो आदि समिति के सभी पदाधिकारी व सदस्य गण लगे हुए हैं, मौके पर अतिथि के रूप में विहिप महामंत्री शशी मेहता पूर्व सांसद प्रतिनिधि राजेश गुप्ता उमाशंकर साहू पुजा समिति अध्यक्ष रामकुमार महतो वाड संघ प्रखंड अध्यक्ष सत्यमराज कुशवाहा सत्यनारायण तिवारी दुर्गा शंकर साहू विक्रांत तिवारी नीरज पाण्डेय सहित हजारों की संख्या में महिला पुरुष बच्चे उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें...

पटना बैठे साउथ इंडियन्स से करोड़ों रुपए ठगे

पटना. साइबर थाना की पुलिस ने SBI योनो ऐप के जरिए ठगी करने वाले एक बड़े गिरोह का खुलासा किया है। दो लोगों को पटना के राजेंद्र नगर इलाके से दो को पकड़ा गया है। एक का नाम अमित कुमार (25) और दूसरे का नाम राहुल कुमार (22) है। दोनों पिछले लगभग दो तीन सालों से अपने अन्य साथियों के साथ इस ठगी की घटना को अंजाम दे रहे थे। अब तक 15 लोगों से करोड़ों रुपए की ठगी हुई है। इसमें अधिकतर साउथ इंडियन लोग हैं। साउथ इंडिया के एक पीड़ित ने फ्रॉड के संबंध में शिकायत दर्ज कराई थी। इसी मामले में पुलिस ने जब कार्रवाई शुरू की तो गिरोह के बारे में पता चला है। फिलहाल पुलिस इन साइबर ठगों से पूछताछ कर रही है। इन लोगों ने पढ़ाई के नाम पर राजेंद्र नगर में किराए पर रूम लिया था। लोगों को अपने जाल में फंसाने के लिए सोशल साइट जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम पर SBI से जुड़े सस्ते लोन का प्रचार प्रसार करते थे। इसके अलावा पटना में पोस्टर वगैरह भी चिपकाते थे।

सबको व्यवसाय का अधिकार, जैसे फूल-माला वैसे ही...डीएम ने सेवादल वर्कर की क्लास लगा दी

मुजफ्फरपुर. पवित्र सावन माह की शुरुआत हो चुकी है। मुजफ्फरपुर स्थित बाबा गरीबनाथ मंदिर में जलाभिषेक और श्रावणी मेला की तैयारी में जिला प्रशासन पूरी तरह से जुटा है। इस बीच मुजफ्फरपुर डीएम सुब्रत कुमार सेन का एक वीडियो वायरल हो रहा है। दरअसल मेला क्षेत्र में तैयारियों का जायजा लेने पहुंचे डीएम से एक सेवादल कार्यकर्ता ने नेतागिरी वाले अंदाज में शिकायत की तो डीएम ने उसकी क्लास लगा दी। उस वक्त गरीबनाथ मंदिर से प्रमुख महंथ पंडित विनय पाठक भी मौजूद थे। बाबा गरीबनाथ के जलाभिषेक के लिए शिवभक्तों का जत्था पहलेजा से लिए रवाना हो चुका है। करीब 65 किलोमीटर की पैदल यात्रा के बाद भक्त बाबा का गंगाजल से जलाभिषेक करेंगे। शिवभक्तों की सेवा के लिए टेंट सिटी, शिविर एवं अन्य प्रबंध किए गए हैं। कांवरिया पथ पर रौशनी, पानी, चिकित्सा, सुरक्षा एवं अन्य सभी सुविधाओं की बहाली की जा रही है।

चिराग के सांसद का गायब कुत्ता बिहार पुलिस ने 2 दिन में ढूंढा, पप्पू यादव बोले- भारत रत्न मिले

भागलपुर. चिराग पासवान की पार्टी लोजपा-आर के खगड़िया से सांसद राजेश वर्मा का कुत्ता इन दिनों सुर्खियों में है। घर से गायब हुए कुत्ते को पुलिस ने दो दिन में ढूंढ निकाला। दरअसल भागलपुर के खरमनचक में सांसद का घर है। उन्होंने एक साइबेरियन हस्की डॉग पाला है। जिसकी देखभाल उनका छोटा भाई करता है। कुछ दिन पहले कुत्ता घर से गायब हो गया। इस दौरान घरवालों ने कुत्ते की तलाश के काफी प्रयास किए। कुत्ता भटकते हुए इशाकचक थाना इलाके में पहुंच गया। जहां एक शख्स ने उसे दो दिन तक अपने घर पर पाला। और फिर दूसरे शख्स को दे दिया। लेकिन जब उसे पता चला कि कुत्ता विदेशी नस्ल का है, और काफी महंगा है, जिसके बाद उसने 20 हजार रुपए की डिमांड कर दी। जिसके चलते दोनों के बीच झगड़ा होने लगा। किसी ने इसकी सूचना पुलिस को दे दी। पुलिस ने दोनों को समझा-बुझाकर शांत करा दिया। और कुत्ते को अपने साथ ले लाई। अपने सोशल मीडिया अकाउंट से कुत्ते का फोटो पोस्ट किया। जिसके बाद सांसद के भाई ने पुलिस को फोन कर घटना बताई, और फिर कुत्ते को अपने साथ ले गए। इस तरह सांसद राजेश वर्मा का कुत्ता दो दिन में बरामद हो गया।

40 लाख की चोरी, 4 दिन बाद भी गिरफ्तारी नहीं

पटना. कंकड़बाग थाना क्षेत्र के पीसी कॉलोनी स्थित B 126 के दो फ्लैट में बीते 7 जुलाई को चोरी हुई थी। यह इलाका काफी रिहायशी है, VIP लोग इस मोहल्ले में रहते हैं। घटना के चार दिन होने जा रहे हैं। लेकिन, कंकड़बाग थाने की पुलिस के हाथ खाली हैं। जबकि, पीड़ित रूपेश कुमार सिंह ने पुलिस को फ्लैट के अंदर लाइव चोरी करते फुटेज भी सौंपा है। एक फ्लैट के मालिक रूपेश कुमार सिंह पत्रकार हैं। जबकि, दूसरे राजीव रंजन मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव हैं। पत्रकार रूपेश कुमार सिंह ने बताया कि घटना 7 जुलाई की है। उस वक्त पूरे परिवार के साथ सुपौल स्थित गांव गया हुआ था। कैमरे पर नोटिफिकेशन मिलने के बाद पटना फ्लैट पर आया। थाने को सूचना दी। फिलहाल जो आकलन किया हूं, उसके मुताबिक इस चोरी में गोल्ड के गहने 25 लाख, चांदी 5 लाख और कैश 10000 शामिल हैं।

वैशाली में ज्वेलरी शॉप से 20 लाख की लूट, गन पॉइंट पर गहने उठा ले गए लुटेरे; थाना के पास वारदात

वैशाली . बिहार के वैशाली में बेखौफ बदमाशों ने लूट की बड़ी वारदात को अंजाम दिया। गोरौल बाजार में स्थित कोलकाता ज्वेलर्स में लूटपाट की गई। हथियारबंद बदमाशों ने करीब 20 लाख के जेवर और कैश लूट लिए और धमकी देते हुए फरार हो गए। पुलिस कांड की छानबीन में जुट गई है। बताया जा रहा है कि गोरौल थाना घटनास्थल से कुछ ही दूरी पर है। बदमाशों ने इसकी कोई परवाह नहीं की। घटना के बाद इलाके में अफरा तफरी मच गई। सूचना मिलते ही गोरौल थाना पुलिस और एसडीपीओ दुर्गा शक्ति दल बल के साथ घटना स्थल पर पहुंची। अधिकारियों ने दुकान मालिक से पूछताछ कर जानकारी ली और बदमाशों के भागने की दिशा में छापेमारी शुरू कर दी गयी है। दुकान और आस पास के सीटीसीवी कैमरों से वीडियो खंगाल रही है ताकि लुटेरों की पहचान की जा सके। एसडीपीओ ने कहा कि जल्द बदमाशों तक पुलिस पहुंच जाएगी और उन्हें दबोच लिया जाएगा। दुकानदार अरुण कुमार साह ने बताया कि बदमाशों की संख्या छह थी। दुकान खुलने के कुछ देर बाद सभी ग्रहक बनकर बदमाश दाखिल हुए। कुछ देर बाद उन्हें पिस्तौल की नोक पर ले लिया और सेफ में रखे गहनों पर हाथ साफ कर दिया। दुकान में मौजूद सभी लोगों को बंधक बनाकर लूट को अंजाम दिया। पूरी वारदात चंद मिनटों में निपटाकर अपराधी फरार हो गए। घटना से गोरौल बाजार के दुकानदारों में हड़कंप मचा है।

तेजस्वी के बेटे को आशीर्वाद देने राबड़ी आवास पहुंचे किन्नर :लालू-राबड़ी के सामने डांस किया, बधाईयां गाईं

पटना. पटना में शुक्रवार को राबड़ी आवास पर किन्नर लालू और राबड़ी को पोते के जन्म की बधाई देने पहुंचे हैं। उन्होंने नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के बेटे इराज लालू यादव को आशीर्वाद दिया। उन्होंने बेटे को हमेशा फलने-फूलने और स्वस्थ रहने का आशीर्वाद दिया है। इसके साथ ही किन्नरों ने तेजस्वी यादव को भी आशीर्वाद देते हुए कहा कि वे जल्द मुख्यमंत्री बनें। जब किन्नरों से पूछा गया कि उन्हें क्या मिला, तो उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "लालू जी ने जो दे दिया, हमने ले लिया। हम बहुत खुश हैं। 45 दिन बाद गुरुवार को ही नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव बेटे इराज और पत्नी राजश्री यादव और कात्यायनी को लेकर पटना पहुंचे थे।

बालू कारोबारी पर लूट-हत्या के कई मामले थे दर्ज

पटना. पटना के रानी तालाब थाना क्षेत्र के धाना गांव में गुरुवार की रात बालू कारोबारी रमाकांत यादव की गोली मारकर हत्या कर दी गई। रमाकांत अपने घर के बगीचे में टहल रहे थे। कुछ अज्ञात अपराधियों ने उन पर फायरिंग कर दी। शुक्रवार को पटना पश्चिम सिटी एसपी भानु प्रताप ने बताया, 'मामले की जांच के लिए पालीगंज डीएसपी के नेतृत्व में एसआईटी का गठन किया गया है। पुलिस ने चार संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।' 'मृतक रमाकांत यादव पर पटना और भोजपुर के विभिन्न थानों में हत्या, लूट और डकैती सहित कई आपराधिक मामले दर्ज थे। रानीतालाब थाना में परिजन ने अज्ञात लोगों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कराया है'।

गैंगरेप पीड़िता ने की खुदकुशी,10 लड़कों ने की थी दरिंदगी: वीडियो बनाकर कहा था- जब बुलाएंगे आना पड़ेगा

दरभंगा. दरभंगा में गुरुवार को एक नाबालिग गैंगरेप पीड़िता ने खुदकुशी कर ली। लड़की का घर में फंदे से लटकी मिली है। मार्च महीने में होली के दिन गांव के 10 लड़कों ने वारदात को अंजाम दिया था। इस मामले में अभी तक 3 आरोपियों की गिरफ्तारी हुई है। बाकी आरोपियों की तलाश जारी है। गांव वालों का कहना है कि लोगों के ताने और पुलिस की कार्रवाई से परेशान होकर 16 साल की लड़की ने जान दे दी। बहेड़ा SHO हरिद्वार शर्मा ने बताया कि 'जांच के लिए FSL टीम को बुलाया गया है। किस परिस्थिति में लड़की ने खुदकुशी की है, इसकी जांच की जा रही है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है।'

1.11 करोड़ लोगों के खातों में डाले गए 1227 करोड़: सीएम नीतीश बोले- पहले गलती हुई, अब इधर-उधर नहीं होंगे

पटना. बिहार के 1.11 करोड़ लोगों के खाते में आज यानी शुक्रवार को कुल 1227 करोड़ रुपए ट्रांसफर किए गए। यह राशि सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के लाभार्थियों के बैंक खातों में सीधे भेजी गई। इसमें हर लाभार्थी के खाते में 1100 रुपए जमा किए गए। पिछले महीने नीतीश सरकार ने दिव्यांग, विधवा और बुजुर्गों की पेंशन 400 रुपए हर महीने से बढ़ाकर 1100 रुपए कर दी थी। आज से बढ़ी हुई पेंशन लाभार्थियों के खातों में भेजी गई है। इसको लेकर पटना में राज्य स्तरीय समारोह रखा गया है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और दोनों डिप्टी सीएम मौजूद हैं। मुख्यमंत्री बिहार के सभी जिलों के लाभार्थियों से ऑनलाइन बात कर रहे हैं।
कार्यक्रम में डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी थोड़ी देर से पहुंचे तो मुख्यमंत्री ने उन्हें गमला दिया।
सभी 38 जिलों के मुख्यालयों, 534 प्रखंड मुख्यालयों, 8053 पंचायतों और 43 हजार से अधिक राजस्व गांवों में भी कार्यक्रम आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में पूरे राज्य से 60 लाख से अधिक लाभार्थी शामिल हैं। सीएम नीतीश कुमार ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा- 'उन लोगों ने कुछ नहीं किया। सब हम लोगों ने किया है। हम लोग शुरू से साथ थे। हम अब कभी इधर-उधर नहीं जाने वाले हैं। पहले कोई महिलाओं को नहीं पूछता था। हम लोगों ने महिलाओं के लिए कितना काम किया है।'

8 हजार से ज्यादा पंचायतों में मैरिज हॉल बनेंगे

चुनावी साल में नीतीश सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब परिवारों की बेटियों के विवाह कार्यक्रम में सुविधा के लिए करीब 8 हजार से ज्यादा पंचायतों में विवाह भवन का निर्माण कराने का फैसला लिया है। इसका नाम विवाह मंडप योजना दिया गया है। इसके लिए सरकार ने 40 अरब 26 करोड़ 50 लाख रुपए की स्वीकृति दी है। इन विवाह भवनों का संचालन जीविका दादियों की तरफ से किया जाएगा। बिहार सरकार

ने महिलाओं के लिए डोमिसाइल पॉलिसी लागू कर दी है। अब सरकारी नौकरियों में महिलाओं को इसका फायदा मिलेगा। बिहार की बाहर की महिलाओं को जनरल कैटेगरी में जोड़ा जाएगा। पहले दूसरे राज्यों की महिलाओं को भी 35% आरक्षण का लाभ मिलता था। अब सिर्फ बिहार की महिलाओं को फायदा मिलेगा।
बिहार सरकार ने 18 से 28 साल के एक लाख से ज्यादा युवाओं को मंथली 4 से 6 हजार रुपए मंथली इंटर्नशिप दी जाएगी। इन युवाओं के आर्थिक सहायता के साथ-साथ बिजनेस की ट्रेनिंग देने के लिए नीतीश कैबिनेट मुख्यमंत्री-प्रतिज्ञा योजना को मंजूरी दी है।

'दीदी की रसोई' में 40 की जगह 20 रुपए में मिलेगी थाली

सरकार की तरफ से सरकारी चिकित्सा महाविद्यालय, अस्पतालों और सरकारी संस्थानों में 'दीदी की रसोई' से 40 रुपए प्रति थाली में भोजन उपलब्ध कराया जाता है। बिहार सरकार ने चुनाव साल में इसका रेट कम कर दिया। 40 रुपए की थाली अब 20 रुपए में देने का फैसला लिया गया है। 20 रुपए प्रति थाली की क्षतिपूर्ति राज्य सरकार की तरफ से जीविका को उपलब्ध कराई जाएगी।

नई बस खरीदने पर 20 लाख देगी सरकार

राज्य सरकार ने फैसला किया है कि अगर कोई निजी बस ऑपरेटर अन्तरराज्यीय मार्गों के लिए नई एसी बस खरीदेगा, तो सरकार उसे हर बस पर 20 लाख रुपए प्रोत्साहन राशि देगी। 150 बसों के लिए कुल 30 करोड़ रुपए दिए जाएंगे। साथ ही योजना को सही तरीके से चलाने के लिए 60 लाख रुपए अतिरिक्त खर्च करने की मंजूरी भी दी गई है। कुल खर्च 30.60 करोड़ रुपए होगा।

गुरु-शिष्य परंपरा योजना भी मंजूर की गई

कैबिनेट ने विलुप्त हो रही लोक कलाओं को बचाने के लिए मुख्यमंत्री गुरु-शिष्य परंपरा योजना को भी मंजूरी दी है। गुरु को 15000, संगीतकार को 7500 और शिष्य को 3000 मासिक मानदेय दिया जाएगा। सरकार ने विलुप्त हो रही लोक कलाओं को बचाने के लिए योजना बनाई है। इसके तहत लोक गाथा, लोक नाट्य, लोक नृत्य, लोक संगीत, वाद्य यंत्र, शास्त्रीय कला और चित्रकला जैसी विधाओं को संरक्षित करने के लिए परंपरागत तरीके से प्रशिक्षण दिया जाएगा। चुनावी साल में बिहार सरकार ने एक नई योजना शुरू की है, जिसका नाम दिव्यांगजन सिविल सेवा प्रोत्साहन योजना है। इसका लाभ दिव्यांग पुरुष अभ्यर्थी पिछड़ा वर्ग, सामान्य वर्ग या आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (EWS) अभ्यर्थियों को मिलेगा। हालांकि, ये सुनिश्चित करना होगा कि उन्हें राज्य की किसी दूसरी सिविल सेवा तैयारी योजना से कोई आर्थिक मदद नहीं मिल रही है। ऐसे में BPSC या UPSC की प्रारंभिक परीक्षा पास कर लेते हैं, तो उन्हें मुख्य परीक्षा की तैयारी के लिए 50 हजार रुपए और इंटरव्यू की तैयारी के लिए 1 लाख रुपए की सहायता राशि दी जाएगी।

भोजपुर की प्रभावती से सीएम नीतीश ने की बातचीत: महिला बोली- साड़ी खरीदेंगे

आरा,भोजपुर. आरा शहर के नागरी प्रचारणी सभागार में सामाजिक सुरक्षा पेंशनधारियों के खाते में बढ़ी हुई दर पर राशि देने का कार्यक्रम आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान नीतीश कुमार ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए लोदीपुर गांव की रहनी वाली प्रभावती देवी से बात की। उन्होंने 2 लाख 80 हजार पेंशनधारियों के सीधे खाते में 1100 रुपए भेजे । मोबाइल पर मैसेज आते ही महिलाओं के चेहरे खुशी से खिल उठे। नीतीश कुमार ने आज बिहार के 1,11,19,949 पेंशनधारियों के खाते 122727.38 लाख बढ़ी हुई राशि ट्रांसफर की है । महिलाएं पेंशन मिलने के बाद खुश नजर आई। एक महिला ने कहा कि साड़ी खरीदेंगे। कोईलवर प्रखंड के लोदीपुर गांव निवासी श्यामा चरण तिवारी की पत्नी प्रभावती देवी कहां कि हम लोगों ने नीतीश कुमार भइया से कहा था कि 400 रुपए के पेंशन से कुछ नहीं होता है, आर्थिक स्थिति खराब है। आज हम उनसे बात करके उन्हें दिल से धन्यवाद दिया और आशीर्वाद दिया है। उदवंतनगर प्रखंड के एकौना गांव निवासी सुशीला देवी ने कहा कि आज हमारे मोबाइल पर 1100 रुपए आने का मैसेज आ गया है। आज हम लोग बहुत खुश हैं। इस पैसे से हम धकाधक साड़ी खरीदेंगे, पहले 400 रुपए मिलता था। आज 1100 रुपए मिला है। सोमवार को बैंक जाकर पैसा निकालेंगे, तब मॉल जाकर सूती साड़ी खरीदेंगे। नया साड़ी पहनकर सरकार (नीतीश) के पास जाना होता, तो चले जाते और दिखाते भी। माला देवी ने कहा कि हम नीतीश कुमार को धन्यवाद देना चाहते हैं। 1100 मिलने से हमारी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार हो जाएगा। आज हम लोग काफी खुश हैं। पैसे मिलने से हमारे बाल बच्चे समेत परिवार में सभी लोग खुश है। इस पैसे से राशन का सामान, बच्चों का कपड़ा खरीदेंगे। जिलाधिकारी ने तनय सुल्तानिया ने कहा कि जो घोषणा की गई थी कि हर एक राज्य के जितने भी पेंशनधारी है। चाहे वो वृद्धा , दिव्यांग या विधवा पेंशन हो उन सभी की राशि 400 से बढ़ाकर 1100 रुपए कर दिया गया है। मुख्यमंत्री का संदेश हमारे जिला के सभी पेंशनधारियों को आज मिला है। साथ ही साथ सबके मोबाइल में ट्रांसफर करके मैसेज भेज दिया गया है। हमारे जिला में लगभग दो लाख 80 हजार पेंशनधारी है। जिन सभी के खाते में बढ़ी हुई 1100 की राशि जिसकी लागत कुल 30 करोड़ 96 लाख 91 हजार है। इस कार्यक्रम में जिले के प्रभारी मंत्री केदार प्रसाद गुप्ता, जिलाधिकारी तनय सुल्तानिया समेत जिले के अधिकारी व पदाधिकारी समेत सैकड़ों महिलाएं उपस्थित थी।

बिहार चुनाव के लिए महागठबंधन का मैनिफेस्टो तैयार, युवा और महिलाओं के वादों की भरमार

पटना. बिहार विधानसभा चुनाव के लिए महागठबंधन यानी इंडिया अलायंस ने अपना मैनिफेस्टो तैयार कर लिया है। राष्ट्रीय जनता दल, कांग्रेस और वाम दलों के गठबंधन की उप समिति ने गुरुवार को अपने साझा संकल्प पत्र को अंतिम रूप दिया। इसे अब महागठबंदन की कोऑर्डिनेशन कमिटी को सौंपा जाएगा, जिसके अध्यक्ष तेजस्वी यादव हैं। वहां से फाइनल मुहर लगने के बाद जनता के बीच इसे जारी किया जाएगा। महागठबंधन के चुनावी मैनिफेस्टों में बिहार के युवाओ और महिलाओं को फोकस करते हुए कई वादे शामिल किए जा रहे हैं।
इसके अलावा आशा एवं स्कीम वर्कर के बेहतर भविष्य को लेकर भी उसमें वायदे होंगे। मैनिफेस्टों में पूर्व में घोषित सामाजिक सुरक्षा पेंशन को 1500 रुपये प्रति माह करने, माई

बहिन योजना के तहत महिलाओं को हर महीने 2500 रुपये देने समेत अन्य तमाम घोषणाओं को साझा संकल्प पत्र में शामिल किया जाएगा। पटना के कदमकुआं स्थित लेफ्ट पार्टी सीपीआई माले के प्रदेश कार्यालय में इंडिया गठबंधन की साझा संकल्प पत्र उप समिति की गुरुवार को बैठक हुई। इसमें मैनिफेस्टो के सभी प्रस्तावों को अंतिम रूप दिया गया। उपसमिति की यह तीसरी बैठक थी, जिसमें राजद, कांग्रस, सीपीआई, सीपीएम, माले और वीआईपी के सदस्य मौजूद रहे। उपसमिति अपना प्रस्ताव 12 जुलाई को गठबंधन की समन्वय समिति को सौंप देगी। बिहार में आगामी महीनों में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। राजद, कांग्रेस, सीपीआई, सीपीएम, सीपीआई-माले और वीआईपी महागठबंधन में साथ मिलकर चुनाव लड़ रही हैं। पशुपति पारस की राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के भी गठबंधन में शामिल होने पर बात चल रही है। इसके अलावा असदुद्दीन ओवैसी की एआईएमआईएम ने भी विपक्षी गठबंधन में शामिल होने का प्रस्ताव दिया है। हालांकि, राजद ने इस पर कोई विचार नहीं किया है।

गया में पुलिस की गाड़ी से युवक की मौत पर बवाल; गुस्साई भीड़ ने स्कॉर्पियो फूंकी

गया. गया जी जिले में पुलिस की गाड़ी की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई। जिसके बाद गुस्साई भीड़ ने पुलिस की निजी गाड़ी फूंक दी। पहले तोड़फोड़ की फिर आग लगा दी। घटना इमामगंज के कोठी इलाके की है। बताया जा रहा है कि शराब तस्करी के शक में पुलिस बाइक सवार युवक का पीछा कर रही थी। इसी दौरान विधिचक गांव में पुलिस की गाड़ी की चपेट में आने से युवक की मौत हो गई। जिसके बाद गुस्साई भीड़ ने शव को सड़क पर रखकर प्रदर्शन किया। वही इस घटना के बाद पुलिसकर्मी

वहां से भाग निकले। गुस्साई भीड़ ने पुलिस की निजी स्कॉर्पियो को आग के हवाले कर दिया। घटना की सूचना मिलने पर अतिरिक्त पुलिस बल मौके पर पहुंचा। और लोगों को समझाने का प्रयास किया। हालांकि अब स्थिति काबू में है। लेकिन इस घटना के बाद से इलाके के लोगों में रोष है।

रील्स का जानलेवा शौक; सहरसा में स्टंट करते पलट गई स्कॉर्पियो, चार जख्मी, एक की हालत नाजुक

सहरसा . सोशल मीडिया पर फेसम होने और पैसे कमाने की लालच में रील्स की शौकीन युवा पीढ़ी खतरनाक खेल खेल रही है। कई बार जान जाने की खबरें भी आ चुकी हैं। ताजा मामला बिहार के सहरसा का है जहां शहर के हवाई अड्डा रनवे पर शुक्रवार की सुबह स्टंट करने और रील्स बनाने के दौरान चार युवक घायल हो गए जिनमें से एक की हालत नाजुक है। स्टंट करते तेज रफ्तार स्कार्पियो रनवे पर पलट गई। घटना से स्थानीय लोगों में काफी गुस्सा है। हवाई अड्डा पर पुलिस गश्त बढ़ाने की मांग की गई है। इस घटना में गाड़ी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी। मामले की जानकारी मिलने पर यातायात थाना पुलिस मौके पर पहुंची और छानबीन किया। स्थानीय लोगों ने बताया कि स्कार्पियो सवार चार युवक हवाई अड्डा के रनवे पर स्टंट का रील बना रहे थे। इसी दौरान तेज रफ्तार गाड़ी अनियंत्रित होकर पलटी मार गई। गाड़ी पर सवाल चारों युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गए। जिसके बाद अफरातफरी मच गई। सभी जख्मी को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। जिसमें एक युवक के

गंभीर होने की बात कही जा रही है। हवाई अड्डा पर योग और मार्निंग वाक कर रहे लोगों ने बताया कि एक बड़ा हादसा टला गया। लोगों ने आक्रोशित होकर बताया कि हर रोज रील्स बनाने और स्टंट करने युवक पहुंचते हैं लेकिन पुलिस कोई कार्रवाई नहीं करती। अक्सर दुर्घटना होते रहती है। लोगों ने कहा है कि अब रील्स बनाने वालों के खिलाफ कार्रवाई करेंगे। पुलिस ने स्कॉर्पियो को जब्त कर लिया है। इससे पहले रील्स बनाने के चक्कर में कई लोगों की जान जा चुकी है। सस्ती लोकप्रियता और चकाचौंध में युवा खतरनाक स्टंट करते हैं। कई लोग तो अपनी अश्लील क्लिप बनाते हैं और खुद वायरल भी कर देते हैं। कई बार सार्वजनिक स्थानों पर रील्स बनाने वाले भीड़ के हाथों पिट भी जाते हैं।

वेटरनरी ग्राउंड में फायरिंग के बाद छात्रों का प्रदर्शन:कैंपस में धरने पर बैठे स्टूडेंट्स, गोली लगने से घायल मयंक अस्पताल में भर्ती

पटना. पटना के वेटरनरी ग्राउंड में गुरुवार की देर शाम खेलने के दौरान मारपीट और फायरिंग की घटना हुई। इस घटना में स्टूडेंट मयंक की हाथ में गोली लगी है, जिसका इलाज चल रहा है। शुक्रवार को इस मामले को लेकर वेटरनरी कॉलेज के स्टूडेंट्स का गुस्सा देखने को मिला। सुबह से कॉलेज कैंपस में प्रदर्शन हो रहा है। घटना एयरपोर्ट थाना क्षेत्र की है। बताया जा रहा है कि 2 दिन पहले भी गोली चलाने वाले शख्स से विवाद हुआ था।
प्रदर्शन कर रहे छात्राओं ने बताया कि 'कैंपस में किसी तरह की सुरक्षा व्यवस्था नहीं है। दिन में ही कई बार छेड़खानी की घटना हुई है। शिकायत करने के बावजूद भी कोई कार्रवाई नहीं होती है।' 'कैंपस में सीसीटीवी कैमरे भी नहीं हैं। चार दिनों पहले कार्तिक नामक युवक ने देख लेने की धमकी दी थी। गुरुवार को छात्र शिवम और प्रिंस को टारगेट कर ट्रेनर ने फायरिंग की थी।'

एक शख्स को हिरासत में लेकर की जा रही पूछताछ

मयंक को गोली लगने के बाद सहयोगी छात्र मौके पर पहुंचे और उसे निजी अस्पताल में भर्ती कराया। यहां उनका इलाज चल रहा है। वहीं, पुलिस ने नयाज उर्फ गुलाब को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। गुलाब के परिजनों ने बताया कि वो बिहार पुलिस की तैयारी करता है, इसलिए रोजाना ग्राउंड में दौड़ने जाता था। उसकी इस विवाद में कोई भूमिका नहीं है। विवाद ट्रेनर से हुआ है। पहले भी ट्रेनर और वेटरनरी कॉलेज के छात्रों के बीच लड़ाई हुई थी।
दो दिन पहले कुछ छात्रों के बीच किसी बात को लेकर बहस हुई थी। गुरुवार की शाम दोनों पक्ष के लोग जुटे। इसके बाद दोनों पक्ष में मारपीट शुरू हो गई। इस दौरान एक शख्स ने फायरिंग कर दी, जो मयंक के हाथ में लग गई। हालांकि, कॉलेज प्रशासन ने फायरिंग से इनकार किया है। एयरपोर्ट थानेदार अमित कुमार ने बताया कि एक छात्र घायल हुआ है। जिसका इलाज चल रहा है। चार पांच दिनों पहले भी ग्राउंड में खेलने को लेकर विवाद हुआ था। गुरुवार को उसी विवाद में गोली चली है। वहीं, वेटरनरी कॉलेज के एक अधिकारी का कहना है कि कैंपस के छात्रों के बीच लड़ाई नहीं हुई है। वेटनरी ग्राउंड में बाहरी लड़के घुस आए थे। जब कैंपस के छात्रों ने इसका विरोध किया तो उनलोगों ने फायरिंग कर दी।

श्रावणी मेले का सम्राट चौधरी ने किया शंखनाद; कांवड़ियों के लिए गंगा घाट से देवघर तक सड़क का ऐलान

भागलपुर. विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेले का डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी शुक्रवार को उद्घाटन किया। इस मौके पर भागलपुर के सुल्तानगंज में जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होने कहा कि अगली बार से कांवरिया को सुल्तानगंज बाजार होकर नहीं जाना पड़ेगा। कच्ची कांवरिया सड़क गंगा घाट से सीधे देवघर तक जाएगी। इसके लिए बायपास सड़क बनेगी।डिप्टी सीएम ने कहा, हर साल करीब तीन करोड़ श्रद्धालु सुल्तानगंज आते हैं। सभी चाहते हैं कि सहूलियत हो, सड़क सुगम बने। इसलिए सरकार ने नया प्लान बनाया है। जो साल के अंत तक पूरा हो जाएगा। उन्होंने कहा कि अगुवानी पुल अब

सुपर स्ट्रक्चर मॉडल पर बनेगा। 18 माह में काम पूरा हो जाएगा। उन्होंने कहा कि एक्सप्रेस वे का उपहार भी मिला है। इससे सुल्तानगंज से कोलकाता तक पांच घंटे में सफर पूरा हो सकेगा। उन्होंने कहा कि मुंगेर से मिर्जाचौकी तक फोरलेन सड़क का काम लगभग है। पुरानी सड़क का काम भी पूरा होने पर है। बरियारपुर से बांका तक सड़क चौड़ी हो रही है। सुल्तानगंज से देवघर तक वर्तमान सड़क फोरलेन बनेगी। सावन में ही काम दिखने लगेगा।
सम्राट चौधरी ने कहा बिहार में भागलपुर, मुंगेर, सहरसा, मधुबनी, वीरपुर, वाल्मीकि नगर और मुजफ्फरपुर एयरपोर्ट को विकसित किया जा रहा है। इसके अलावा सुल्तानगंज में भी भाव एयरपोर्ट का निर्माण कराया जाएगा और इसका नामकरण बाबा अजगेवीनाथ एयरपोर्ट किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सितंबर में बिहार आएंगे। तब बहुत सारे प्रोजेक्ट का शिलान्यास एस होगा और कई योजनाओं की घोषणा होगी। उन्होंने कहा कि हनुमाना डैम तक गंगा का पानी ले जाने की योजना राज्य सरकार ने सिंचाई के लिए किया है। इस परियोजना का शिलान्यास करने इसी सावन में सीएम आएंगे। उन्होंने कहा कि सुल्तानगंज घाट के पास रेलवे की 17 एकड़ जमीन अधिग्रहित की जाएगी और इसे पर्यटन विभाग को दिया जाएगा। ताकि इस क्षेत्र का पर्यटकीय विकास हो सके। उपमुख्यमंत्री ने बताया कि पटना की तरह मुंगेर से सुल्तानगंज होते हुए भागलपुर तक मरीन ड्राइव की योजना बनाई गई है। जल्द ही इस पर काम शुरू होगा। इस मौके पर डिप्टी सीएम विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि बिहार का विकास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में लगातार आगे बढ़ता जा रहा है। सनातन संस्कृति को पहचान हमारी डबल इंजन के सरकार दे रही है। कार्यक्रम को श्रम संसाधन मंत्री संतोष कुमार सिंह, राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री संजय सरावगी, भवन निर्माण मंत्री जयंत राज, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल आदि ने भी संबोधित किया। मौके पर कई विधायक, जिला परिषद अध्यक्ष, उपाध्यक्ष। मेयर, सुल्तानगंज नगर परिषद अध्यक्ष, उपाध्यक्ष आदि मौजूद रही।

सुप्रीम कोर्ट के सुझाव को मानेगा चुनाव आयोग?

बिहार में मतदाता सूची की गहन समीक्षा को लेकर कई याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की गईं थीं। सुप्रीम कोर्ट में गुरुवार को याचिकाओं पर सुनवाई हुई, जस्टिस सुधांशु धूलिया और जस्टिस जायमाल्या की खंडपीठ ने सभी पक्षों को सुनने के पश्चात चुनाव आयोग को सुझाव दिया, कि आधार कार्ड, वोटर आईडी और राशन कार्ड को मान्यता दें। सुप्रीम कोर्ट में लगभग साढ़े 3 घंटे बहस चली। दोनों पक्षों ने अपने-अपने तर्क रखे। चुनाव आयोग एक संवैधानिक संस्था है। इसको ध्यान में रखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने वोटर लिस्ट की गहन समीक्षा करने पर कोई रोक नहीं लगाई है। सुप्रीम कोर्ट ने सुझाव के रूप में कहा है, चुनाव आयोग बिहार मतदाता सूची की गहन समीक्षा पर, आधार कार्ड, वोटर आईडी और राशन कार्ड को भी शामिल करे। सुप्रीम कोर्ट ने 28 जुलाई को मामले की फिर सुनवाई करने की तारीख नियत की है। उसके बाद सुप्रीम कोर्ट कोई फैसला कर सकती है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा जो सुझाव दिए गए हैं उसको लेकर तरह-तरह की आशंकायें व्यक्त की जा रही हैं। राजनीतिक हल्कों में कहा जा रहा है, सुप्रीम कोर्ट जब भी इस तरह के सुझाव देती है सरकार और चुनाव आयोग सुप्रीम कोर्ट के सुझाव और आदेशों को नहीं मानता है। चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने इसी तरह से याचिकाओं का निपटारा किया था। जो आदेश और सुझाव दिये, उसे सरकार ने नहीं माना। चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति के लिए कानून बनाकर सुप्रीम कोर्ट के आदेश को नजर अंदाज कर दिया। मनमाने तरीके से चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति की। सुप्रीम कोर्ट में अभी भी याचिका लंबित है, जिस पर सुनवाई होनी है। सरकार द्वारा जिस मनमाने तरीके से चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति की गई। उसके बाद से ही चुनाव आयुक्तों की भूमिका सरकार परस्त होकर रह गई है। विपक्षी दलों द्वारा लगातार चुनाव आयोग के निर्णय और कार्यवाही का विरोध जताया जा रहा है। सरकार ने चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति के लिए जो कानून बनाया उसमें 2014 के बाद के किसी भी चुनाव आयुक्त के ऊपर कोई भी अपराधिक मुकदमा दायर नहीं हो सकता है। जब से यह प्रावधान कानून में किया गया है, उसके बाद से चुनाव आयोग के ऊपर सरकार के इशारे पर काम करने के आरोप लग रहे हैं। चुनाव आयुक्त को अब कोई डर और भय नहीं रहा, जिसके कारण चुनाव आयोग विपक्षी दलों की शिकायतों और उनके द्वारा मांगी गई जानकारी नहीं दे रहे हैं। चुनाव आयुक्त के ऊपर अब कोई जिम्मेदारी या कानूनी कार्रवाई तय नहीं हो सकती है। जिसके कारण चुनाव आयुक्त सरकार के ऊपर पूरी तरह से निर्भर हो गए हैं। पिछले लोकसभा चुनाव और विधानसभा चुनाव में चुनाव आयोग की भूमिका से एक तरह से सत्ता पक्ष के राजनीतिक दल को फायदा मिला है। सरकार ने चुनाव आयोग के लिए समय-समय पर नियमों में बदलाव किए हैं। चुनाव आयोग अब कोई भी डेटा विपक्षी दलों को उपलब्ध नहीं करा रहा है। चुनाव के दौरान की गई शिकायतों पर कोई कार्यवाही नहीं कर रहा है। चुनाव का रिकॉर्ड रखने की 45 दिन की समय सीमा तय कर दी है। ऐसे नियमों से राजनीतिक दलों को जो जानकारी प्रमाण के रूप में चहिए होती है, वह नहीं मिल रही है। इस कारण वो चुनावी गड़बड़ियों को लेकर अपनी लड़ाई न्यायालय में नहीं लड़ पा रहे हैं। चुनाव और मतदान के समय मतदान केंद्र के बाहर की वीडियो ग्राफी भी विपक्षी दलों को उपलब्ध नहीं कराई जा रही है। इसको लेकर चुनाव आयोग के ऊपर अविश्वास बढ़ता चला जा रहा है। चुनाव आयोग को लेकर आम जनता और राजनीतिक दलों को अब वह विश्वास नहीं रहा जो चुनाव आयोग की निष्पक्ष भूमिका के लिए होना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में आदेश के स्थान पर चुनाव आयोग को सुझाव दिया है। सुप्रीम कोर्ट के सुझाव को चुनाव आयोग मानेगा या नहीं, यह चुनाव आयुक्तों के ऊपर निर्भर करेगा। चुनाव आयोग की किसी भी कार्यवाही पर कोई रोक नहीं लगाई गई है। ना ही सुप्रीम कोर्ट ने कोई स्पष्ट आदेश दिए हैं। ऐसी स्थिति में बिहार में चुनाव प्रक्रिया एक बार शुरू हो गई उसके बाद सुप्रीम कोर्ट हस्तक्षेप करने से इनकार कर सकती है। ऐसा पहले भी हो चुका है। इस बात को लेकर राजनीतिक दलों में संशय और आशंका देखने को मिल रही है। यह आमधारणा बनती चली जा रही है कि न्यायपालिका पर सरकारी दवाब है। हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट से सरकार के खिलाफ आदेश देने में जज डरने लगे हैं। ऐसी स्थिति में मामलों को टाल दिया जाता है। जिसके कारण अब राजनीतिक दल भी आक्रामक होते चले जा रहे हैं। चुनाव आयोग के खिलाफ जो अविश्वास देखने को मिल रहा है, उसे देखते हुए राजनीतिक दलों ने जन आंदोलन की शुरुआत करके नई रणनीति बनाना शुरू कर दिया है। लोकतंत्र बचाने के लिए अब राजनीतिक दल और जनता सड़कों पर आने लगी है। बिहार से यह शुरुआत हो गई है। चुनाव आयोग ने यदि आधार कार्ड, वोटर आईडी और राशन कार्ड को आधार नहीं माना। मतदाता सूची के परीक्षण कार्य में निष्पक्ष भूमिका और विपक्षी दलों को विश्वास में नहीं लिया। तो इसकी परणति एक जन आंदोलन के रूप में हो सकती है। बांग्लादेश में शेख हसीना के चुनाव में वहां के चुनाव आयोग ने एकतरफा चुनाव कराया था। विपक्षी दलों ने चुनाव का बहिष्कार किया था। शेख हसीना की पार्टी को चुनाव में वहां के चुनाव आयुक्त ने भारी बहुमत से जितवा दिया था। उसके बाद एक जन-आंदोलन खड़ा हुआ। शेख हसीना को जान बचाने के लिए बांग्लादेश छोड़कर भागना पड़ा। वह भारत में शरणागत हैं। बांग्लादेश के चुनाव आयुक्त को वहां की जनता ने सड़क पर घसीट कर मारा पीटा। अब उनके खिलाफ बांग्लादेश में मुकदमा चल रहा है। भारत में पिछले 75 वर्षों में लोकतांत्रिक व्यवस्था और चुनाव को लेकर आम नागरिकों में हमेशा भरोसा रहा है। यदि यह भरोसा नहीं रहेगा, तो आगे चलकर कुछ भी हो सकता है। चुनाव को लेकर जिस तरह से मतदाताओं में संशय की स्थिति बन गई है। चुनाव आयोग के खिलाफ लगातार विरोध और आंदोलन सड़कों पर देखने को मिल रहे हैं। जो विरोध बिहार से शुरू हुआ है उसने 1975 के छात्र आंदोलन की याद दिला दी है। देखते ही देखते 1975 का छात्र आंदोलन बिहार से चलकर राष्ट्रीय स्तर के आंदोलन में परिवर्तित हो गया था। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को आपातकाल लगाकर अपनी सत्ता को बचाना पड़ा था। जब 1977 में चुनाव हुए, तब इंदिरा गांधी की कांग्रेस को करारी पराजय का सामना करना पड़ा था। पहली बार 1977 में जनता पार्टी की सरकार बनी थी। सरकार, सुप्रीम कोर्ट, चुनाव आयोग, राजनीतिक दलों और मतदाताओं को अपनी-अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। चुनाव निष्पक्ष तरीके से हों। आम जनता का विश्वास चुनाव पर बना रहे। इसके लिए सभी को अपनी-अपनी भूमिका का जिम्मेदारी से निर्वहन करना होगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो देश में अराजकता की स्थिति बन सकती है।

अंतर्दृष्टि से अनुबंधित है ज्ञान

बुद्धि अच्छी चीज है, पर कोरी बौद्धिकता ही सब कुछ नहीं है। इससे व्यक्ति के जीवन में नीरसता और शुष्कता आती है। ज्ञान अंतर्दृष्टि से अनुबंधित है, इसलिए यह अपने साथ सरसता लाता है। ज्ञानी व्यक्तियों के लिए पुस्तकीय अध्ययन की विशेष अपेक्षा नहीं रहती। भगवान महावीर ने कब पढ़ी थीं पुस्तकेंट आचार्य भिक्षु, संत तुलसी, संत कबीर अदि जितने ज्ञानवान पुरुष हुए हैं, उनमें कोई भी पंडित नहीं थे। अंतर्दर्शन उनकी ज्ञानमयी चेतना की स्फुरणा करता था। इसके आधार पर ही उन्होंने गंभीर तत्वों का विश्लेषण किया। वे यदि पुस्तकों के आधार पर प्रतिबोध देते तो संसार को कोई नया दृष्टिकोण नहीं दे सकते थे। एक बात और ज्ञातव्य है। विद्वान बहुत पढ़े-लिखे होते हैं, पर वे आज तक भी किसी ज्ञानी को पराजित नहीं कर सके। इंद्रभूति महापंडित थे। उनका पांडित्य विश्रुत था। पर वे भगवान महावीर की ज्ञान चेतना का अनुभव करते ही पराभूत हो गए। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। ज्ञान और बुद्धि की परस्पर कोई तुलना नहीं है। बुद्धि कुंड का पानी है और ज्ञान कुएं का पानी है। कुंड का पानी जितना है उतना ही रहता है। वर्षा होती है तो पानी थोड़ा बढ़ जाता है। इसी प्रकार अनुकूल सामग्री और पुरुषार्थ का योग होता है तो बुद्धि बढ़ जाती है। अन्यथा उसके विकास की कोई संभावना नहीं रहती। कुएं से जितना पानी निकाला जाता है, नीचे से और आता रहता है। वह कभी चुकता नहीं है, उसमें नए अनुभव जुड़ते जाते हैं। बुद्धि आवश्यक है किंतु उसके आधार पर कभी आत्म-दर्शन नहीं हो पाता। आत्म-दर्शन का पथ है ज्ञान। ज्ञान तब तक उपलब्ध नहीं होता जब तक ध्यान का अभ्यास न हो। जिस व्यक्ति को अंतर्दृष्टि का उद्घाटन करना है, ज्ञानी बनना है, उसे प्रेक्षाध्यान साधना का आलंबन स्वीकार करना होगा। ऐसा करके वह ज्ञान की श्रेष्ठता को प्रमाणित कर सकता है।

परीक्षा प्रणाली या सामाजिक भ्रमजाल?

"यह समस्या केवल स्कूली शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिकता पूरे उत्तर भारत के शैक्षणिक वातावरण में व्याप्त है। स्कूलों में अब शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान देना नहीं, बल्कि अच्छे परिणामों के जरिए स्कूल का नाम रौशन करना बन गया है। इसके उलट, दक्षिण भारत की तस्वीर अपेक्षाकृत बेहतर है। वहां के माता-पिता शिक्षा को केवल अंक पाने के माध्यम के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास और कौशल निर्माण के रूप में देखते हैं। यही कारण है कि तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक जैसे राज्यों के छात्र राष्ट्रीय परीक्षाओं में निरंतर बेहतर प्रदर्शन करते हैं। वहां की शिक्षा प्रणाली में केवल परीक्षाफल नहीं, बल्कि सोचने-समझने की क्षमता, व्यवहारिकता और नवाचार को भी महत्व दिया जाता है।"

सोनम लववंशी

शिक्षा को राष्ट्र निर्माण की आधारशिला कहा गया है। यह व्यक्ति के ज्ञान, विवेक, सृजनात्मकता और व्यक्तित्व विकास का माध्यम रही है। लेकिन आज की तारीख में यह उद्देश्य कहीं पीछे छूट गया है। शिक्षा अब एक 'अंक-उद्योग' में तब्दील हो चुकी है, जहां ज्ञान की बजाय नंबर ही सफलता का पर्याय बन गए हैं। अब यह न तो चरित्र निर्माण का साधन रही, न ही सामाजिक चेतना का उपकरण। यह छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों को अंक-दौड़ की एक अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा में धकेलने वाला शोषण तंत्र बन गई है। ताजा आंकड़ों पर नजर डालें तो सीबीएसई की 10वीं की परीक्षा में इस बार 45,516 छात्रों ने 95 फीसदी से ज्यादा अंक प्राप्त किए, जो कुल परीक्षार्थियों का लगभग 1.92 प्रतिशत है। वहीं 1,99,944 छात्रों ने 90 फीसदी से ज्यादा अंक हासिल किए, जो 8.43 प्रतिशत के करीब है। यह कोई अपवाद नहीं है हर साल यह आंकड़ा और ऊपर जा रहा है। लेकिन जब इन अंकों की असलियत जानने के लिए उत्तर पुस्तिकाएं जांचने वाले शिक्षकों की कार्यप्रणाली और मूल्यांकन प्रणाली पर सवाल उठते हैं, तो व्यवस्था मौन हो जाती है। यह एक साजिशन खड़ा किया गया भ्रमजाल है, जो शिक्षा को स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की बजाय एक कृत्रिम दौड़ में तब्दील कर रहा है।

शिक्षा के इस व्यवसायीकरण की गहराई को समझने के लिए जरूरी है कि हम उस ढांचे को देखें जिसमें यह सब संचालित हो रहा है। 2019 में सीबीएसई से मान्यता प्राप्त कुल 22,030 स्कूलों में से लगभग 80 प्रतिशत स्कूल निजी क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। इस आंकड़े में केवल 1,138 केंद्रीय विद्यालय, 2,727 सरकारी स्कूल, 598 नवोदय विद्यालय और 14 तिब्बती स्कूल शामिल हैं, जबकि शेष 17,553 निजी स्कूल हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा का एक बड़ा हिस्सा निजीकरण के दबाव में है, जहां शिक्षा की गुणवत्ता नहीं, बल्कि परिणामों की संख्या मायने रखती है और जब यही 'अंकवीर' छात्र राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे यूपीएससी, जेईई या नीट में पहुंचते हैं, तो उनकी वास्तविक योग्यता सामने आ जाती है। उदाहरण के लिए, यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2019 में लगभग 11.35 लाख उम्मीदवारों ने आवेदन किया था, जिनमें से मात्र 11,474 छात्र ही मुख्य परीक्षा तक पहुंच सके। यही हाल साल 2024 का रहा। इस वर्ष लगभग 13.4 लाख छात्रों में से सिर्फ 14,627 उम्मीदवार मुख्य परीक्षा तक पहुंचे। यानि बोर्ड परीक्षा के हाई स्कोरर प्रीलिम्स की पहली कसौटी पर ही फेल हो जाते हैं। यह दर्शाता है कि बोर्ड परीक्षाओं में मिलने वाले ऊंचे अंक असल में बौद्धिक क्षमता या विषय की समझ का पैमाना नहीं हैं। यह मूल्यांकन प्रणाली रटंत विद्या, तयशुदा उत्तरों और सजावटी भाषा पर आधारित है, जिसमें मौलिक सोच और विश्लेषण की कोई जगह नहीं।

यह समस्या केवल स्कूली शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिकता पूरे उत्तर भारत के शैक्षणिक वातावरण में व्याप्त है। स्कूलों में अब शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान देना नहीं, बल्कि अच्छे परिणामों के जरिए स्कूल का नाम रौशन करना बन गया है। इसके उलट, दक्षिण भारत की तस्वीर अपेक्षाकृत बेहतर है। वहां के माता-पिता शिक्षा को केवल अंक पाने के माध्यम के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास और कौशल निर्माण के रूप में देखते हैं। यही कारण है कि तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक जैसे राज्यों के छात्र राष्ट्रीय परीक्षाओं में निरंतर बेहतर प्रदर्शन करते हैं। वहां की शिक्षा प्रणाली में केवल परीक्षाफल नहीं, बल्कि सोचने-समझने की क्षमता, व्यवहारिकता और नवाचार को भी महत्व दिया जाता है। उत्तर भारत के अधिकतर स्कूलों में शिक्षण अब गाइडबुक, मॉडल पेपर और स्मार्ट आंसर पर आधारित हो गया है। शिक्षक भी केवल परिणाम उन्मुख होकर पढ़ाते हैं, क्योंकि उनके मूल्यांकन का आधार भी अब बच्चों के अंक बन गए हैं। इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम बच्चों की मानसिक स्थिति पर पड़ता है। नंबर की होड़ में बच्चों में अवसाद, आत्महत्या की प्रवृत्ति, हीन भावना और मानसिक तनाव बढ़ रहा है। शिक्षा अब ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि एक दौड़ बन गई है, जिसमें सबसे तेज दौड़ने वाला ही विजेता माना जाता है। यहां तक की कोचिंग टाउन बन चुके शहर कोटा, दिल्ली, पटना, प्रयागराज और इंदौर इस अंक-उद्योग की सबसे बड़ी मिसाल हैं। यहां छोटे-छोटे बच्चों से लेकर स्नातक विद्यार्थी तक 'रैंक मशीन' बनने के लिए दिन-रात खप रहे हैं। यह एक सामाजिक दबाव का परिणाम है, जो विशेष रूप से उत्तर भारत में डॉक्टर-इंजीनियर बनने की लीक पर चलता है। वहीं दक्षिण भारत में शिक्षा के विविध विकल्पों, व्यावसायिक दक्षता और कौशल विकास को भी उतना ही महत्व मिलता है। यह सोच का फर्क है, जो वहां के छात्रों को तकनीकी और प्रशासनिक क्षेत्रों में मजबूत बनाता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि इस अंक-उद्योग की सबसे खतरनाक बात यह है कि यह छात्रों के भीतर सोचने, सवाल उठाने और नवाचार की प्रवृत्ति को कुचल देता है। शिक्षा का उद्देश्य विवेक, तर्क और संदेह की भावना का विकास था, पर अब यह केवल स्मृति और दोहराव पर आधारित हो गया है। मीडिया में टॉपर बच्चों के साक्षात्कार इस मानसिकता को और पुष्ट करते हैं, जहां दिन में 16 घंटे पढ़ना, दस साल के पेपर रटना और कई-कई किताबें घोंटना ही सफलता का मंत्र बताया जाता है। यह विचारणीय है कि क्या वास्तव में यही शिक्षा है? इस समस्या का समाधान केवल परीक्षा प्रणाली बदल देने से नहीं होगा। जब तक समाज की सोच नहीं बदलेगी, तब तक शिक्षा का यह विकृत रूप बना रहेगा। जब तक अभिभावक अंक को ही सफलता की कसौटी मानते रहेंगे, स्कूलों और शिक्षकों की प्राथमिकता भी वहीं रहेगी। ज़रूरत है एक नई शैक्षणिक संस्कृति की जहां असफलता को अवसर माना जाए, बच्चों की विविधता को अपनाया जाए और उन्हें आत्मविश्लेषण और आत्म-अनुशासन के मार्ग पर प्रेरित किया जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इस दिशा में कुछ सकारात्मक पहलें की हैं, परंतु इन्हें जमीन पर लागू करना एक लंबी और कठिन प्रक्रिया है। अब समय है कि हम स्कूलों को रैंक उत्पादक मशीनों से बाहर निकालें। अभिभावकों को समझना होगा कि उनका बच्चा कोई अंकों का रिपोर्ट कार्ड नहीं, बल्कि एक सोचने, समझने और विकसित होने वाली मनुष्य-प्रवृत्ति है। शिक्षकों को भी पाठ्यक्रम पूरा कराने से आगे बढ़कर बच्चों में जिज्ञासा, कल्पनाशीलता और सामाजिक चेतना जगानी होगी। जब शिक्षा फिर से इंसान गढ़ने लगेगी, तभी यह राष्ट्र को सही अर्थों में शिक्षित बना पाएगी।

बिहार चुनावों में महिलाओं पर दांव के निहितार्थ

"साइकिल योजना, पोशाक योजना, कन्या उत्थान योजना, वृद्धावस्था पेंशन में वृद्धि, पिंक टॉयलेट, महिला पुलिस भर्ती में आरक्षण जैसे कई कदम इस सिलसिले में पहले ही उठाए जा चुके हैं। यह मान्यता कि बेटियां अब सिर्फ अपने घरों की शोभा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की भागीदार हैं, नीति निर्माण में स्पष्ट झलकने लगा है। यह न केवल बिहार की महिलाओं को उनके अधिकार का अनुभव कराएगा, बल्कि बेरोजगारी से जूझते प्रदेश में स्थानीय प्रतिभा के पलायन को भी रोकेगा। इस फैसले से खास तौर पर निम्न और मध्यमवर्गीय महिलाओं को फायदा होगा, जिनके लिए दूसरे शहरों में जाकर नौकरी करना एक बड़ा पारिवारिक और सामाजिक संकट बन जाता है।"

ललित गर्ग

बिहार में इस साल अक्टूबर-नवंबर में विधानसभा चुनाव होने हैं। चुनाव आयोग ने अभी तक मतदान की तारीखों की घोषणा नहीं की है, लेकिन राज्य में राजनीतिक सरगर्मी तेज हो गई है। विभिन्न राजनीतिक दल लुभावनी घोषणाएं कर रहे हैं, नये-नये मुद्दों को उछाला जा रहा है। गोपाल खेमका हत्याकांड हो या तंत्र मंत्र के चलते एक ही परिवार के पांच लोगों को जला देने की त्रासद घटना- नीतीश कुमार पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं। विधानसभा चुनाव से ठीक पहले मतदाता सूचियों के विशेष सघन पुनरीक्षण अभियान पर संदेह के सवालों के साथ मुखर विपक्षी दल इसके खिलाफ राजनीतिक लड़ाई के साथ ही कानून विकल्पों पर भी गंभीरता से विचार कर रहे हैं। इस बीच, एनडीए की सहयोगी लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के नेता चिराग पासवान ने एनडीए से दूरी बनाते हुए बिहार की सभी 243 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने का संकेत देकर सियासी परिदृश्य को दिलचस्प बना दिया है। इन्हीं परिदृश्यों के बीच बिहार सरकार ने सरकारी नौकरियों में स्थानीय महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने के फैसला लेकर चुनावी सरगर्मियों को एक नया मोड़ दे दिया है।

बिहार सरकार का यह निर्णय केवल एक चुनावी रणनीति भर नहीं, बल्कि एक गहरे सामाजिक परिवर्तन का संकेतक भी है। तय है कि इस बार के बिहार चुनाव के काफी दिलचस्प एवं हंगामेदार होंगे।

सरकारी नौकरियों में स्थानीय महिलाओं के लिए 35 प्रतिशत आरक्षण के गहरे निहितार्थ हैं। एनडीए की नीतिश सरकार ने स्थानीय महिलाओं को प्राथमिकता देने एवं उनके लिए सरकारी रोजगार उपलब्ध कराने के इस ब्रह्मास्त्र को दाग कर चुनावी समीकरण अपने पक्ष में कर लिये हैं। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसे "महिला सशक्तिकरण का राजनीतिक समाधान" बताया, क्योंकि राज्य की महिलाएँ कई चुनावों में निर्णायक भूमिका निभा रही हैं। पिछली लोकसभा चुनाव में महिलाओं की मतदान दर पुरुषों से कहीं अधिक रही, 59.45 प्रतिशत महिलाओं ने हिस्सा लिया जबकि पुरुष केवल 53 प्रतिशत मतदान करने पहुंचे। यह आंकड़ा दिखाता है कि चुनावी जीत में महिला मतदाता कितनी निर्णायक हो सकते हैं, साफ है, सत्ता की चाबी वहां महिलाओं ने अपने हाथों में ले ली है और वे धार्मिक व जातिगत आग्रहों से अधिक लैंगिक हितों से प्रेरित हैं। बिहार उन शुरुआती राज्यों में एक है, जिसने पंचायत और स्थानीय निकायों में आधी आबादी के लिए पचास फीसदी सीटें आरक्षित की हैं। इस कदम ने यहां की स्त्रियों में जबर्दस्त राजनीतिक जागरूकता पैदा की है। चुनावों की दशा एवं दिशा बदलने में महत्वपूर्ण एवं निर्णायक किरदार निभाने के कारण ही हरेक राजनीतिक दल महिला वर्ग को आकर्षित करने में जुट गया है। राजद-कांग्रेस-वाम दलों का महागठबंधन 'माई-बहिन मान योजना' के तहत महिलाओं को प्रतिमाह 2,500 रुपये देने का वायदा कर चुका है, तो राजद नेता तेजस्वी यादव बेरोजगारी और डोमिसाइल के मुद्दे को जोर-शोर से उठा रहे हैं। ऐसे में, नीतीश सरकार के इस नीतिगत दांव को समझा जा सकता है। जातिगत और स्थानीय समीकरण भुनाने के लिए निश्चित ही यह एक संगठित चाल है, जहां जाति और आवासीयता दोनों को आधार बनाया गया। यह सर्वविदित तथ्य है कि भारत में शैक्षिक क्षेत्र में लैंगिक खाई लगातार सिमट रही है। बिहार की बेटियां देश के अनेक महानगरों में अपनी योग्यता और मेहनत के दम पर पहचान बना चुकी हैं। सूचना क्रांति, बढ़ती अपेक्षाओं और सामंती बंधनों के ढीले पड़ते जाने के कारण अब ग्रामीण बिहार की बेटियां भी ऊंचे सपने संजो रही हैं। हाल ही में बिहार में शिक्षकों की नियुक्ति के दौरान यह देखा गया कि देश के विभिन्न प्रदेशों की योग्य लड़कियां इंटरव्यू देने आईं, जिनमें से अनेक ने सफलता प्राप्त की और अब बिहार के सरकारी स्कूलों में अध्यापन कर रही हैं। निस्संदेह, यह एक सैद्धांतिक रूप से प्रगतिशील और समावेशी समाज का प्रतीक है, जहाँ महिलाएं सीमाओं से परे जाकर अपनी पहचान बना रही हैं। लेकिन व्यावहारिक धरातल पर देखें, तो महिला सुरक्षा, सामाजिक असमानता, आवास व पारिवारिक बाधाएं, और प्रवास की मजबूरियाँ अब भी मौजूद हैं। ऐसे में यदि सरकारें योग्य महिलाओं को उनके घर के आस-पास ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराएं, तो यह न केवल महिला सशक्तिकरण की दिशा में सार्थक कदम होगा, बल्कि सामाजिक संरचना में स्थिरता और पारिवारिक सहूलियत का भी कारण बनेगा। यही कारण है कि नीतीश कुमार सरकार महिला मतदाताओं को लुभाने के लिए एक के बाद एक योजनाएं ला रही है। साइकिल योजना, पोशाक योजना, कन्या उत्थान योजना, वृद्धावस्था पेंशन में वृद्धि, पिंक टॉयलेट, महिला पुलिस भर्ती में आरक्षण जैसे कई कदम इस सिलसिले में पहले ही उठाए जा चुके हैं। यह मान्यता कि बेटियां अब सिर्फ अपने घरों की शोभा नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की भागीदार हैं, नीति निर्माण में स्पष्ट झलकने लगा है। यह न केवल बिहार की महिलाओं को उनके अधिकार का अनुभव कराएगा, बल्कि बेरोजगारी से जूझते प्रदेश में स्थानीय प्रतिभा के पलायन को भी रोकेगा। इस फैसले से खास तौर पर निम्न और मध्यमवर्गीय महिलाओं को फायदा होगा, जिनके लिए दूसरे शहरों में जाकर नौकरी करना एक बड़ा पारिवारिक और सामाजिक संकट बन जाता है। घर के पास नौकरी मिलने से न केवल सुरक्षा की भावना बढ़ेगी, बल्कि समाज में महिलाओं की स्थायी उपस्थिति और भूमिका भी मजबूत होगी। हालांकि इस फैसले को लेकर विपक्षी दलों की मिश्रित प्रतिक्रिया सामने आई है।

भारतीय संस्कारों की सरिता, महान परंपरा

किशन सनमुखदास भावनानीं

वैश्विक स्तरपर आज भारतीय संस्कारों की सरिता, महान परंपरा, भारतीय सभ्यता, वैचारिक अधिष्ठान रूपी आवाज़ अब केवल भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं है, यह विश्व भर में फैल रहे हैं और पूरे विश्व को जोड़ रहे हैं इसका एहसास हमें अब होने लगा है, क्योंकि जब हमने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और टीवी चैनलों पर भारत के पीएम के अनेक विदेश दौरों में देखा कि किस तरह वहां पीढ़ियों से बसें भारतीय मूल के लोगों के दिल में उनके पुरखों द्वारा भारत से लाए लोकतांत्रिक मूल्यों, कर्तव्यों से संस्कारों की सरिता का प्रत्यक्ष प्रमाण दिखा जब वे भारतीय पीएम के प्रति इतनी उत्सुकता और अपनी पुरखों की मिट्टी से कोई उनके देश आता है तो उनके दिल के कोने से करोड़ों खुशियों के फव्वारे होते हैं यह हम देखते आ रहे हैं।

साथियों बात अगर हम भारतीय मूल के व्यक्ति की परिभाषा की करें तो यह ऐसा व्यक्ति जिसका कोई पूर्वज भारतीय नागरिक था और जो वर्तमान में अन्य देश की नागरिकता या राष्ट्रीयता धारण करता है/करती है। इन लोगों के पास उसी देश का पासपोर्ट होता है। चूंकि इन लोगों के पास विदेशी पासपोर्ट होता है। साथियों बात अगर हम भारतीय मूल के व्यक्तियों की गाथा की करें तो कल्पना चावला कमला हैरिस के काम और नाम तो हम जानते ही हैं इसके अलावा,अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष की मुख्य अर्थशास्त्री गीता गोपीनाथ और नासा के वैज्ञानिक कमलेश लुल्ला अमेरिकी स्वतंत्रता दिवस से पहले एक प्रतिष्ठित अमेरिकी फाउंडेशन की तरफ से सम्मानित किए गए उन 34 अप्रवासियों में से हैं, जिन्होंने अपने योगदान और कार्यों के माध्यम से अमेरिकी समाज और लोकतंत्र को समृद्ध और मजबूत किया है। गोपीनाथ और लुल्ला न्यूयॉर्क के कार्नेगी कॉरपोरेशन की तरफ से नामित '2021 ग्रेट इमिग्रेंट्स (महान प्रवासी) की लिस्ट में शामिल हैं।ये एक गैर सरकारी संगठन है।विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारतीय समुदाय का दबदबा कायम रखते हुए भारतीय मूल के छह किशोरों ने अमेरिका का प्रतिष्ठित डेविडसन फेलो स्कॉलरशिप हासिल कर ली है। सिंगापुर में भारतीय मूल के सीनियर सेल्स एग्जीक्यूटिव शक्तिबालन बालथंडौथम को अपने लीवर का एक हिस्सा एक साल की बच्ची को दान करने के लिए द स्ट्रेट्स टाइम्स सिंगापुरियन ऑफ द ईयर 2021 का पुरस्कार मिला है, जिससे वह पहले कभी नहीं मिले थे। अमेरिका में मिडिल स्कूल के छात्रों के लिए आयोजित होने वाली एक प्रमुख विज्ञान और इंजीनियरिंग प्रतियोगिता में भारतीय मूल के बच्चों ने शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। प्रतियोगिता के पांच विजेताओं में भारतीय मूल के चार बच्चे शामिल हैं, जिसमें 14 वर्षीय भारतीय मूल के लड़के ने प्रतियोगिता में शीर्ष पुरस्कार प्राप्त किया है।

साथियों बात अगर हम भारतीय संस्कृति की करें तो भारतीय संस्कृति व सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति व सभ्यता है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। जीने की कला हो, विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है।अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदिकाल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। पूरे विश्व में भारत अपनी संस्कृति और परंपरा के लिये प्रसिद्ध देश है। ये विभिन्न संस्कृति और परंपरा की भूमि है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है।

भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्व अच्छे शिष्टाचार, तहज़ीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएँ और मूल्य आदि हैं। अब जबकि हरेक की जीवन शैली आधुनिक हो रही है, भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने एक अनोखा देश, भारत बनाया है। अपनी खुद की संस्कृति और परंपरा का अनुसरण करने के द्वारा भारत में लोग शांतिपूर्ण तरीके से रहते हैं।

झारखंड में है भगवान शिव का ऐसा धाम जहां खुद वासुकी नाग ने की थी भोलेनाथ की आराधना

झारखंड में सावन का महीना काफी खास होता है. यहां भगवान शिव के कई प्राचीन मंदिर और ऐतिहासिक धार्मिक स्थल हैं, जिनका महत्व पवित्र श्रावण मास में बढ़ जाता है. झारखंड के देवघर-दुमका राज्य मार्ग पर स्थित बासुकीनाथ धाम में सावन के दौरान श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है. हजारों और लाखों की संख्या में भक्त बाबा के दर्शन करने बासुकीनाथ मंदिर आते हैं. यह राज्य के प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों की लिस्ट में भी शामिल है. इस लेख में आप पढ़ेंगे क्या है बासुकीनाथ मंदिर का वासुकी नाग से संबंध और सावन में मंदिर का महत्व क्यों बढ़ जाता है।

बैद्यनाथ धाम से गहरा नाता

बासुकीनाथ धाम हिंदू धर्म के लोगों का एक पवित्र धार्मिक स्थल है, जहां लोग तीर्थ करने आते हैं। यह प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। बासुकीनाथ धाम की गिनती वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध शैव-स्थल के रूप में की जाती है. सावन का महीना भगवान शिव का महीना है। ऐसे में पवित्र श्रावण मास में बासुकीनाथ धाम में भगवान शिव की विशेष आराधना की जाती है। सावन में बैद्यनाथ धाम की ही तरह बासुकीनाथ धाम का भी महत्व बढ़ जाता है। बाबा धाम आने वाले प्रत्येक श्रद्धालु बासुकीनाथ धाम में पूजा करने अवश्य आते हैं। इसके पीछे एक पौराणिक मान्यता है, जिसके अनुसार बासुकीनाथ में पूजा किये बगैर बैद्यनाथ धाम में की गयी पूजा अधूरी रह जाती है।

श्रावणी मेला का होता है आयोजन

ऐसे में साहिबगंज के अजगैवीनाथ से जल भरकर पैदल कांवड़ यात्रा करने वाले श्रद्धालु बैद्यनाथ धाम में स्थित ज्योतिर्लिंग पर जल चढ़ाने के बाद बासुकीनाथ धाम आते हैं. यहां वे भोलेनाथ की पूजा-अर्चना करते हैं. इसी के बाद उनकी पूजा-तपस्या पूरी होती है. सावन के शुभ अवसर पर बासुकीनाथ धाम में विशेष श्रावणी मेले का आयोजन भी किया जाता है. बासुकीनाथ धाम मंदिर का इतिहास और संस्कृति हजारों साल पुराना और समृद्ध है. यह मंदिर भारतीय पारंपरिक शैली में बनी एक उत्कृष्ट संरचना है.

समुद्र मंथन से भी जुड़ा है किस्सा

बासुकीनाथ मंदिर का संबंध समुद्र मंथन के काल से भी जुड़ा हुआ है. ऐसा कहा जाता है कि समुद्र मंथन के दौरान वासुकी नाग को रस्सी के तरह उपयोग किया गया था. बासुकीनाथ धाम में समुद्र मंथन से पहले वासुकी नाग ने भगवान शिव की पूजा-अर्चना की थी. इसी वजह से इस स्थान का नाम बासुकीनाथ पड़ गया. हालांकि, बासुकीनाथ धाम को लेकर कई पौराणिक कहानियां प्रचलित हैं.

इस जगह पर रावण ने अपने एक मुक्के से धरती के अंदर से निकाला था पानी

देवघरः झारखंड का देवघर जिला धार्मिक रूप से काफी महत्वपूर्ण है. यहां का बाबा धाम द्वादश ज्योतिर्लिंग में से एक है. बाबा बैद्यनाथ धाम मंदिर पूरे देश के साथ-साथ विश्व स्तर पर भी प्रख्यात है. लेकिन मंदिर के साथ बैधनाथ धाम के आसपास के कई धार्मिक स्थल हैं. जिसका अपना विशेष महत्व है और वहां पर दर्शन करने के बाद ही भक्तों का बैद्यनाथ धाम के ज्योतिर्लिंग पर जलाभिषेक करना पूर्ण हो पता है.

ऐसे ही पौराणिक धार्मिक स्थल में शुमार है देवघर का शिवगंगा धाम. शिवगंगा एक छोटा सा तालाब है. जिसमें स्नान करने के बाद लोग भगवान भोलेनाथ पर जलाभिषेक करते हैं. इसके पीछे क्या महत्व है. इसके पीछे की पौराणिक कथाएं जुड़ी हैं और इसका धार्मिक महत्व भी काफी है.

पौराणिक कथाओं के अनुसार यह माना जाता है कि रावण जब भगवान भोलेनाथ को कैलाश पर्वत से लेकर लंका की ओर जा रहे थे तो रास्ते में उन्हें लघुशंका लगी. इससे निवृत होने के बाद वह हाथ धोना चाहते थे लेकिन आसपास उन्हें पानी कहीं नहीं मिला. जिसके बाद उन्होंने अपनी मुट्ठी भींचकर जमीन पर जोर से प्रहार किया और धरती से पानी निकलने लगी. धीरे-धीरे इसका तालाब बन गया और तभी से इसे शिवगंगा के रूप में जाना जाता है. पौराणिक कथाओं के अनुसार यह भी माना जाता है कि शिवगंगा में स्नान करने से लोगों के कई कष्ट समाप्त हो जाते हैं.

शिवगंगा के महत्व को लेकर मंदिर के वरिष्ठ पुजारी राजेंद्र पंडा बताते हैं कि जो भी श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ पर जलाभिषेक करने आते हैं. वह निश्चित रूप से शिवगंगा में स्नान जरूर करते हैं. शिवगंगा के बारे में कई मान्यताएं हैं. वहीं मंदिर के वरिष्ठ पुजारी बाबा झलक बताते हैं कि शिवगंगा को सप्त कुंड भी कहा जाता है. जब रावण कैलाश पर्वत से भगवान भोलेनाथ के शिवलिंग को लेकर लंका जा रहे थे तो उन्हें लघुशंका लगी और लघुशंका के बाद हाथ पैर धोने के लिए उन्होंने अपने मुट्ठी के प्रहार से जमीन के अंदर से जल निकाला. जिसे पाताल गंगा के रूप में भी जाना जाता है. यह भी माना जाता है कि यह कुंड कभी नहीं सूखता है और यहां पर जमीन के अंदर से हमेशा पानी निकलता ही रहता है.

हालांकि पौराणिक कथाओं के अनुसार यह माना जाता है कि रावण भगवान भोलेनाथ के शिवलिंग को लंका तक ले जाने में असफल रहे थे क्योंकि बीच में ही भगवान विष्णु ने चरवाहे का रूप धारण कर रावण को शिवलिंग धरती पर रखने पर बाध्य कर दिया था. जिसके बाद रावण ने भगवान भोलेनाथ को देवघर में ही स्थापित कर दिया. इसके बाद से भगवान भोलेनाथ के ज्योतिर्लिंग के साथ-साथ शिवगंगा का भी अपना महत्व बना हुआ है.

वहीं शिवगंगा में स्नान कर पूजा करने पहुंचे पटना से आए श्रद्धालु पिंटू यादव ने कहा कि शिवगंगा का बहुत पुराना धार्मिक महत्व है. लेकिन जिला प्रशासन और मंदिर प्रबंधन के उदासीन रवैया की वजह से शिवगंगा की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है. श्रद्धालु प्रियंका कुमारी ने कहा कि शिवगंगा में स्नान करने के बाद ही वे लोग पूजा करने पहुंचे हैं. लेकिन शिवगंगा में पानी कम रहने और गंदगी होने के कारण कहीं ना कहीं श्रद्धालुओं को दिक्कत हो रही है.

बाबा नगरी की सांस्कृतिक धरोहर

झारखंड के देवघर जिले को बाबा नगरी के नाम से जाना जाता है. यहां स्थित भगवान शिव का पवित्र धाम, बैद्यनाथ धाम विश्व विख्यात है. इसी बाबा नगरी की लोककथाओं को जीवंत करती संताल परगना की एक आकर्षक कला है, बैद्यनाथ चित्रकला. जो झारखंड की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है. इस अनूठी कला के जनक हैं, झारखंड के प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट और चित्रकार नरेंद्र पंजियारा, जिन्होंने अपनी कला में पौराणिक कथाओं और आस्था के रंगों में समेटा है. **कल के इस लेख में आप बैद्यनाथ कथा से जुड़े रोचक और अनसुने किस्सों के बारे में जानेंगे।**

श्री श्रीरविशंकर की बायोपिक 'व्हाइट' में नजर आएंगे विक्रांत

'12वीं फेल' से दर्शकों के दिलों में खास जगह बनाने वाले अभिनेता विक्रांत मैसी अब एक नई फिल्म 'आंखों की गुस्ताखियां' में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म में वह शनाया कपूर के साथ स्क्रीन शेयर करते दिखाई देंगे। विक्रांत अपनी अगली फिल्म की तैयारी में जुट गए है, जो आध्यात्मिक गुरु श्री श्रीरविशंकर की बायोपिक है। हाल ही में विक्रांत की श्री श्री रविशंकर के साथ एक तस्वीर भी सोशल मीडिया पर वायरल हुई थी, जिससे कयास लगाए जा रहे थे कि वह इस बायोपिक से जुड़ चुके हैं। अब फिल्म को लेकर कुछ नए अपडेट्स सामने आए हैं, जिनका फैन्स बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। विक्रांत का इस किरदार में नजर आना न केवल उनके करियर के लिए एक बड़ा कदम साबित हो सकता है, बल्कि दर्शकों के लिए भी एक अलग और प्रेरणादायक अनुभव होगा।

विक्रांत मैसी जल्द ही अपनी अगली फिल्म 'व्हाइट' की शूटिंग शुरू करने वाले हैं। यह फिल्म आध्यात्मिक गुरु और आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्रीरविशंकर के जीवन पर आधारित है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, 'व्हाइट' की लगभग 90 प्रतिशत शूटिंग दक्षिण अमेरिका के कोलंबिया में की जाएगी। दरअसल, यह फिल्म सिर्फ एक बायोपिक नहीं है, बल्कि कोलंबिया में 52 सालों से चले आ रहे सशस्त्र संघर्ष और उसमें श्री श्रीरविशंकर की शांति-दूत की भूमिका को भी दर्शाएगी। चूंकि ये घटनाएं मुख्य रूप से कोलंबिया में घटित हुई थीं, इसलिए मेकर्स ने फैसला किया है कि फिल्म की शूटिंग भी वहीं की जाएगी, ताकि इसकी वास्तविकता और भावनात्मक गहराई बरकरार रह सके। फिल्म का यह अंतरराष्ट्रीय पहलू दर्शकों के लिए इसे और भी खास बना देता है।

विक्रांत मैसी इन दिनों अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म 'व्हाइट' को लेकर पूरी तरह समर्पित हैं। हाल ही में वह बेंगलुरु स्थित आर्ट ऑफ़ लिविंग आश्रम पहुंचे, जहां उन्होंने श्री श्रीरविशंकर द्वारा शुरू किए गए हैप्पीनेस प्रोग्राम में हिस्सा लिया। इस दौरान विक्रांत ने ध्यान, प्राणायाम और योग जैसे अभ्यासों के साथ-साथ रविशंकर की जीवनशैली और विचारधारा को गहराई से समझने की कोशिश की। उनका उद्देश्य है कि फिल्म में निभाया गया किरदार पूरी तरह वास्तविक लगे। विक्रांत ने अपने लुक में भी बदलाव शुरू कर दिए हैं, उन्होंने बाल और दाढ़ी बढ़ा ली है और साथ ही श्री श्री रविशंकर के बोलने, मुस्कराने और चलने के तरीके को भी आत्मसात करना शुरू कर दिया है। वह नियमित रूप से उनके प्रवचनों के वीडियो भी देख रहे हैं ताकि किरदार की आत्मा को पकड़ सकें। बताया जा रहा है कि विक्रांत जल्द ही कोलंबिया रवाना होंगे, जहां फिल्म 'व्हाइट' की शूटिंग शुरू होने वाली है।

अजय देवगन की 'सन ऑफ सरदार 2' का ट्रेलर रिलीज

आने वाले समय में कई बड़ी फिल्मों के सीक्वल दर्शकों का दिल जीतने आ रहे हैं। इन्हीं में से एक है- 'सन ऑफ सरदार 2', जिसकी रिलीज़ का फैंस लंबे समय से इंतज़ार कर रहे थे। फिल्म में एक बार फिर अजय देवगन मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। इससे पहले वह अपनी सुपरहिट फिल्म 'रेड' के सीक्वल 'रेड 2' के जरिए बॉक्स ऑफिस पर ज़बरदस्त वापसी कर चुके हैं। अब अजय देवगन अपनी बहुप्रतीक्षित फिल्म 'सन ऑफ सरदार 2' के साथ एक बार फिर बड़े पर्दे पर धमाका करने के लिए तैयार हैं। हाल ही में फिल्म का ट्रेलर रिलीज़ कर दिया गया है, जिसे दर्शकों से शानदार प्रतिक्रिया मिल रही है।

जब अजय देवगन साल 2012 में 'सन ऑफ सरदार' लेकर आए थे तो उन्होंने अपनी दमदार कॉमिक टाइमिंग से दर्शकों को हंसी से लोटपोट कर दिया था। अब एक बार फिर वह जस्सी रंधावा के किरदार में शानदार वापसी कर चुके हैं।

हाल ही में रिलीज़ हुए 'सन ऑफ सरदार 2' के ट्रेलर में अजय ने जबरदस्त कॉमेडी के साथ-साथ धमाकेदार एक्शन का भी तड़का लगाया है। ट्रेलर देखकर साफ है कि यह सीक्वल पहले भाग से भी ज्यादा धमाल मचाने वाला है। वहीं, मृणाल ठाकुर और नीरू बाजवा की मौजूदगी ने फिल्म को लेकर दर्शकों का उत्साह और भी बढ़ा दिया है। अब देखना होगा कि यह फिल्म थिएटर्स में कितनी धूम मचाती है।

'धड़क-2' में इमोशन और प्यार की नई कहानी

फिल्म 'धड़क-2' पिछले कुछ महीनों से लगातार सुर्खियों में बनी हुई है। फिल्म में सिद्धांत चतुर्वेदी और तृप्ति डिमरी जैसे कलाकार अहम भूमिकाओं में नजर आ रहे हैं। हाल ही में रिलीज़ हुए 'धड़क 2' के ट्रेलर ने दर्शकों के बीच सनसनी मचा दी है। करीब 3 मिनट लंबे इस ट्रेलर में जाति व्यवस्था की भयावहता को बेहद प्रभावशाली और भावनात्मक ढंग से दिखाया गया है। ट्रेलर न केवल दिल को झकझोरता है, बल्कि सोचने पर भी मजबूर करता है कि क्या सच में आज भी समाज इस सोच से बाहर निकल पाया है?

फिल्म 'धड़क 2' का ट्रेलरः फिल्म 'धड़क-2' में देखने को मिलता है कि तृप्ति और सिद्धांत एक ही कॉलेज में पढ़ते हैं। कॉलेज में सिद्धांत का मजाक उड़ाया जाता है लेकिन तृप्ति उसका साथ देती है। दोनों में दोस्ती हो जाती है। दोस्ती प्यार में बदल जाती है। लेकिन इस प्यार पर जाति का साया मंडराता है। जैसे ही सिद्धांत और तृप्ति के अंतरजातीय प्रेम संबंध का पता चलता है, दोनों को काफी कुछ सहना पड़ता है। इतना ही नहीं, सिद्धांत के परिवार को भी प्रताड़ना और मारपीट सहनी पड़ती है। ट्रेलर का आखिरी सीन दिल दहला देने वाला है। सिद्धांत को जंजीरों से रेलवे ट्रैक से बांध दिया गया है। इसमें सामने से एक ट्रेन आती हुई दिखाई देती है।

'धड़क-2' रिलीज डेटः 'धड़क-2' अगले माह एक अगस्त को रिलीज़ होने वाली है। धर्मा प्रोडक्शन्स और करण जौहर ने इस फिल्म को प्रोड्यूस किया है। फिल्म का ट्रेलर कमाल का है और सभी को उम्मीद है कि फिल्म भी अच्छी होगी। तृप्ति और सिद्धांत इस फिल्म में पहली बार साथ काम कर रहे हैं। 'धड़क' मराठी ब्लॉकबस्टर 'सैराट' का रीमेक थी। 'धड़क-2' में सिद्धार्थ और तृप्ति के साथ-साथ कई और लोकप्रिय कलाकार भी नज़र आएंगे।

राहुल बोले-महाराष्ट्र की तरह बिहार में वोट चुराने की कोशिशः इलेक्शन कमीशन भाजपा का काम कर रहा; कहा- अडाणी ओडिशा सरकार चला रहे

भुवनेश्वरः कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को ओडिशा में कहा- महाराष्ट्र की तरह बिहार में वोट चुराने की कोशिश की जा रही है। इसके लिए इलेक्शन कमीशन ने नई साजिश शुरू की है। वह भाजपा के हिस्से का काम कर रहा है। अपना काम नहीं कर रहा है। राहुल ने आगे कहा- महाराष्ट्र में लोकसभा और विधानसभा के बीच में 1 करोड़ नए वोटर आ गए। आज तक पता नहीं चल पाया कि ये वोटर्स कहां से आए। हमने इलेक्शन कमीशन से कई बार कहा कि आप हमें वोटर लिस्ट, वीडियोग्राफी दीजिए। उन्होंने नहीं दिया। हम इलेक्शन कमीशन और भाजपा को बिहार का चुनाव चोरी नहीं करने देंगे।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ओडिशा में भाजपा सरकार बनने के बाद पहली बार दौरे पर पहुंचे हैं। इस दौरान उन्होंने भुवनेश्वर में आयोजित होने वाली 'संविधान बचाओ समावेश' सभा को संबोधित किया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, महासचिव (संगठन) के. सी. वेणुगोपाल भी उनके साथ मौजूद रहे।

राहुल गांधी के संबोधन की 3 बड़ी बातें

ओडिशा सरकार अडाणी चला रहेः अडाणी ओडिशा सरकार चलाते हैं। अडाणी नरेंद्र मोदी को चलाते हैं। जब ओडिशा में जगन्नाथ यात्रा निकाली जाती है, तो लाखों लोग इसे देखते हैं। फिर एक नाटक होता है कि अडाणी और उनके परिवार के लिए रथ रोक दिए जाते हैं। इससे आपको ओडिशा सरकार के बारे में सब कुछ समझ में आ जाएगा। यह ओडिशा सरकार नहीं है, यह अडाणी जैसे 5-6 अरबपतियों की सरकार है। इसका लक्ष्य आपकी जमीन, जंगल और भविष्य को चुराना है।

भाजपा सरकार गरीबों को पैरा चुरा रहीः सरकार ओडिशा की गरीब जनता का पैसा चुराने का काम करती है। एक तरफ ओडिशा की गरीब जनता दलित, आदिवासी, कमजोर, किसान और मजदूर है और दूसरी ओर 5-6 अरबपति और भाजपा सरकार। इस लड़ाई में कांग्रेस पार्टी का कार्यकर्ता ही ओडिशा की जनता के साथ मिलकर जीत सकता है। भाजपा पूरे देश में संविधान पर आक्रमण कर रही है।

कंपनियों को पैसा दिया जा रहाः ओडिशा में ये(भाजपा) 5-6 बड़ी कंपनियों को आपका सारा धन दे रहे हैं। जल, जंगल और जमीन आदिवासियों की है और आदिवासियों की ही रहेगी। आदिवासियों को बिना पूछे जमीन से हटा दिया जाता है। ये सभी चीजें उनकी है।

चरण दास बोले- राहुल की रैली रोकने के लिए हड़ताल की गई

ओडिशा कांग्रेस अध्यक्ष भक्त चरण दास ने भक्त चरण दास ने कहा, "राज्य सरकार ड्राइवर यूनियन के जरिए राहुल गांधी की रैली को असफल करने की कोशिश कर रही है। लाखों लोग कार्यक्रम में आना चाहते हैं, लेकिन परिवहन हड़ताल की वजह से उन्हें दिक्कत हो रही है।'

दास ने कहा- हम ड्राइवरों की मांगों का समर्थन करते हैं, लेकिन उनसे अपील करते हैं कि वे आज के दिन के लिए हड़ताल रोक दें। अगर वे हमारे कार्यक्रम में अड़चन डालेंगे, तो जब उनके नेता राज्य में आएंगे, हम भी उसी तरह जवाब देंगे।

27 मार्च-कांग्रेस ने 14 विधायकों के निलंबन का विरोध किया था

ओडिशा विधानसभा का घेराव करने पहुंचे कांग्रेस नेताओं पर 27 मार्च को पुलिस ने लाठियां बरसाईं और वाटर कैनन चलाईं। दर्जनों कार्यकर्ता घायल हो गए। कांग्रेस 14 MLA के निलंबन का विरोध कर रही थी। 25 मार्च को कांग्रेस के 12 विधायक निलंबित कर दिए गए थे। इसके बावजूद विधायक प्रदर्शन करते रहे और पूरी रात सदन में बिताई। विधानसभा के बाहर कांग्रेस कार्यकर्ता प्रदर्शन करते रहे।

अगले दिन यानी 26 मार्च को कांग्रेस कार्यकर्ता और निलंबित विधायक विधानसभा के बाहर प्रदर्शन करते रहे। वे विधानसभा की बढ़े तो पुलिस ने उन्हें रोक दिया। इसके बाद जमकर धक्का-मुक्की हुई। सदन के भीतर कांग्रेस के बचे हुए दो विधायकों तारा प्रसाद बाहिनीपति और रमेश जेना ने इस मुद्दे पर प्रदर्शन किया। दोनों सदन की वेल में आकर प्रदर्शन कर रहे थे इसलिए उन्हें भी निलंबित कर दिया गया था।

सदन के भीतर कांग्रेस के बचे हुए दो विधायकों तारा प्रसाद बाहिनीपति और रमेश जेना ने इस मुद्दे पर प्रदर्शन किया। दोनों सदन की वेल में आकर प्रदर्शन कर रहे थे इसलिए उन्हें भी निलंबित कर दिया गया था।

भाजपा ने 24 साल 99 दिन का पटनायक राज खत्म किया

जून, 2024 में लोकसभा के साथ हुए विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा ने पहली बार ओडिशा में सरकार बनाई। इससे पहले नवीन पटनायक 5 बार यानी 24 साल 99 दिन तक ओडिशा के सीएम रहे थे। वे 5 मार्च 2000 को पहली बार मुख्यमंत्री बने थे। अगर इस बार उनकी सरकार बनती तो वे देश में सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री होने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लेते। अभी ये रिकॉर्ड सिक्किम के पवन चामलिंग के नाम है। वे 24 साल 165 दिन तक इस पद पर रहे।

अटल बिहारी वाजपेयी के समय भाजपा और बीजेडी का केंद्र और राज्य में गठबंधन था। 2000 और 2004 में बीजेडी-बीजेपी गठबंधन की सरकार थी। 2009 विधानसभा चुनाव से पहले बीजेडी ने भाजपा सेगठबंधन तोड़ लिया था।

केरल में खड़ा ब्रिटिश एफ-35 विमान, अगले हफ्ते भरेगा उड़ान!

-ब्रिटिश इंजीनियरों की टीम हाइड्रोलिक खराबी को ठीक करने में जुटी

नई दिल्ली,(ईएमएस)। पिछले 27 दिनों से केरल के तिरुवनंतपुरम अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर फंसा ब्रिटेन का एफ-35बी लड़ाकू विमान अगले हफ्ते वापस जा सकता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अगले सप्ताह तक इसकी मरम्मत पूरी हो सकती है। एक भारतीय अधिकारी ने बताया कि ब्रिटिश इंजीनियरों की एक टीम हाइड्रोलिक खराबी को ठीक कर रही है। उम्मीद है कि कुछ दिनों में विमान उड़ान भर सकेगा। बता दें केरल में फंसा ब्रिटेन का यह फाइटर जेट पांचवीं पीढ़ी का विमान है। इसकी कीमत 115 मिलियन यूएसडी से भी ज्यादा है। 14 जून से यह विमान केरल के एयरपोर्ट पर ही खड़ा है। खराब मौसम और कम ईंधन के कारण इसे रॉयल नेवी के विमानवाहक पोत एचएमएस प्रिंस ऑफ वेल्स से हटा दिया गया था। यह फाइटर प्लेन अरब सागर के ऊपर एक अभ्यास कर रहा था, तभी उसे केरल में आपातकालीन लैंडिंग करनी पड़ी थी। फाइट जेट के अचानक रुकने से कई तरह के मीम और मजाक बनने लगे थे। केरल के पर्यटन विभाग ने भी इस पर प्रतिक्रिया दी थी। एक एआई-जनरेटेड पोस्ट में विमान नारियल के पेड़ों से घिरा हुआ दिखाया गया था। इस मीम में लिखा था कि केरल एक शानदार जगह है, मैं यहां से जाना नहीं चाहता। राज्य के पर्यटन विभाग के प्रमुख ने कहा था कि यह ब्रिटेन के लोगों को धन्यवाद कहने का एक तरीका था। दरअसल, केरल में सबसे ज्यादा ब्रिटिश पर्यटक ही आते हैं। एक और कार्टून में विमान को स्थानीय स्नैक्स खाते हुए दिखाया गया था।

मोहन भागवत का बयान आरएसएस और बीजेपी में विरोधाभास के दे रहा संकेत

-शिवसेना (यूबीटी) सांसद ने संघ प्रमुख के 75 साल के बयान पर दी प्रतिक्रिया

नई दिल्ली,(ईएमएस)। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के 75 साल की उम्र को लेकर दिए बयान पर शिवसेना (यूबीटी) सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि मोहन भागवत के बयान से कहीं न कहीं आरएसएस और बीजेपी में विरोधाभास देखने को मिल रहा है। प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि 2014 में जब बीजेपी की सरकार बनी थी, तो पीएम मोदी ने 75 साल से ज्यादा उम्र के अपने नेताओं को मार्गदर्शक मंडली में रखा था, जिनमें लालकृष्ण आडवाणी और मुरली मनोहर जोशी शामिल थे। बीजेपीप के इस फैसले को सभी ने सराहा था। अब भागवत याद दिला रहे हैं कि जो फैसला दूसरों पर लागू होता है, वो खुद पर भी लागू होना चाहिए। प्रियंका ने कहा कि मोहन भागवत के शब्द अपने आप में सब कुछ कह रहे हैं। यह भी जानकारी है कि मोहन भागवत खुद सितंबर 2025 में 75 साल के हो रहे हैं। दूसरी और देश के पीएम मोदी भी 75 साल के होने वाले हैं। प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि मोहन भागवत का यह संदेश विरोधाभास की स्थिति को खुलकर सामने लेकर आता है। बिहार में विशेष मतदाता पुनरीक्षण मामले में सुप्रीम कोर्ट में हुई सुनवाई पर प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि कोर्ट का फैसला सभी को मानना होगा, लेकिन लोगों के मन में एक सवाल उठ रहा है कि महाराष्ट्र में पर्दे के पीछे क्या हुआ? मतदाताओं का वोटर लिस्ट से नाम हटाना, फिर नए मतदाताओं का जुड़ना और विधानसभा और लोकसभा चुनाव के बीच इतने कम समय में बड़ी संख्या में मतदाताओं का जुड़ना। जिस तरह से बिहार में चुनाव से पांच महीने पहले वोटर सूची को लेकर कदम उठाया गया है, उसी तरह महाराष्ट्र में भी ऐसा किया गया था।

भारत के 3119 करोड़ रुपए कर्ज को लेकर पाकिस्तान हुआ परेशान

-जम्मू-कश्मीर में बन रहे क्वार बांध पर होगा खर्च, बहाव पर पड़ेगा फर्क

नई दिल्ली,(ईएमएस)। भारत सरकार ने 3119 करोड़ रुपए कर्ज लेने की प्रक्रिया तेज कर दी है। केंद्र के इस कदम से पाकिस्तान चिंतित हो गया है क्योंकि यह राशि जम्मू-कश्मीर में खर्च की जाएगी। किश्तवार जिले में चिनाब नदी पर बन रहे रणनीतिक रूप से क्वार बांध परियोजना को तेजी से पूरा करने के लिए यह कर्ज लेने की प्रक्रिया शुरू की गई है। यह एक ग्रीनफील्ड स्टोरेज वाली जलविद्युत परियोजना है, जिसका पानी के बहाव पर प्रभाव पड़ सकता है। इस बांध से 540 मेगावाट बिजली की आपूर्ति पूरी की जाएगी। यह करीब 109 मीटर ऊंचा कंक्रीट ग्रेविटी बांध है। इसे पूरा करने में 4,526 करोड़ रुपए खर्च होंगे।
जनवरी 2024 में चिनाब नदी के प्रवाह को मोड़ने का कार्य पूरा कर लिया गया है। यह किसी भी जलविद्युत परियोजना में एक उपलब्धि है। इसके अलावा 609 मीटर लंबी मुख्य सुरंग की खुदाई भी शुरू कर दी गई है। अब बांध के मुख्य निर्माण कार्य तेजी से चल रहे हैं। पीएम मोदी ने 24 अप्रैल 2022 को इस परियोजना की आधारशिला रखी थी। सरकार का उद्देश्य है कि यह परियोजना 2027 तक पूरी हो ताकि जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में बिजली की उपलब्धता बढ़े और औद्योगिक विकास को बल मिले।

बंगाल की खाड़ी में छिपा था चीन का रिसर्च जहाज, फ्रांसीसी ने किया ट्रैक

-सैटेलाइट कंपनी ने कहा- नौसैनिक गतिविधियों वालों इलाके के पास था एक्टिव

नई दिल्ली,(ईएमएस)। भारत-चीन रिश्तों में सुधार को लेकर फ्रांसीसी सैटेलाइट कंपनी ने कहा है कि बंगाल की खाड़ी में एक चीनी रिसर्च जहाज छुपा हुआ था। यह जहाज भारतीय जल सीमा के पास कई दिनों तक सक्रिय रहा। कंपनी के मुताबिक जहाज अपनी पहचान छुपाने के लिए ऑटोमेटिक आईडेंटिफिकेशन सिस्टम को बंद कर देता था। ऑटोमेटिक आईडेंटिफिकेशन सिस्टम एक ऐसा सिस्टम है जिससे जहाजों की पहचान और लोकेशन का पता चलता है।

मीडिया रिपोर्ट में फ्रेंच कंपनी ने कहा कि चीन का एक रिसर्च जहाज बंगाल की खाड़ी में भारतीय जल सीमा के पास कई दिनों तक एक्टिव था। कंपनी ने रेडियो फ्रीक्वेंसी के जरिए जहाजों को ट्रैक किया। कंपनी ने बंगाल की खाड़ी में 16 दिनों तक सर्वे किया। इस सर्वे में पता चला कि करीब 10 फीसदी जहाज बिना ऑटोमेटिक आईडेंटिफिकेशन सिस्टम के चल रहे थे। इससे सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है। ऐसा इसलिए क्योंकि इस क्षेत्र में चीन की गतिविधियां बढ़ रही हैं और बांग्लादेश के साथ उसके संबंध मजबूत हो रहे हैं।

रिपोर्ट में बताया गया है कि कई दिनों तक बंगाल की खाड़ी में जहाजों पर नजर रखी। इस दौरान उन्होंने 1,897 जहाजों को ट्रैक किया। इनमें से ज्यादातर जहाज एआईएस सिग्नल भेज रहे थे, लेकिन 9.6 फीसदी जहाजों में कोई ऑटोमेटिक आईडेंटिफिकेशन सिस्टम नहीं दिखाई दिया। इसका मतलब है कि वे अपनी स्थिति छुपाने की कोशिश कर रहे थे। रिपोर्ट में एक खास चीनी रिसर्च जहाज का भी जिक्र है। यह जहाज हाल ही में हुई नौसैनिक गतिविधियों वालों इलाके के पास ही एक्टिव था। यही नहीं ये बार-बार हिंद महासागर में भी देखा गया।

कंपनी का कहना है कि जब यह जहाज ऑटोमेटिक आईडेंटिफिकेशन सिस्टम नहीं दिखा रहा था, तब भी इसके रेडियो सिग्नल मिल रहे थे। इससे हमें इसकी गतिविधियों पर नजर रखने में मदद मिली। हमें शक है कि यह चीनी रिसर्च जहाज किसी खास मकसद से यहां मौजूद था। कंपनी का कहना है कि चीनी जहाज का मिशन समुद्र की गहराई का नक्शा बनाना, आसपास के माहौल का विश्लेषण करना और पनडुब्बियों के रास्तों की पहचान करना हो सकता है। इन रास्तों का इस्तेमाल सर्विलांस ऑपरेशन और एंटी सबमरीन वॉरफेयर की तैयारियों के लिए किया जा सकता है। भारतीय नौसेना और कोस्ट गार्ड भारतीय जल सीमा के आसपास की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखते हैं। उन्होंने पिछले कुछ सालों में चीनी रिसर्च जहाजों की लगातार मौजूदगी की जानकारी दी है। इस मामले में, चीनी जहाज पूर्वी तट से 120 नॉटिकल मील की दूरी पर अंतरराष्ट्रीय जल क्षेत्र में काम कर रहा था। हालांकि चीनी युद्धपोत और पनडुब्बियां हिंद महासागर में काम करती हैं, लेकिन नौसेना के अधिकारियों का मानना है कि चीन जल्द ही इस क्षेत्र में अपने एयरक्राफ्ट कैरियर भी तैनात कर सकता है।

स्टंटबाजी करते समय कार 300 फीट खाई में गिरी, बच गई युवक की जान

मुंबई,(ईएमएस)। स्टंटबाजी के मामले आए दिन सुनने और देखने को मिल रहे हैं। अब ऐसा ही स्टंटबाजी का मामला महाराष्ट्र के गुजरवाडी इलाके में स्थित प्रसिद्ध पर्यटक स्थल टेबल पॉइंट का है, जिसका वीडियो वायरल हो रहा है। जहां एक युवक कार से स्टंट करते नजर आ रहा है और स्टंट के दौरान युवक की कार का बैलेंस बिगड़ जाता है और कार करीब 300 फीट गहरी खाई में गिर गई। इस हादसे की सूचना मिलते ही आस-पास के लोग और पुलिस मौके पर पहुंची और गहरी खाई में गिरी कार से युवक को निकलने की कोशिश करने लगी। काफी देर की मशक्कत के बाद युवक को बाहर निकाला और तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इस हादसे के बाद स्थानीय लोगों ने प्रशासन पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाया है। लोगों का कहना है कि टेबल पॉइंट पर कोई सुरक्षा रेलिंग या सुरक्षा के इंतजाम नहीं है, जिसके चलते आए दिन इस तरह के हादसे होते हैं। पहले भी इस क्षेत्र में कई बार चेतावनी दी गई थी, लेकिन इसके बावजूद भी प्रशासन की ओर से कोई कदम नहीं उठाया गया है। बता दें टेबल पॉइंट सतारा जिले का एक लोकप्रिय टूरिस्ट प्लेस है, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए मशहूर है। यह जगह खासकर के युवाओं और टूरिस्ट के बीच लोकप्रिय है, जो ज्यादातर यहां पर रील्स बनाने आते हैं, लेकिन इस जगह पर सुरक्षा सुविधाओं की कमी है, जिसके चलते आए दिन घटनाएं होती हैं।

गुजरात महिसागर पुल हादसा- मरने वालों की संख्या 19 हुई:2 अब भी लापता, सर्च ऑपरेशन जारी

अहमदाबादः गुजरात के वडोदरा जिले में महिसागर नदी पर बने पुराने पुल के ढहने से मरने वालों की संख्या बढ़कर 19 हो गई है। शुक्रवार को एक घायल शख्स की अस्पताल में मौत हो गई। दो लोग अभी भी लापता हैं। एनडीआरएफ और एसडीआरएफ का सर्च ऑपरेशन जारी है। हादसे में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत हो गई है। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने पुल ढहने के सिलसिले में राज्य के सड़क एवं भवन विभाग के चार इंजीनियरों को निलंबित कर दिया है। शुरूआती जांच में पाया गया कि पुल की नींव और जोड़ कमजोर हो चुके थे, जिससे यह हादसा हुआ। जांच समिति 30 दिन में पूरी रिपोर्ट देगी। महिसागर नदी पर बना ब्रिज बुधवार सुबह टूट गया था। चलते ट्रैफिक के बीच पुल टूट जाने से दो ट्रक, दो कार और एक रिक्शा नदी में गिर गए थे। एक टैंकर टूटे सिरे पर फंस गया था।

45 साल पुराना यह ब्रिज दक्षिण गुजरात को सौराष्ट्र से जोड़ता था। इसके टूटने से भरूच, सूरत, नवसारी, तापी और वलसाड से सौराष्ट्र पहुंचना मुश्किल हो गया है। अब इसके लिए अहमदाबाद होकर जाना होगा।

2015 में पुल की बेयरिंग बदलनी पड़ी थी

गंभीरा पुल का निर्माण 1981-82 में उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम ने किया था। जानकारी के मुताबिक 2015 में भी गंभीरा पुल जर्जर पाया गया था। उस समय सरकार ने इसका निरीक्षण करवाया था और बेयरिंग बदलनी पड़ी थी। यह स्थिति इसलिए बनी थी, क्योंकि पुल के निर्माण में अच्छी सामग्री का इस्तेमाल नहीं किया गया था। हादसे के बाद स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और लोगों को रेस्क्यू किया। एक स्थानीय युवक ने बताया, 'हम सुबह से ही बचाव अभियान चला रहे हैं। अब तक 13 शव बरामद हुए हैं, जिनमें से एक बच्चा है और एक बच्चा लापता है। इस दौरान हमें प्रशासन और अधिकारियों से कोई मदद नहीं मिली है।'
इनका कहना है कि 45 साल पुराने इस पुल की मरम्मत के लिए प्रशासन को कई बार सूचित किया जा चुका है। प्रशासन की तरफ से कोई कार्रवाई न किए जाने के कारण आज यह हादसा हुआ है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि इस हादसे के लिए पूरी तरह से प्रशासन ही जिम्मेदार है।

प्रधानमंत्री ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर देश की भूमिका के लिए नए युग की शुरुआत की

-बीजेपी प्रवक्ता बोले- पीएम मोदी की यात्रा से देश ने अहम उपलब्धियां हासिल की

नई दिल्ली,(ईएमएस)। पीएम नरेंद्र मोदी के पांच देशों की यात्रा से लौटने पर बीजेपी ने कहा कि इस यात्रा से देश ने अहम उपलब्धियां हासिल की हैं। बीजेपी ने कहा कि इस यात्रा में ब्रिक्स में आतंकवाद के खिलाफ स्पष्ट सहमति बनी, महत्वपूर्ण और दुर्लभखनिज संसाधनों के लिए समझौतों पर हस्ताक्षर हुए और प्रवासी भारतीयों के साथ संबंध मजबूत हुए हैं।
बीजेपी प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने ब्रिक्स सदस्य देशों पर अडिशनल टैरिफ लगाने की अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की चेतावनी को ज्यादा तवज्जो नहीं दी और कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत अपने सैन्य, कूटनीतिक और व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि ब्रिक्स सदस्यों पर अडिशनल टैरिफ लगाना अमेरिका का आंतरिक मामला है। भारत व्यापार समझौते के लिए ब्रिक्स के साथ बातचीत कर रहा है। बीजेपी नेता ने कहा कि पीएम मोदी ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर देश की भूमिका के लिए एक नए युग की शुरुआत की है। पीएम मोदी को अब तक 27 देशों से सर्वोच्च नागरिक सम्मान मिल चुका है और उन्होंने 17 देशों की संसदों को संबोधित भी किया है। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ पीएम मोदी का ही नहीं बल्कि हर भारतीय का सम्मान है।

काम में ढिलाई बरतने वाले अफसरों -ठेकेदारों को छोड़ने वाला नहीं : गडकरी

नई दिल्ली (ईएमएस)। गुजरात के वडोदरा जिले में महिसागर नदी पर बने पुल के ढहने की घटना के बाद रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। बढ़ते पुल हादसों के बीच केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि वे काम में ढिलाई बरतने वाले अधिकारियों और ठेकेदारों के पीछे लग गए हैं। इतना ही नहीं उन्होंने कहा है कि दुर्भावनापूर्ण गलतियों पर ठोक देना चाहिए।

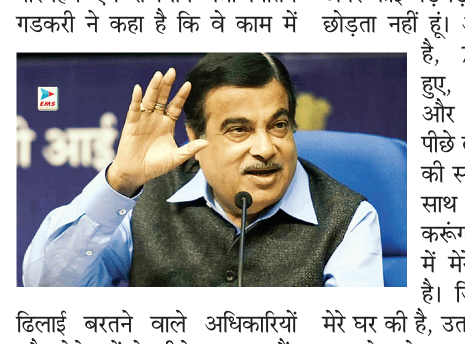

मंत्री गडकरी ने कहा, एक्सीडेंट अलग चीज है और जो काम करते समय बेईमानी और फ्रॉड करते हैं, वहां दूसरी चीज है। अगर गलती जानबूझकर नहीं की गई हो तब माफ कर देना चाहिए, लेकिन अगर गलती दुर्भावनापूर्ण की गई हैं, तब ठोक देना चाहिए। एक कार्यक्रम में उन्होंने यह टिप्पणी की।

काम के रवैये को लेकर केंद्रीय मंत्री गडकरी ने कहा कि वह गड़बड़ होने पर जिम्मेदारों को डांट लगाते हैं। उन्होंने कहा, अगर कोई गड़बड़ हुई रोड पर तब छोड़ता नहीं हूं। अभी मेरा टारगेट है, 7 वर्ल्ड रिकॉर्ड हुए, अब मैं ठेकेदार और अधिकारियों के पीछे लगूंगा। ये मेरे देश की संपत्ति है, मैं इसके साथ समझौता नहीं करूंगा। एक एक रोड में मेरे घर की दीवार है। जितनी चिंता मुझे मेरे घर की है, उतनी जिम्मेदारी मेरी उस रोड के साथ है। इसके साथ समझौता नहीं करूंगा।

गुजरात पुल हादसा महिसागर नदी पर बने पुल के ढहने की घटना में मृतकों की संख्या बढ़कर 18 हो गई है। अधिकारियों ने बताया कि घटनास्थल पर खोज एवं बचाव अभियान रात के लिए रोक दिया गया है। उन्होंने बताया कि यह अभियान शुक्रवार सुबह फिर से शुरू होगा क्योंकि दो व्यक्ति अब भी लापता हैं।

इंटरनेशनल टेनिस खिलाड़ी राधिका यादव की पिता ने की हत्याः हरियाणा में घर में ही 3 गोलियां मारीं; बेटी के एकेडमी चलाने से नाराज था

गुरुग्रामः हरियाणा के गुरुग्राम में जूनियर इंटरनेशनल टेनिस प्लेयर राधिका यादव की उसके ही पिता दीपक यादव ने गोली मारकर हत्या कर दी। घटना गुरुवार की है। पुलिस ने आरोपी दीपक यादव को घर से ही अरेस्ट किया है। पुलिस की शुरुआती जांच में सामने आया है कि राधिका टेनिस एकेडमी चलाती थीं, उससे अच्छी कमाई हो रही थी। उसके पिता को लोग ताने मारते थे कि बेटी की कमाई खा रहा है। इससे वह नाराज था।

परिजन के मुताबिक 25 साल की राधिका को टेनिस एकेडमी खोलने के लिए पिता ने ही सवा करोड़ रुपए दिए थे। लेकिन महीनेभर बाद ही एकेडमी बंद करने के लिए बेटी पर दबाव बनाना शुरू कर दिया था।
परिवार से यह भी पता चला कि एकेडमी को लेकर 15 दिन से बाप-बेटी में रोजाना झगड़ा हो रहा था। गुरुवार को भी पिता ने उसे टेनिस एकेडमी बंद करने को कहा, लेकिन राधिका नहीं मानी और दोनों में बहस हुई। जिसके बाद आरोपी पिता ने गुस्से में आकर उसे गोलियां मार दीं। हालांकि, पहले सोशल मीडिया पर रील बनाने को लेकर हत्या करने की बात सामने आई थी, लेकिन पुलिस ने इससे इनकार किया है। पुलिस ने आरोपी पिता को कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे एक दिन की पुलिस रिमांड पर भेजा गया।

चाचा की FIR में क्या, 3 पॉइंट में पढ़िए

1. किचन में खाना बनाते वक्त 3 गोलियां मारीं
आरोपी दीपक के भाई कुलदीप यादव ने पुलिस को दी शिकायत की है। कुलदीप ने कहा कि वजीराबाद गांव में स्थित घर की पहली मंजिल पर दीपक, उसकी पत्नी मंजू और बेटी राधिका रहते थे, जबकि मैं अपने परिवार के साथ ग्राउंड फ्लोर पर रहता हूं। गुरुवार सुबह दीपक का राधिका के साथ एकेडमी बंद करने को लेकर विवाद हुआ। जब राधिका किचन में खाना बना रही थी, उसी वक्त दीपक ने पीछे से उसे अपनी लाइसेंसी पिस्टल से 3 गोलियां मार दीं।

2. रसोई में खून से लथपथ पड़ी थी राधिका
कुलदीप ने कहा कि सुबह के समय मैं ग्राउंड फ्लोर पर था। मैंने तेज आवाज सुनी और जब मैं पहली मंजिल पर गया तो राधिका को रसोई में खून से लथपथ पड़े पाया। जबकि पिस्टल ड्राइंग रूम में पड़ी थी। मैं और मेरा बेटा उसे एशिया मैरिंगो अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

3. मर्डर के बाद वहीं बैठा रहा पिता
कुलदीप ने कहा कि मेरे भाई ने पॉइंट थ्री टू बोर की पिस्टल का इस्तेमाल किया और वह उसी की थी, जिसका लाइसेंस भी है। राधिका किचन में खून से लथपथ पड़ी थी और दीपक भी पास में बैठा था। सूचना मिलते ही पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। पुलिस ने दीपक को हिरासत में ले लिया।

पोस्टमॉर्टम किया जा रहा, परिजन भी पहुंचे

गुरुग्राम के सिविल अस्पताल में राधिका के शव का पोस्टमॉर्टम किया जा रहा है। ये पोस्टमॉर्टम 3 डॉक्टरों का पैनल कर रहा। वीडियोग्राफी भी की जा रही है। परिजन भी अस्पताल पहुंचे हैं।

मां बोली- मैं घटना के वक्त घर पर नहीं थी

राधिका की मां मंजू यादव ने पुलिस को बताया कि घटना के समय वह घर पर मौजूद नहीं थीं। उन्हें बुखार था। हालांकि राधिका के चाचा कुलदीप का कहना है कि फायरिंग के वक्त राधिका की मां घर की पहली मंजिल पर मौजूद थी।

शुभांशु शुक्ला समेत अंतरिक्ष यात्रियों की वापसी में हो रही देरी

-आईएसएस के ज्वेज्दा सर्विस मॉड्यूल में प्रेशर हो गया था लीक

वॉशिंगटन,(ईएमएस)। भारत के शुभांशु शुक्ला समेत चार अंतरिक्ष यात्रियों के एक्सिओम-4 मिशन इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन (आईएसएस) से लौट में देरी हो रही है। पहले उनकी वापसी 10 जुलाई को होना थी, लेकिन अब इसमें कम से कम चार से पांच दिन की देरी हो सकती है। वापसी की नई तारीख अभी तय नहीं की गई है, लेकिन अनुमान लगायाजा रहा है कि यह 14 जुलाई या उसके बाद ही संभव हो पाएगी। देरी की वजह आईएसएस में आई तकनीकी समस्या बताया जा रहा है। दरअसल आईएसएस के रूसी हिस्से में स्थित ज्वेज्दा सर्विस मॉड्यूल में प्रेसर लीक पाया गया। इसे रिपेयर कर लिया गया है, लेकिन उसकी सेफ्टी को लेकर अभी ऑडिट और निगरानी की जा रही है। इसी वजह से वहां से जुड़े सभी मिशनों की वापसी पर नजर रखी जा रही है और जल्दबाजी में कोई रिस्क नहीं लिया जा रहा। शुभांशु और उनके साथी सुरक्षित हैं और आईएसएस में किसी भी तरह का तत्काल खतरा नहीं है। मिशन कंट्रोल और अंतरराष्ट्रीय टीमें स्थिति पर नजर रख रही हैं। एक्सिओम-4 मिशन की लॉन्चिंग भी पहले कई बार टली थी। इसमें इलेक्ट्रिकल हार्नेस की समस्या, फालकॉन-9 रॉकेट में लिक्विड ऑक्सीजन लीक और खराब मौसम जैसी वजहें रही थीं। यह 25 जून को लॉन्च हो पाया था और इसकी अवधि करीब दो सप्ताह तय थी। तय योजना के मुताबिक, 10 जुलाई को स्पेसक्राफ्ट को आईएसएस से अनडॉक कर पृथ्वी पर लौटना था, लेकिन आईएसएस के रूसी मॉड्यूल की तकनीकी दिक्कत ने शेड्यूल बदल दिया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक क्रू ड्रैगन यान बिल्कुल सुरक्षित स्थिति में है और उसमें कोई नई समस्या नहीं है। उसकी वापसी प्रक्रिया तय प्रोटोकॉल के मुताबिक ही होगी। आईएसएस से अनडॉक होने के बाद यान अपने थ्रस्टर्स से सुरक्षित दूरी बनाएगा, फिर पृथ्वी की दिशा में डिआर्बिट बर्न कर स्पीड घटाई जाएगी। पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश के वक्त यह करीब 28,000 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से आएगा। बाहर का तापमान 1600 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा होगा, लेकिन हीट शील्ड इसे सुरक्षित रखेगी। वायुमंडल में घुसते वक्त कुछ मिनट का ब्लैकआउट फेज रहेगा। फिर पैराशूट सिस्टम खुलेगा जो स्पीड को घटा देगा और आखिर में यह अटलांटिक महासागर या मेक्सिको की खाड़ी में पानी पर लैंड हो जाएगा। फिलहाल मिशन कंट्रोल की प्राथमिकता क्रू की सुरक्षा है और इसीलिए आईएसएस की स्थिति पूरी तरह संतोषजनक पाए जाने के बाद ही वापसी की प्रक्रिया शुरू होगी। शुभांशु शुक्ला और बाकी टीम के सुरक्षित लौटने में थोड़ी देर तो होगी, लेकिन उन्हें अंतरिक्ष में फंसे रहने का कोई खतरा नहीं है।

यूक्रेन में खुफिया अधिकारी की हत्या के बाद बोले ट्रंप मैं पुतिन से खुश नहीं हूं वो...

कीव(ईएमएस)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने संकेत दिया है कि वे आगामी सोमवार को रूस को लेकर एक 'बड़ा ऐलान' करेंगे। इंटरव्यू में ट्रंप ने कहा, मैं पुतिन से खुश नहीं हूं। वह बहुत से लोगों को मार रहा है। ट्रंप के ये बयान उस वक्त आया जब यूक्रेन के एक खुफिया अधकारी की गोली मारकर हत्या कर दी गई। यूक्रेन की राजधानी कीव गुरुवार सुबह उस वक्त दहल गई जब देश की टॉप सुरक्षा एजेंसी एसबीयू के एक अफसर को सरेआम गोली मार दी गई। यह हत्या कथित रूप से एक सोची-समझी साजिश थी, जिसकी जांच अब पूरी गंभीरता से की जा रही है।

घटना राजधानी कीव के एक अपार्टमेंट कॉम्प्लेक्स के बाहर हुई। वहां लगे सीसीटीवी कैमरे में यह पूरी वारदात कैद हो गई, जिसका वीडियो अब स्थानीय टेलीग्राम चैनलों पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में एक शख्स दो बैग्स के साथ अपार्टमेंट से निकलकर अपनी कार की ओर बढ़ता दिखता है। तभी एक नकाबपोश हमलावर उसके करीब आता है और फायरिंग कर देता है।कीव पुलिस के मुताबिक पीड़ित की मौत मौके पर ही हो गई थी। उनके शरीर पर गोली के निशान पाए गए। एसबीयू (यूक्रेन की खुफिया एजेंसी) ने पुष्टि की है कि मारे गए शख्स उनके ही एक अधिकारी थे, लेकिन सुरक्षा कारणों से उनकी पहचान उजागर नहीं की गई है। कीव पुलिस ने इसे टारगेटेड किलिंग मानते हुए हत्यारे की पहचान और गिरफ्तारी के लिए अभियान शुरू कर दिया है। पुलिस का कहना है कि वह अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर इस केस को देख रही है और कुछ अहम सुराग हाथ लगे हैं।

एसबीयू यूक्रेन की वही एजेंसी है, जिसने कुछ दिनों पले रूस के सैन्य ठिकानों पर 'ऑपरेशन स्पाइडरवेब' नाम से एक बड़े ड्रोन हमले को अंजाम दिया था। इस हमले में रूस के दर्जनों फाइटर जेट और स्ट्रैटेजिक बमवर्षक विमान तबाह कर दिए गए थे। यह यूक्रेन की सबसे बड़ी खुफिया सफलता मानी गई थी और रूस के लिए एक बड़ी शर्मिंदगी। रिपोर्ट के मुताबिक कुछ दिनों पहले सूत्रों ने कहा था कि एसबीयू ने ही रूस के लेफ्टिनेंट जनरल इगोर किरिलोव की हत्या की थी, जिन पर रासायनिक हथियारों के प्रयोग का आरोप था। ऐसे में माना जा रहा है कि गुरुवार की हत्या भी यूक्रेन-रूस संघर्ष में पलटवार हो सकती है। इस बीच सोमवार को मास्को के एक बेहद आलीशान इलाके में खड़ी टेस्ला कार में रूस के कैबिनेट मंत्री रोमन स्टारोवोइत की लाश मिली, तो रूस भर में सन्नाटा पसर गया। 53 साल के इस पूर्व गवर्नर की मौत से जुड़े सवाल सिर्फ उनके जीवन को नहीं, बल्कि पूरे क्रेमलिन के मौजूदा तंत्र को सवालों के घेरे में खड़ा कर रहे हैं। स्टारोवोइत कुछ ही घंटे पहले राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के आदेश पर बर्खास्त किए गए थे। इसके बाद खबर आई कि उन्हें ओडिंत्सोवो जिले में, जहां कई रसूखदार रूसी अधिकारी रहते हैं, गोली लगी हालत में मृत पाया गया।

यूक्रेन में खुफिया एजेंसी के टॉप अफसर की टारगेट किलिंग

कीव (ईएमएस)। यूक्रेन की राजधानी कीव में दिनदहाड़े यूक्रेन की सुरक्षा सेवा (एसबीयू) के एक वरिष्ठ अधिकारी, कर्नल इवान वोरोनिच की गोली मारकर हत्या कर दी गई। यह घटना एक रिहायशी इलाके में हुई, जहां हमलावर पैदल ही मौके से फरार हो गया। रिपोर्टों के अनुसार, होलोसीव्स्की जिले में एक अज्ञात व्यक्ति ने पिस्तौल से कर्नल वोरोनिच को पांच गोलियां मारीं, जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें एक व्यक्ति को रिहायशी इमारत से पार्किंग की ओर जाते दिख रहा है, तभी एक अन्य व्यक्ति उस पर कई गोलियां चलाता है और भाग जाता है। एसबीयू ने पुष्टि की है कि मृतक उनके कर्मचारी थे, लेकिन अधिकारी की पहचान सार्वजनिक रूप से उजागर नहीं की गई थी। अधिकारियों का कहना है कि अभी तक हमले के पीछे का मकसद और संदिग्ध की पहचान स्पष्ट नहीं हो पाई है। कीव पुलिस ने हमलावर की तलाश के लिए बड़े स्तर पर सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है।

एसबीयू का बढ़ता प्रभाव

एसबीयू यूक्रेन की घरेलू खुफिया एजेंसी है और 2022 में रूस के हमले के बाद से रूस में तोड़फोड़ अभियानों और हाई-प्रोफाइल हत्याओं सहित खुफिया अभियानों में अधिक सक्रिय हो गई है। इनमें स्पाइडर वेब नामक ड्रोन अभियान भी शामिल है, जिसने रूस के हवाई ठिकानों को निशाना बनाया। यूक्रेनी अधिकारियों ने हालांकि किसी भी हत्या का आरोप नहीं लगाया है।

माल्टा में फैशन वीक के दौरान परिधानों को पेश करती हुई एक मॉडल।

इलाज कराने पहुंचे बच्चों पर इजरायल ने गिरा दिया बम, 15 की मौत

गाजा(ईएमएस)। एक स्वास्थ्य केंद्र के बाहर मदद का इंतजार कर रहे लोगों पर इजरायल का हमला हुआ। इस हमले में 15 लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में आठ मासूम बच्चे, तीन महिलाएं और चार पुरुष शामिल थे। बच्चों में सबसे छोटा महज दो साल का था। एनजीओ के प्रमुख रबीह तुर्बे ने बताया कि क्लिनिक की लोकेशन इजरायली सेना को पहले ही दे दी गई थी, फिर भी हमला हुआ। उन्होंने कहा, 'हमारे दरवाजे खुलने का इंतजार कर रही मासूम जिंदगियां बेदर्दी से तबाह कर दी गईं'। पिछले 24 घंटे में अब तक 82 लोगों की मौत हो चुकी है। ये हमला उस वक्त हुआ जब लोग एक अमेरिकी एनजीओ 'प्रोजेक्ट होप' की हेल्थ क्लिनिक के बाहर लाइन में लगे थे। क्लिनिक में कुपोषण, संक्रमण और अन्य बीमारियों का इलाज होता है।

रिपोर्ट के मुताबिक एक वीडियो में कई घायल और बेसुध बच्चे जमीन पर पड़े दिखाई दिए। कुछ को खून से लथपथ ठेलों पर ले जाया गया। इजरायली सेना ने सफाई दी है कि हमला एक हमास आतंकी को निशाना बनाने के लिए किया गया था, जो 7 अक्टूबर 2023 को हुए आतंकी हमले में शामिल था। सेना ने कहा, 'हम घटना की जांच कर रहे हैं और आम नागरिकों को नुकसान न पहुंचे, इसके लिए हर संभव प्रयास करते हैं।गाजा की स्वास्थ्य मंत्रालय के महानिदेशक के मुताबिक, हमला उस क्लिनिक के पास हुआ जहां महिलाओं को बच्चों के लिए फॉर्मूला दूध दिया जा रहा था। 'डॉक्टर्स विदाउट बॉर्डर्स' के डॉक्टर मोहम्मद अबू मुगैसिब ने बताया कि इस तरह के हमले पहले भी स्वास्थ्य केंद्रों को निशाना बना चुके हैं। उन्होंने कहा, 'गाजा के लोग अब पूरी तरह टूट चुके हैं, थक चुके हैं। उम्मीद अब एक बहुत ही नाजुक शब्द बन गया है।' मुगैसिब ने कहा, 'हर दिन सैकड़ों लोग मारे जाते हैं और घायल होते हैं जब वे अपने भोजन के पैकेट या मदद के पार्सल लेने जाते हैं।' इजरायल ने पिछले कुछ दिनों में अपने हमले तेज कर दिए हैं और कुछ हिस्सों पर जमीनी कार्रवाई का विस्तार किया है। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक पिछले महीने गाजा में लगभग 3000 फिलिस्तीनी मारे गए।

गाजा पट्टी में हमास ने इजराइली सेना पर गुरिल्ला हमलों को तेज कर दिया है, जिसमें 20 से अधिक सैनिक मारे गए हैं। इस सप्ताह उत्तरी शहर बीत हनून में अकेले पांच सैनिकों की मौत हुई। इसके अलावा मंगलवार को यरुशलम के पास गश एतजियोन जंक्शन पर एक 20 वर्षीय इजराइली युवक की गोलीबारी और चाकूबाजी में मौत हो गई। वहीं इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने अमेरिका से लौटने से पहले कहा कि वह हमास से बंधक रिहाई पर डील जल्द पूरी होने की उम्मीद करते हैं। उन्होंने कहा कि 60 दिन का युद्धविराम प्रस्तावित है, जिसके पहले चरण में कुछ बंधकों की रिहाई होगी और फिर युद्ध समाप्ति की दिशा में बातचीत चलेगी। उन्होंने हमास को 'राक्षसी ताकत' बताया जो अपने नागरिकों को ढाल बनाती है। लाल सागर में दो जहाजों को डुबोने और मिसाइल हमलों के बाद इजराइल ने अमेरिका से अपील की है कि वह हूतियों के खिलाफ फिर से सैन्य कार्रवाई शुरू करे। हूती नेता अब्दुल मलिक अल-हौथी ने धमकी दी है कि गाजा पर हमले बंद न होने तक इजराइल से जुड़े जहाजों को निशाना बनाना जारी रहेगा। जर्मनी ने भी ईरान से अपील की है कि वह हौथियों पर लगाम लगाए। इससे पहले हूतियों ने दो जहाजों को डुबोया और उनके वीडियो भी जारी किए।

पाक पीएम के सलाहकार ने की ऐसी बात भड़क गईं इमरान खान की पूर्व पत्नी

वॉशिंगटन,(ईएमएस)। बीते करीब दो सालों से जेल में बंद पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान को अब पहली पत्नी जेमिमा गोल्डस्मिथ का समर्थन मिला है। जेमिमा को इमरान से तलाक लिए 21 साल हो चुके हैं, लेकिन जेल में बंद इमरान खान से बच्चों को न मिलने देने पर जेमिमा ने ऐतराज जताया है। जेमिमा और इमरान खान की शादी 1995 में हुई थी और 2004 में दोनों अलग हो गए थे। दोनों के दो बेटे सुलेमान इसा खान और कासिम खान हैं। दोनों बेटे मां के साथ ही रहते हैं, लेकिन इमरान से भी वह संपर्क में रहते थे। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इमरान खान बीते करीब दो सालों से जेल में बंद हैं तो बेटों को भी पिता की फिक्र है। यही नहीं उनकी इमरान खान से फोन पर बात तक नहीं हो पा रही है। इसके अलावा पाकिस्तान के पीएम शहबाज शरीफ के सलाहकार राणा सनाउल्लाह के बयान पर जेमिमा भड़क गईं, जिसमें सनाउल्लाह ने बेटों को भी गिरफ्तार करने की बात कही है। सनाउल्लाह ने कहा था कि यदि इमरान खान के बेटे पाकिस्तान आए और विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया तो उन्हें भी गिरफ्तार किया जाएगा। इस पर जेमिमा ने सख्त ऐतराज जताया है। उन्होंने कहा कि मेरे बच्चों को अपने पिता इमरान खान से फोन पर बात करने की अनुमति नहीं है। वह लगभग दो सालों से जेल में एकांतवास में हैं। इसके अलावा इमरान के बेटे कासिम ने भी एक्स पर एक पोस्ट लिखी है। कासिम ने लिखा- मेरे पिता इमरान खान को जेल में बंद हैं। वह एकांतवास में है। उन्हें वकीलों तक से मिलने नहीं दिया जा रहा है। उन्हें परिवार से दूर रख गया है। वह पूरी दुनिया और यहां तक कि अपने बच्चों से भी कट गए हैं। उनके निजी डॉक्टर को भी मिलने नहीं दिया जा रहा। यह न्याय नहीं अन्याय है। यह एक सोची समझी साजिश है कि कैसे पाकिस्तान में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए खड़े एक शख्स को तोड़ दिया जाए। वह लोकतंत्र के लिए लड़ रहे हैं। वहीं जेमिमा ने कहा कि पाकिस्तान सरकार कहती है कि इमरान खान के बेटे यदि पिता से मिलने आए तो गिरफ्तार कर लिया जाएगा। यह कोई लोकतांत्रिक सरकार नहीं है। यह राजनीति भी नहीं है। यह किसी आदमी से बदला लेने वाली बात है। हालांकि राणा सनाउल्लाह अब भी अपनी बात पर कायम हैं। उन्होंने कहा कि यदि कोई हिंसक आंदोलन को लीड करने के लिए आता है तो उसे गिरफ्तार क्यों नहीं किया जाएगा। हिंसा भड़काने की कोशिश हुई तो उसका अंजाम तो भुगतना ही पड़ेगा।

बलूच विद्रोहियों ने 8 हमले पाकिस्तान के 18 फ्रंटियर कोर के सैनिकों को मार डाला

करांची,(ईएमएस)। बलूच विद्रोहियों ने गुरुवार को एक घंटे में 8 जगह पर हमलों को अंजाम दिया गया। बलूचिस्तान के सुरब में फ्रंटियर कोर के कैंप पर हमला कर उसे कब्जे में ले लिया गया था। इस हमले की जिम्मेदारी बलूच लिबरेशन आर्मी ने ली। साथ ही दावा किया है कि इस हमले में फ्रंटियर कोर के 18 सैनिको को मार गिराया। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में बलूच लिबरेशन आर्मी ने पूरी तरह से गदर मचा दिया है। कोई दिन ऐसा नहीं गुजरता जब किसी जगह पर सेना के काफिले या पोस्ट पर अटैक ना हो रहा हो। इस साल जनवरी से जून तक के आंकड़ों की बात करें तो बीएलए ने 284 हमले को अंजाम दिया। इन हमलों में 9 स्पेशल ऑपरेशन, 3 फिदायीन, 121 बम या आईईडी ब्लास्ट से किए गए। इन हमलों में दावा किया जा रहा है कि 668 पाक सैनिकों की मौत हो गई है। इसके अलावा बीएलए ने बलूचिस्तान में 45 महत्वपूर्ण स्थानों पर कब्जा किया, जिसमें कालट जिला का मंगोचर शहर भी शामिल है। इसमें खारन जिले के लत्ताद में बलूच उग्रवादियों ने एक फ्रंटियर कोर की चौकी पर हमला किया। दूसरा अटैक दश्त में नाकाबंदी के दौरान सचिवालय बस पर गोलीबारी की गई। तीसरा अटैक केच जिले के टम्प में अंजाम दिया गया। इसमें बलूच उग्रवादियों ने बलिचा, मीराबाद, ज़मरान बाजार, रोडबन और बुस्ट में अचानक नाकाबंदी कर दी। नाकाबंदी से पाकिस्तानी सरकार को आर्थिक नुकसान पहुंचाया जाता है। चौथा हमला डोलेजी के झाओ में अंजाम दिया गया, जहां बलूच विद्रोहियों ने एक पाकिस्तानी सेना कैंप पर हमला किया। यह हमला 30 मिनट से ज्यादा समय तक चला। पांचवा अटैक क्वेटा के किरानी रोड में हज़ारा टाउन के पास हुआ, जिसमें एक सुरक्षा चौकी पर हथियारबंद हमलावरों ने हमला किया। छठा हमला टम्प गोमाज़ी में हुआ, जहां शाम को हथियारबंद लोगों ने एक सुरक्षा चौकी पर हमला किया। सातवां हमला खारन के जंगल इलाके के सोपाक क्रॉस पर अंजाम दिया गया, जहां बलूच लड़ाकों ने नाकाबंदी की जो कि लंबे समय तक जारी रही। आठवां हमला दलबंदिन में गैस ले जा रहे बोज़र ट्रकों पर हुआ। बलूचिस्तान के कुल 37 जिले हैं। हर जिले में बलूचियों का विद्रोह चरम पर है। दिन-रात हर वक्त पाक सेना और सरकार को चुनौती दी जा रही है। सुरक्षाबलों पर छोटे-बड़े हमले से लेकर सीपीईसी के प्रोजेक्ट को नुकसान पहुंचाया जा रहा है।

कैप्स कैफे पर गोलीबारी, खालिस्तानी आतंकी लड्डी कपिल की कुछ टिप्पणियों से आहत

एक कैरेक्टर ने निहंग सिखों जैसे कपड़े पहन रखे

ओटावा,(ईएमएस)। कनाडा के सरे में मशहूर भारतीय कॉमेडियन कपिल शर्मा के नए रेस्तरां कैप्स कैफे पर गोलीबारी की घटना हुई है। इस हमले की जिम्मेदारी खालिस्तानी आतंकी हरजीत सिंह लड्डी ने ली है, जो भारत की राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की मोस्ट वांटेड सूची में शामिल बब्बर खालसा इंटरनेशनल (बीकेआई) से जुड़ा है। कनाडाई पत्रकार बताया कि लड्डी कपिल के एक कॉमेडी शो में की गई कुछ टिप्पणियों से कथित तौर पर आहत था, इसकारण कैप्स कैफे पर गोली चलाई। पत्रकार के अनुसार, खालिस्तानी समूह हमले के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी जिम्मेदार ठहरा रहे हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि लड्डी लंबे समय से खालिस्तानी आतंकवादी संगठन का सदस्य रहा है और इस तरह की हिंसा उसका तरीका रहा है। पत्रकार ने घटना को राजनीतिक रूप से प्रेरित आतंकवादी हमला बताया, जिसका उद्देश्य कनाडा में भारतीय समुदाय को डराना है। वहीं इस पूरे मामले में खालिस्तानी आंतकी हरजीत सिंह लाडी का बयान सामने आया है। आंतकी लाडी ने बताया कि कपिल शर्मा शो पर एक पार्टिसिपेंट ने निहंग सिखों का मजाक उड़ाया था। उसने निहंगों के पहनावे और व्यवहार पर टिप्पणी की थी। इस तरह से कपिल ने सिख समुदाय की भावनाओं का मजाक उड़ाया था। लाडी ने कहाकि कॉमेडी की आड़ में धर्म का मजाक बर्दाश्त नहीं। हरजीत सिंह बब्बर खालसा इंटरनेशनल (बीकेआई) से जुड़ा हुआ है। उसने कॉमेडियन के कैफे पर गोलीबारी की जिम्मेदारी ली है। लाडी ने कहाकि उसने बीकेआई के एक अन्य साथी तूफान सिंह के साथ मिलकर हमले को अंजाम दिया। हरजीत सिंह लाडी एनआईए की मोस्ट वांटेड लिस्ट में शामिल है। बता दें कि कनाडाई सरकार बीकेआई को एक आतंकी संगठन मानती है।

हमले का पूरा मामला

कपिल और उनकी पत्नी गिन्नी चतरथ ने सरे में कैप्स कैफे नाम से अपना पहला इंटरनेशनल रेस्तरां खोला था। 7 जुलाई को भव्य उद्घाटन के बाद, बुधवार रात करीब 1:50 बजे अज्ञात हमलावरों ने कैफे पर कई राउंड गोलियां चलाईं। सीसीटीवी फुटेज में एक व्यक्ति को कार से कैफे की खिड़कियों पर लगभग 9 से 12 राउंड गोलियां चलाते हुए देखा गया। घटना के समय स्टाफ अंदर मौजूद था, लेकिन गनीमत रही कि कोई हताहत नहीं हुआ। पुलिस ने जांच शुरू हमलावरों की तलाश जारी है। यह पहली बार नहीं है जब कनाडा में भारतीय या पंजाबी मूल के व्यवसायों को निशाना बनाया गया हो। हाल के महीनों में सरे शहर में हिंदू समुदाय से जुड़े अन्य व्यवसायों और मंदिरों पर भी हमले की घटनाएं सामने आई हैं, जिससे भारतीय समुदाय में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है।

बांग्लादेश में महिला सरकारी अधिकारियों को सर कहने का नियम बंद

ढाका,(ईएमएस)। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने एक बड़ा फैसला लेकर महिला सरकारी अधिकारियों को सर कहने के पुराने नियम को रद्द कर दिया है। यह नियम पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के शासनकाल के दौरान लागू था, जिसके तहत उन्हें और अन्य महिला अधिकारियों को भी सर कहकर संबोधित किया जाता था।

एडवाइजरी काउंसिल की बैठक में यह फैसला हुआ। आधिकारिक नोटिस में इस नियम की आलोचना करते हुए कहा गया कि यह सामाजिक और संस्थागत रूप से अनुचित और अवांछनीय था। सरकार ने सही और सम्मानजनक भाषा के उपयोग को सुनिश्चित करने की बात कही है, जो सामाजिक मूल्यों और मानदंडों के अनुरूप हो। इस निर्णय के तहत सर कहने की बाध्यता को पूरी तरह समाप्त किया गया है। इतना ही नहीं अंतरिम सरकार ने अन्य पुराने और जटिल प्रोटोकॉल नियमों की समीक्षा करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया है। इसके लिए एक नई समिति बनाई गई है, जिसकी अध्यक्षता सैयदा रिजवाना हसन कर रही हैं। समिति को एक महीने के भीतर अपनी सिफारिशें सौंपने को कहा गया है। लिंग के अनुसार संबोधन को लेकर पहले भी सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों में काफी असहजता महसूस की जाती थी।

फिलिस्तीनी-अमेरिकी शख्स खलील ने ठोंका ट्रंप प्रशासन के खिलाफ मुकदमा

वाशिंगटन (ईएमएस)। अमेरिका में ट्रंप प्रशासन को एक नई कानूनी मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है। एक फिलिस्तीनी-अमेरिकी शख्स, महमूद खलील, ने ट्रंप प्रशासन पर मुकदमा दायर कर 20 मिलियन डॉलर का मुआवजा मांग लिया है। खलील, जो अमेरिका में ग्रीन कार्ड होल्डर हैं, उनका का दावा है कि उन्हें गलत तरीके से गिरफ्तार किया गया, इसकारण उन्हें भारी नुकसान हुआ। खलील के वकील ने अमेरिकी सरकार पर झूठे मामलों में गिरफ्तारी का आरोप लगाया है और कहा है कि मामले में उचित प्रक्रिया का पालन नहीं हुआ। वकील के अनुसार, खलील की अमेरिका में उपस्थिति को विदेश नीति के लिए खतरा बताया गया था। खलील को बिना किसी आपराधिक आरोप के 100 दिनों तक हिरासत में रखा गया, और उन्हें अपनी पत्नी के पहले बच्चे के जन्म के समय भी रिहाई नहीं मिली। खलील का कहना है कि अगर वह यह केस जीतते हैं, तब वह मुआवजे की राशि उन लोगों में बांट दूंगा, जिन्हें ट्रंप प्रशासन ने इसी तरह से निशाना बनाया है।

हालांकि, खलील पर डिपोर्ट होने का खतरा अभी भी बना हुआ है। क्योंकि अमेरिकी प्रशासन का कहना है कि खलील ने कुछ यहूदी छात्रों को डराया था। होमलैंड सिक्योरिटी डिपार्टमेंट के प्रवक्ता का कहना हैं कि खलील को हिरासत में लेना बिल्कुल सही कदम था और उन पर हिंसा के लिए उकसाने, आतंकियों को समर्थन देने और कैंपस की संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के आरोप हैं।

खूबसूरती से घबराए चीन की नाक में हुआ दम, अफसरों को दी सख्त हिदायत

बीजिंग(ईएमएस)। चीन अमेरिका जैसे देश को भी आंखें तरेर रहा है, वो एक ऐसी चीज़ के घबराया हुआ है, जिसका तोड़ उसके पास है ही नहीं। वो अपने सरकारी अफसरों को हिदायत दे रहा है कि दिल लगाने से पहले जरा जांच-पड़ताल कर लें। साफ तौर पर सरकारी चेतावनी दी गई है कि कर्मचारियों को किसी से भी रोमांस को लेकर सावधानी रहने की जरूरत है ताकि वे मोहब्बत के चक्कर में देश से गद्दारी न कर बैठें। चीनी मंत्रालय का कहना है कि राजनयिक, वैज्ञानिक, शिक्षक और खासकर विदेशों में पढ़ाई कर रहे छात्र, जो संवेदनशील जानकारी रख सकते हैं, उन्हें इन तरीकों के पहले निशाने पर रखा जाता है।

चीन ने सिर्फ खूबसूरत औरतें ही नहीं आकर्षक मर्दों के आकर्षण के प्रति सचेत रहने के लिए कहा है। एमएसएस ने वीचैट पोस्ट में बताया कि कैसे कुछ लोग पूरी तरह विवश हो कर सरकारी गोपनीयता खोल बैठते हैं। ये चेतावनी दी गई है कि हनीट्रैप में कहीं आम जीवन और ऑनलाइन चैटर्स भी शामिल हो सकते हैं। चीन का राज्य सुरक्षा मंत्रालय ने हाल ही में एक सख्त चेतावनी जारी की है। ये चेतावनी सुंदर और आकर्षक विदेशी जासूसों को लेकर है। सोशल मीडिया पर अपनी नई वीचैट अकाउंट के माध्यम से एमएसएस ने बताया कि विदेशी जासूस अपने फायदे के लिए मजबूत वैवाहिक, आर्थिक या प्रेम संबंधों के रूप में आते हैं। वो अपने मायाजाल में फंसाकर सेंसिटिव इंफॉर्मेशन उड़ा ले जाते हैं। इसके उदाहरण के तौर पर ली सी नाम के शख्स की कहानी बताई जा रही है। उसे एक विदेशी नाइटक्लब में बेहद खूबसूरत और आकर्षक लड़की के जरिये फंसाया गया। लड़की उसे अदाओं के जाल में फंसाकर बिस्तर तक ले गई और फिर उसकी तस्वीरों और वीडियो से ब्लैकमेल करके उसे जासूसी के लिए मजबूर किया गया। चीन अपने नागरिकों को सतर्क कर रहा है कि ये सिर्फ ऑफलाइन ही नहीं ऑनलाइन भी हो सकता है। ऐसे में बेहतर है कि अनजान लोगों, अनजान वाई फाई नेटवर्क से बचकर रहे और किसी तरह के राज़ को बेवजह छिपाएं नहीं।

डर और धमकी से खुद को बचाने की कोशिश में बोला पाक- परमाणु शक्ति से टकराना मूर्खता

इस्लामाबाद,(ईएमएस)। पाकिस्तान के सेना प्रवक्ता लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी का नया बयान उस देश की गहराती हताशा और लगातार बिगड़ती आंतरिक स्थिति को ही उजागर करता है। जनरल चौधरी ने कहा, एक स्थापित परमाणु शक्ति से टकराना मूर्खता है। इस एक लाइन से पाकिस्तान ने खुद मान लिया कि अब वो डर और धमकी के जरिए खुद को बचाने की कोशिश कर रहा है। पाकिस्तान की सेना जो खुद देश के हर राजनीतिक तंत्र पर हावी रहती है। अब भारत को 'परमाणु बटन' का डर दिखाकर अपनी नाकामियां छुपाना चाहती है।

जनरल चौधरी ने दावा किया कि भारत बलूचिस्तान और वज़ीरिस्तान में आतंकी गतिविधियों में लिप्त है। लेकिन इस आरोप का कोई भी सबूत पेश नहीं कर सके। जबकि उन्हीं हमलों की जिम्मेदारी टीटीपी यानी तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान खुद ले चुकी है। बयान से साफ है कि पाकिस्तान अब विचार, कूटनीति और रणनीति में नहीं, सिर्फ परमाणु बटन की गीदड़भभकी में विश्वास करता है। भारत को न धमकी की जरूरत है और न जवाब देने की जल्दी। क्योंकि सच्चाई अपने आप सामने आ रही है। पाकिस्तान को समझ लेना चाहिए कि परमाणु शक्ति का मतलब जिम्मेदारी है, न कि धमकी देने का लाइसेंस। और भारत को आंख दिखाकर कोई भी अब तक बचा नहीं है।

जनरल चौधरी ने पाकिस्तान को ईरान या किसी अन्य देश से पूरी तरह अलग बताया और कहा कि पाकिस्तान एक "घोषित परमाणु ताकत है, और दुनिया को ऐसे किसी भी देश से उलझने का कोई अनुभव नहीं है।" उनका दावा था कि अगर किसी ने ऐसा दुस्साहस किया, तो नतीजे "भयानक और असहनीय" होंगे। हालांकि, इस पूरे बयान में आत्मविश्वास से ज्यादा डर और रक्षात्मकता झलकती है। इससे साफ है कि पाकिस्तान सिर्फ शब्दों से खुद को मजबूत दिखाना चाहता है। भारत ने हमेशा वैश्विक मंचों पर 'नो फर्स्ट यूज' की नीति अपनाई है जबकि पाकिस्तान की रणनीति 'पहले धमकाओ, बाद में खुद डरो' जैसी रही है। ऐसे बयान सिर्फ ये दिखाते हैं कि पाकिस्तान को खुद पर कितना कम भरोसा है। बलूचिस्तान में पाक सेना के खिलाफ जनता का विरोध बढ़ता जा रहा है। सैकड़ों लापता लोग, मानवाधिकार हनन, फर्जी मुठभेड़। इन सबका जवाब पाक जनरल के पास नहीं है। लेकिन भारत पर इल्जाम लगाकर वे जनता और अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान भटकाना चाहते हैं।

आसमान में टकराए दो विमान, भारतीय और कनाडाई छात्रों की मौत

टोरंटो,(ईएमएस)। कनाडा के मैनिटोबा प्रांत में एक भारतीय छात्र पायलट की विमान दुर्घटना में मौत हो गई। मीडिया रिपोर्ट में टोरंटो स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास ने जानकारी देते हुए बताया कि छात्र की पहचान श्रीहरि सुकेश के रूप में हुई है। यह दुघर्टना तब हुई जब एकल इंजन वाला उसका विमान आसमान में एक अन्य विमान से टकरा गया, जो एक कनाडाई युवती उड़ा रही थी। इस दुर्घटना में कनाडाई युवती की भी मौत हो गई।

भारतीय महावाणिज्य दूतावास ने कहा कि वह सभी जरुरी सहायता प्रदान करने के लिए शोक संतप्त परिवार, पायलट प्रशिक्षण स्कूल और स्थानीय पुलिस के संपर्क में है। रिपोर्ट में बताया गया है कि दोनों छात्र पायलटों के शव उनके विमानों के मलबे से बरामद किए गए हैं।

राधा यादव की कप्तानी में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जाएगी भारत ए टीम

श्रेयंका और टिटास शामिल

मुम्बई (ईएमएस)। साधू यादव की कप्तानी में भारत ए महिला टीम क्रिकेट टीम अगले माह ऑस्ट्रेलिया दौरे पर जाएगी। ऑफ स्पिनर श्रेयंका पाटिल और तेज गेंदबाज टिटास साधु को भी को इस टीम में शामिल किया गया है। ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर भारत ए टीम सात से 24 अगस्त के बीच तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय और इतने ही एकदिवीसय और चार दिवसीय मैच खेलेगी। श्रेयंका पिछले साल संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में हुए महिला टी20 विश्व कप के बाद से ही फिट नहीं होने के कारण टीम से बाहर हैं। उन्हें सितंबर में महिला कैरेबियन प्रीमियर लीग (डब्ल्यूसीपीएल) में खेलने के लिए गत चैंपियन बारबाडोस रॉयल्स ने पहले ही शामिल कर लिया है। टिटास फिट नहीं होने के कारण श्रीलंका में त्रिकोणीय सीरीज के अलावा इंग्लैंड में सीमित ओवरों की सीरीज के लिए भी शामिल नहीं की गयीं थी। श्रेयंका बीसीसीआई 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस से अनुमति मिलने के बाद ही ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज में खेल पायेंगी। वहीं टिटास को खेलने की मंजूरी मिल गयी है। स्पिनर राधा इस सीरीज में टी20 के अलावा एकदिवसीय और चार दिवसीय मुकाबले के लिए टीम की कप्तान बनायी गयी हैं। इसके अलावा सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा को भी सभी टीमों में शामिल किया गया है।

टी20 टीम इस प्राकर है

राधा यादव (कप्तान), मीनू मणि (उप-कप्तान), शेफाली वर्मा, डी वृंदा, सजना सजीवन, उमा छेत्री (विकेटकीपर), राघवी बिष्ट, श्रेयंका पाटिल, प्रेमा रावत, नंदिनी कश्यप (विकेटकीपर), तनुजा कंवर, जोशिता वीजे, शबनम शकील, साइमा ठाकोर, टिटास साधु।

वनडे और चार दिवसीय टीम :
राधा यादव (कप्तान), मीनू मणि (उप-कप्तान), शेफाली वर्मा, तेजल हसबनिस, राघवी बिष्ट, तनुश्री सरकार, उमा छेत्री (विकेटकीपर), प्रिया मिश्रा, तनुजा कंवर, नंदिनी कश्यप (विकेटकीपर), धारा गुज्जर, जोशिता वीजे, शबनम शकील, साइमा ठाकोर, टिटास साधु।

दौर के टी20 मैच

भारत ए और ऑस्ट्रेलिया कार्यक्रम :
पहला टी20 मैचः 7 अगस्त (मैके)
दूसरा टी20 मैचः 9 अगस्त (मैके)
तीसरा टी20 मैचः 10 अगस्त (मैके)
एकदिवसीय कार्यक्रम
पहला एकदिवसीय मैच : 13 अगस्त (ब्रिसबेन)
दूसरा एकदिवसीय मैचः 15 अगस्त (ब्रिसबेन)
तीसरा एकदिवसीय मैच : 17 अगस्त (ब्रिसबेन)
चार दिवसीय मैच : 21-24 अगस्त (एलन बॉर्डर फील्ड)

ऋषभ की देखभाल कर रही डॉक्टरों की टीम : बीसीसीसीआई

मुम्बई (ईएमएस)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीसीआई) ने कहा है कि इंग्लैंड के खिलाफ लॉर्ड्स में जारी तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में चोटिल हुए विकेटकीपर विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत अभी ठीक हैं और डॉक्टरों की एक टीम उनकी देखरेख कर रही है। ऋषभ को विकेटकीपिंग करते हुए पहले ही दिन अंगुली में चोट लग गयी। जिसके कारण उन्हें मैदान छोड़ना पड़ा। ऐसे में उनकी जगह ध्रुव जुरेल को विकेटकीपिंग के लिए उतारा गया।
बीसीसीआई के अनुसार ऋषभ जब मैदान पर इलाज से राहत नहीं मिली तो उन्हें हटाकर जुरेल को विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी दी गई, हालांकि जुरेल अंतिम ग्यारह में शामिल नहीं हैं। ऋषभ को ये चोट तब लगी जब जसप्रीत बुमराह के 34वें ओवर में एक गेंद को रोकने के प्रयास में उन्होंने छलांग मार मारी पर गेंद से उनकी अंगुली में चोट लग गयी।
इसके कारण खेल भी कुछ देर के लिए रुका और उन्हें फिजियो ने मैदान पर ही प्राथमिक इलाज दिया। इसके बाद खेल फिर शुरू हुआ पर ऋषभ दर्द ls परेशान दिखे और बुमराह का ओवर खत्म होने के बाद उन्हें मैदान से बाहर जाना पड़ा। इस विकेटकीपर बल्लेबाज ने इस सीरीज के दोनो ही मैचों में काफी रन बनाये हैं। ऐसे में अगर वह आगे नहीं खेल पाते हैं तो ये टीम के लिए करारा झटका होगा। उनकी जगह पर शामिल जुरेल इस मैच में केवल विकेटकीपिंग कर सकते है पर बल्लेबाजी नहीं क्योंकि ऋषभ को को सिर या आंख में चोट नहीं लगी है। इसलिए कन्कशन सब्सटीट्यूट का इस्तेमाल इसलिए नहीं किया जा सकता। ऐसे में टीम उम्मीद कर रही है कि उपकप्तान पंत फिट होकर बल्लेबाजी कर सकें।
इस मैच में मेजबान इंग्लैंड ने पहले दिन का खेल समाप्त होने पर अपनी पहली पारी में चार विकेट पर 251 रन बना लिए थे। जो रूट 99 नाबाद और बेन स्टोक्स 39 पर खेल रहे थे। रूट और स्टोक्स ने चौथे विकेट के लिए 79 रन बनाये। वहीं भारतीय टीम की ओर से नीतीश कुमार रेड्डी ने पहले ही ओवर में दो विकेट लिए।

जुरेल नहीं कर सकेंगे ऋषभ की जगह पर बल्लेबाजी

यहां इंग्लैंड के खिलाफ जारी तीसरे क्रिकेट टेस्ट के पहले ही दिन भारतीय टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत की अंगुली में चोट लग गयी जिसके बाद उनकी जगह पर विकेकीपिंग करने के लिए ध्रुव जुरेल मैदान पर उतरे। ऋषभ के अब इस मैच मे विकेटकीपिंग करने की संभावना नहीं है। ऐसे में जुरेल ही विकेटकीपिंग संभालेंगे। जुरेल इस मैच में केवल विकेटकीपिंग ही करेंगे बल्लेबाजी नहीं कर पायेंगे। इसका कारण आईसीसी का एक नियम है। आईसीसी के इस नियम के अनुसार अगर कोई खिलाड़ी चोटिल होता है तो उसका सब्स्टीट्यूट खिलाड़ी ना तो गेंदबाजी कर सकता है और ना बल्लेबाजी या कप्तानी अंपायरों की सहमति से वह विकेट कीपिंज जरूर कर सकता है। नियमों में आगे कहा गया है, केवल एक नामित खिलाड़ी ही बल्लेबाजी कर सकता है और.ऐसा तब भी कर सकता है, जब पहले एक सबस्टीट्यूट प्लेयर ने उसके लिए काम किया हो।

स्वीटजरलैंड में यूईएफए महिला यूरो लीग फुटबॉल में नार्वे की सिगनी गवापसेट गोल करने के बाद उत्साहित होती हुई।

भारतीय मूल के एक स्पिनर ने एक ही मैच में ली दो हैट्रिक

लंदन (ईएमएस)। इंग्लैंड में भारतीय मूल के एक स्पिनर किशोर कुमार साधक ने ऐसा ऐसा रिकार्ड बनाया है जो आने वाले कई साल तक शायद ही टूट पाये। टू काउंटीज चैंपियनशिप डिविजन सिक्स के मैच में किशोर ने लगातार दो ओवर में दो हैट्रिक लेकर अपनी टीम इप्सविच और कोलचेस्टर क्रिकेट क्लब को जीत दिलायी। क्रिकेट इतिहास में एक ही मैच में दो हैट्रिक लेने का रिकॉर्ड पहले भी बना है, पर उसमें एक खास फर्क है। 2017 में मिशेल स्टार्क और 1912 में जिमी मैथ्यूज ने यह कारनामा किया था, लेकिन उन्होंने यह हैट्रिक अलग-अलग पारियों में ली थी। जबकि किशोर ने लगातार दो ओवर में, एक ही पारी में दो हैट्रिक ली किशोर ने केसग्रेव क्रिकेट क्लब के खिलाफ खेले गए इस मैच में कुल 6 ओवरों में केवल 21 रन खर्च देकर 6 विकेट लिए। उन्होंने अपने चौथे ओवर की अंतिम तीन गेंदों पर हैट्रिक लेकर विरोधी टीम की बल्लेबाजी को धवस्त कर दिया। इसके बाद उन्होंने अगले ओवर की तीसरी, चौथी और पांचवीं गेंद पर फिर से तीन बल्लेबाजों को आउट कराकर दूसरी हैट्रिक ली। कुल मिलाकर 8 गेंदों में 6 विकेट लेना किसी भी गेंदबाज के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

लंदन में पोलैंड की इगा स्वीटेक महिलाओं के एकल सेमीफाइनल में जीत के बाद उत्साहित होती हुई।

जिम्बाब्वे ने त्रिकोणीय श्रृंखला के लिए रजा को बनाया कप्तान

हरारे (ईएमएस)। जिम्बाब्वे ने ऑलराउंडर सिकंदर रजा को दक्षिण अफ्रीका और न्यूजीलैंड के साथ होने वाली आगामी टी20 त्रिकोणीय सीरीज के लिए टीम का कप्तान बनाया है। जिम्बाब्वे क्रिकेट ने इस त्रिकोणीय सीरीज के लिए 16 सदस्तीय टीम घोषित की है। ये सीरीज 14 से 26 जुलाई तक हरारे स्पोर्ट्स क्लब में खेली जाएगी। जिसमें प्रत्येक टीम राउंड-रॉबिन चरण में मुकाबला करेगी जिसके बाद शीर्ष दो टीमों के बीच फाइनल मुकाबला होगा। इस सीरीज के लिए जिम्बाब्वे की टीम में अनुभवी के साथ ही उभरते खिलाड़ियों को रखा गया है। टीम में बाएं हाथ के तेज गेंदबाज रिचर्ड नगारवा के अलावा तेज गेंदबाज ब्लेसिंग मुजराबानी को भी रखा गया है। इसके अलावा युवा ऑलराउंडर ब्रायन बेनेट को भी शामिल किया गया है। टीम में रयान बर्ल, टोनी मुनयोंगा और ताशिंगा मुसेकिवा भी शामिल हैं, जिन्होंने फरवरी में आयरलैंड के खिलाफ जिम्बाब्वे के पिछले टी20आई मैच में शानदार प्रदर्शन किया था। टीम में तीन नए खिलाड़ी भी शामिल हैं जो टी20 प्रारूप में अभी तक नहीं खेले हैं जिनमें विकेटकीपर-बल्लेबाज तफादज़्वा त्सिगा, बाएं हाथ के तेज गेंदबाज न्यूमैन न्यामहुरी और लेग स्पिनर विंसेंट मसेकेसा आदि हैं। जिम्बाब्वे इस त्रिकोणीय सीरीज में 18 जुलाई को न्यूजीलैंड से खेलने से पहले 14 जुलाई को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगा। इसके बाद 20 जुलाई को उसका मुकाबला दक्षिण अफ्रीका से होगा। वहीं 24 जुलाई को न्यूजीलैंड के खिलाफ मैच से वह अपने राउंड-रॉबिन मुकाबलों का समापन करेगा। तालिका में शीर्ष दो टीमों का फाइनल 26 जुलाई को होगा।
जिम्बाब्वे टीम : सिकंदर रजा (कप्तान), ब्रायन बेनेट, रयान बर्ल, ट्रेवर ग्वांडू, क्लाइव मदांडे, वेस्ली मधेवेरे, टिनोटेंडा मापोसा, वेलिंगटन मसाकाद्ज़ा, विंसेंट मासेकेसा, टोनी मुनयोंगा, ताशिंगा मुसेकिवा, ब्लेसिंग मुजरबानी, डायोन मायर्स, रिचर्ड नगारवा, न्यूमैन न्यामहुरी, तफदजवा त्सिगा।

जिम्बाब्वे और आयरलैंड से खेले मूर ने संन्यास लिया

आयरलैंड के बल्लेबाज पीटर मूर ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। 35 साल के मूर ने अपने करियर में 85 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले। उन्होंने आयरलैंड से पहले जिम्बाब्वे की ओर से खेला था। हरारे में जन्मे मूर ने अपना आखिरी अंतरराष्ट्रीय मैच इसी साल फरवरी में बुलावायो में जिम्बाब्वे के खिलाफ खेला था। इस क्रिकेटर ने नवंबर 2014 में, मीरपुर में बांग्लादेश के खिलाफ एकदिवसीय मैच के दौरान अपना अंतरराष्ट्रीय पदार्पण किया। उन्होंने 2016 में न्यूजीलैंड और अफगानिस्तान के खिलाफ अपना टेस्ट और टी20 अंतरराष्ट्रीय पदार्पण किया। उनके 49 एकदिवसीय, 21 टी20 अंतरराष्ट्रीय और 8 टेस्ट मैच ज़िम्बाब्वे के लिए खेले। उन्होंने अक्टूबर 2022 में आयरलैंड के लिए लिए अनुमति ली क्योंकि उनकी नानी की आयरिश विरासत के कारण उनके पास आयरिश पासपोर्ट था। उन्हें पहली बार मार्च-अप्रैल 2023 में बांग्लादेश और श्रीलंका के टेस्ट दौरों के लिए आयरलैंड की टीम में शामिल गया था। इसके बाद उन्होंने आयरलैंड के लिए सात टेस्ट मैच खेले। मूर ने कहा, मुझे अब भी लगता है कि शीर्ष स्तर पर मेरे अंदर तीन या चार साल का अच्छा क्रिकेट खेलने का मौका है। भले ही पिछले कुछ सालों में मैं जिम्बाब्वे के लिए कुछ विश्व कप नहीं खेल पाया पर मुझे उम्मीद है कि मैं अगले विश्व कप में आयरलैंड के लिए खेल सकूंगा। हालांकि मूर ने आयरलैंड के लिए कभी कोई एकदिवसीय या टी20 मैच नहीं खेला। वहां जाने के बाद उनका टेस्ट प्रदर्शन भी गिर गया, जिम्बाब्वे के लिए आठ टेस्ट मैचों में उनका औसत 35.53 रहा जिसमें 5 अर्धशतक शामिल थे, लेकिन आयरलैंड के लिए उनका औसत केवल 14.35 रहा जिसमें एक अर्धशतक शामिल था।

एफआईएच जूनियर महिला विश्व कप हॉकी टूर्नामेंट इस साल के अंत में होगा

सैंटियागो (ईएमएस)। एफआईएच जूनियर महिला विश्व कप हॉकी टूर्नामेंट इस साल के अंत में होगा। इसमें भारतीय टीम का पहला मुकाबला एक दिसंबर को नामीबिया से होगा। इसी दिन मेजबान टीम चिली का भी पहला मुकाबला नीदरलैंड से होगा। नीदरलैंड अभी जूनियर महिला विश्व चैंपियन है और दुनिया की नंबर एक टीम है। इस टूर्नामेंट की शुरुआत जर्मनी और आयरलैंड के बीच मैच से होगी।
यह टूर्नामेंट 1 से 13 दिसंबर, 2025 तक सैंटियागो शहर में खेला जाएगा और इसमें 24 टीमें शामिल होंगी। भारतीय टीम को इसमें ग्रुप सी में रखा गया है। भारतीय टीम के साथ इस ग्रुप में जर्मनी, आयरलैंड और नामीबिया की टीमें हैं। टूर्नामेंट में भारतीय टीम 3 दिसंबर को जर्मनी और 5 दिसंबर को आयरलैंड से खेलेगी। महिला जूनियर हॉकी वर्ल्ड कप पिछली बार साल 2023 में सैंटियागो में हुआ और तब 16 टीमों ने भाग लिया था। इस बार टीमों की संख्या बढ़कर 24 हो गयी है। ऐसे में प्रशंसकों को अधिक मुकाबले देखने को मिलेंगे।
टीमें और उनके पूल इस प्रकार हैं :
ग्रुप ए में नीदरलैंड, जापान, चिली, मलेशिया
ग्रुप बी में अर्जेंटीना, बेल्जियम, ज़िम्बाब्वे, वेल्स
ग्रुप सी में भारत, जर्मनी, आयरलैंड, आयरलैंड
ग्रुप डी में इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका, चीन और ऑस्ट्रिया
ग्रुप ई में ऑस्ट्रेलिया, स्पेन, कनाडा और स्कॉटलैंड
ग्रुप एफ में संयुक्त राज्य अमेरिका, कोरिया, न्यूजीलैंड और उरुग्वे शामिल हैं।
क्रॉसओवर और नॉकआउट राउंड के मैच 7 दिसंबर से खेले जाएंगे, जबकि फाइनल 14 दिसंबर को खेला जाएगा।

फीफा रैंकिंग में भारत को हुआ नुकसान, 133वें स्थान पर खिसकी

नई दिल्ली (ईएमएस)। भारतीय फुटबॉल टीम का विश्व फुटबॉल की शीर्ष संस्था (फीफा) रैंकिंग में नुकसान हुआ है। भारतीय पुरुष फुटबॉल टीम फीफा रैंकिंग में छह स्थान टूटकर 133वें स्थान पर खिसक गई है। भारतीय टीम की रैंकिंग में गिरावट का कारण जून में मिली दो हार रही हैं। उसे थाईलैंड और फिर एशियाई कप क्वालीफाइंग दौर में हांगकांग से हार का सामना करना पड़ा। इससे टीम की रैंकिंग पिछले नौ साल में सबसे नीचे हो गयी है। इससे पहले भारतीय टीम की सबसे खराब रैंकिंग दिसंबर 2016 में थी तब वह 135वें स्थान पर फिसल गयी थी। भारतीय टीम की अब तक की सबसे अच्छी रैंकिंग फरवरी 1996 में 94 रही थी। भारतीय टीम के अभी 1113.22 रेटिंग अंक हैं जबकि पहले उसके 1132.03 रेटिंग अंक थे। वह 46 एशियाई देशों में 24वें स्थान पर है जिसमें जापान (17वीं रैंकिंग) के साथ ही सबसे आगे है। हांगकांग के खिलाफ हार से टीम की 2027 एशियाई कप के लिए क्वालीफाई करने की उम्मीद को भी झटका लगा है। टीम को पिछले आठ में से केवल एक मैच में जीत मिली है। य जीत उसे मार्च में मालदीव से मिली थी। इस साल भारतीय टीम ने अभी तक चार मैच खेले हैं जिसमें से उसे एक ही जीत मिली है जबकि दो मुकाबलों में उसे हार का सामना करना पड़ा जबकि एक मैच ड्रॉ रहा है।

योगराज बोले गंभीर अच्छा काम कर रहे, सीरीज जीतेगी भारतीय टीम

चंडीगढ़ (ईएमएस)। पूर्व क्रिकेटर योगराज सिंह ने कहा है कि भारतीय टीम के कोच गौतम गंभीर अच्छा काम कर रहे हैं। इसलिए उनकी आलोचना न करें। योगराज के अनुसार गंभीर के मार्गदर्शन और शुभमन की कप्तानी में भारतीय टीम इस सीरीज में जरुर जीतेगी। दोनो ही टीमें अभी सीरीज में 1-1 से बराबरी पर हैं। अपने विवादास्पद बयानों के लिए चर्चाओं में रहने वाले योगराज ने कहा, भारतीय खिलाड़ी लगातार बेहतर प्रदर्शन कर अपना खेल सुधार रहे हैं। हमें हमेशा उनका समर्थन करना चाहिए। इसके अलावा गंभीर को लेकर भी नकारात्मक टिप्पणी नहीं करनी चाहिये क्योंकि वह अच्छा काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, गंभीर, युवराज सिंह और राहुल द्रविड़ अब क्रिकेट को अपनी तरफ से दे रहे हैं

क्योंकि क्रिकेट से उन्हें बहुत कुछ मिला है। अब अगर हमारी टीम सीरीज हारती भी है तो भी हमें उनका समर्थन करन चाहिए। योगराज ने उम्मीद जताई है कि टीम इंग्लैंड के खिलाफ इस सीरीज में बेहतर करेगी। उन्होंने कहा, अगर आप हारते हैं तो आपको सफाई नहीं देना है; अगर आप जीतते हैं तब भी आपको कुछ समझाने की जरूरत नहीं है। हमें उम्मीद है कि हम शुभमन गिल की कप्तानी में सीरीज जीतेंगे।
इससे पहले गंभीर का कोच के तौर पर रिकॉर्ड अच्छा नहीं रहा है। भारतीय टीम को उनके कोच रहते पहले न्यूजीलैंड और फिर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपनी ही धरती पर हार का सामना करना पड़ा है। वहीं अब इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज की शुरुआत टीम रही है और टीम ने अच्छी बल्लेबाजी और गेंदबाजी का प्रदर्शन किया है। युवा कप्तान शुभमन गिल ने जिस आत्मविश्वास से कप्तानी की है उससे उनके बढ़े हुए मनोबल का अंदाजा होता है।

मेरे लिए प्रथम श्रेणी क्रिकेट सबसे महत्वपूर्ण : गंभीर

भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने कहा है कि वह नहीं बल्कि भारतीय क्रिकेट को जिससे लाभ हो वह महत्वपूर्ण है। इसलिए ड्रेसिंग रूम क्या चल रहा है और क्या होना चाहिये ये अहम हैं। गंभीर ने ये बात लॉर्ड्स में तीसरे टेस्ट के दौरान आधिकारिक प्रसारणकर्ता से बातचीत के दौरान कही। पूर्व क्रिकेटर चेतेश्वर पुजारा से बात करते हुए गंभीर ने कहा, शायद यह पहली बार है कि तीनों विभागों में बदलाव हो रहा है। मुझे लगता है कि मेरे लिए प्रथम श्रेणी क्रिकेट मेरे देश में सबसे अहम प्रारूप है। उन्होंने यह भी कहा कि इस टीम में हर दिन बढ़ने, सीखने और प्रतिस्पर्धा करने के बारे में है।
उन्होंने आगे कहा, यह हर दिन लड़ने के बारे में है। यह हर दिन तिरंगे का प्रतिनिधित्व करने के बारे में है। गंभीर अहम नहीं हैं। भारतीय क्रिकेट महत्वपूर्ण है। हर किसी को उस ड्रेसिंग रूम की संस्कृति के बारे में अपनी राय रखने का अधिकार है। मेरे लिए हर राय का महत्व है।
गंभीर सीमित ओवरों के बेहतरीन कोच रहे हैं। उन्होंने मुख्य कोच के रूप में आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 जीती है और सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में युवा टी20आई टीम को जीत दिदाीय पर अब तब टेस्ट मैचों में उनका प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा है। टीम को पहले न्यूजीलैंड और फिर ऑस्ट्रेलिया से हार मिली। इससे टीम विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्लूयटीसी) फाइनल में भी नहीं पहुंच पायी। वापस मिल गई जिसमें भारत घर से बाहर 1-3 से हार के साथ हारा। इसकी वजह से भारत को आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में लगातार तीन टेस्ट मैचों में हार का सामना करना पड़ा। अब तक उनकी कोचिंग में भारत ने अपने 12 टेस्ट मैचों में से केवल चार जीते हैं, सात हारे हैं और एक ड्रॉ रहा है।

नीतिश ने कहा कमिंस और मोर्कल से सुझावों से मेरी गेंदबाजी बेहतर हुई

लंदन (ईएममएस)। भारतीय क्रिकेट टीम के ऑलराउंडर नितीश कुमार रेड्डी ने इंग्लैंड के खिलाफ यहां लॉर्ड्स में हुए तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में गेंदबाजी कर सभी का प्रभावित किया है। पहले ही दिन नितीश ने दो विकेट लिए। नितीश को मिली इस सफलता का कारण सही जगह पर गेंद फेंकना रहा है। इस क्रिकेटर ने अपनी अच्छी गेंदबाजी का श्रेय कोच मोर्ने मोर्कल और ऑस्ट्रेलियाई कप्तान कप्तान पैट कमिंस को दिया है। रेड्डी ने पहले दिन जैक क्रॉली और बेन डकेट के विकेट लिए थे। रेड्डी ने कहा कि उन्होंने इंग्लैंड दौरे से पहले आईपीएल मैचों के दौरान कमिंस से सलाह मांगी थी और उनकी सलाह से भी उन्हें काफी लाभ हुआ। कमिंस आईपीएल में सनराइजर्स हैदराबाद की कप्तानी कर रहे थे। इस दौरान कमिंस ने उन्हें बताया कि इंग्लैंड में मौसम भी काफी बड़ भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि दौरे की शुरुआत से ही निरंतरता के साथ गेंदबाज़ी करना उनका मुख्य लक्ष्य रहा है। इस 22 वर्षीय खिलाड़ी ने पहले सत्र में भारत को सफलताएं दिलाईं। रेड्डी ने कहा, ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद मुझे लगा कि मुझे अपनी गेंदबाजी और अपनी निरंतरता में सुधार करना होगा। मैंने इसी पर ध्यान दिया। मैंने कमिंस से कुछ टिप्स मांगे हैं और वह मुझे बता रहे हैं कि चीजें कैसे होतीं, मैं कैसे आगे बढ़ सकता हूं। कमिंस के साथ यह मेरे लिए एक शानदार अनुभव रहा है। रेड्डी ने कहा, मैंने कमिंस से ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड में गेंदबाजी में अंतर के बारे में पूछा। यह मेरा पहला दौरा है। उन्होंने कहा, यह कोई अलग बदलाव नहीं होगा। आप बस मौसम की स्थिति देखें और उसी के अनुसार गेंदबाजी करें। बस जितना हो सके सीखने की कोशिश करें। रेड्डी ने आगे कहा कि गेंदबाजी कोच मोर्कल के साथ काम करना उनके विकास के लिए बेहद फायदेमंद रहा है और उन्हें उनसे सीखने में मजा आता है। उन्होंने कहा, इस दौरे पर भी मोर्ने मोर्कल के साथ काम करना मेरे लिए बहुत अच्छा रहा है। वह कुछ हफ़्तों से मेरे साथ काम कर रहे हैं और हम मेरी गेंदबाजी में अच्छी प्रगति और निरंतरता देख रहे हैं।

टॉस हारने में सबसे आगे है भारतीय टीम

लॉर्ड्स (ईएमएस)। भारतीय क्रिकेट टीम टॉस हारने के मामले में शीर्ष पर पहुंच गयी है। इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट मैच में टॉस हारने के साथ ही भारतीय टीम के नाम ये अनचाहा रिकार्ड दर्ज हो गया है। भारतीय टीम अब तक लगातार 13 टॉस हारी है। वहीं वेस्ट इंडीज की टीम 12 बार टॉस हारी थी। इंग्लैंड के खिलाफ इस टेस्ट सीरीज में भारतीय कप्तान शुभमन गिल तीनों मैचों में टॉस हारे हैं। भारतीय टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव ने 2025 में आखिरी बार इंग्लैंड के खिलाफ टी20 मैच के दौरान टॉस जीता था। भारत के नाम सबसे ज्यादा टॉस हारने का रिकॉर्ड है। भारत 31 जनवरी 2025 से 10 जुलाई 2025 तक कुल 13 मैचों में टॉस हारा है। वहीं वेस्टइंडीज इस सूची में दूसरे नंबर पर है। इंडीज टीम 2 फरवरी 1999 से 21 अप्रैल 1999 तक कुल 12 टॉस हारी है। वहीं इंग्लैंड की टीम 17 दिसंबर 2022 से 12 मार्च 2023 तक कुल 11 मैचों में टॉस हारी हैं।

आयरलैंड के कर्टिस ने पांच गेंदों पर पांच विकेट लेकर नया विश्व रिकॉर्ड बनाया

मुम्बई (ईएमएस)। आयरलैंड के ऑलराउंडर कर्टिस कैंपर ने पांच गेंदों में पांच विकेट लेकर एक नया विश्व रिकार्ड बनाया है। कर्टिस ये उपलब्धि हासिल करने वाले पहले क्रिकेटर हैं। इस क्रिकेटर ने यह विश्व रिकॉर्ड इंटर-प्रांतीय टी20 ट्रॉफी में मुंस्टर रेड्स की ओर से खेलते हुए नॉर्थ-वेस्ट वॉरियर्स के पांच विकेट लेकर बनाया। इस क्रिकेटर ने 2.3 ओवर में ही केवल 16 रन देकर यह 5 विकेट लिए। एक समय पर नॉर्थ-वेस्ट वॉरियर्स के पांच विकेट पर 87 रन थे लेकिन कर्टिस की घातक गेंदबाजी से टीम ढह गयी और 88 रनों पर ही आउट हो गयी।।
कर्टिस के सामने विरोधी टीम के बल्लेबाज टिक नहीं पाये। इससे अपने दूसरे और तीसरे ओवर में सभी पांच विकेट गिरा दिया। 189 रनों के लक्ष्य का पीछ करते हुए नॉर्थ-वेस्ट वॉरियर्स की टीम कर्टिस का सामना नहीं कर पायी। उनकी गेंदों पर एक के बाद एक बल्लेबाज पेवेलियन लौटते गये। जेरेड विल्सन को उन्होंने बोल्ड किया, उनकी अगली गेंद पर, ग्राहम ह्यूम एलबीडब्ल्यू हुए। इसके बाद कैंपर ने हैट्रीक पूरी की। इस दौरान उन्होंने एंडी मैकब्राइन को डीप मिडविकेट पर आउट। कैंपर ने कहा कि जब अन्हें पांच विकेट के रिकॉर्ड के बारे में पता चला तो वह हैरान हो गये। साथ ही कहा कि किस प्रकार से खुशी जाहिर करें। ये भी वह समझ नहीं पा रहे थे।

लारा ने मुल्डर से बात कर कहा,उन्हें मेरा रिकार्ड तोड़ना चाहिये था

बुलावायो (ईएमएस)। वेस्टइंडीज के महान बल्लेबाज ब्रायन लारा ने दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट टीम के कप्तान वियान मुल्डर से मुलाकात कर कहा है कि उन्हें मेरा 400 रनों का रिकार्ड तोड़ना था। इससे पहले वियान ने जिम्बाब्वे के खिलाफ मैच में जब वह 367 रन बनाकर खेल रहे थे तभी पारी घोषित कर दी थी। जब उनसे पूछा गया कि पारी क्यों घोषित की गयी थी। तब इस क्रिकेटर ने कहा था कि वह महान बल्लेबाज ब्रायन लारा का 400 रनों का रिकार्ड नहीं तोड़ना चाहते थे। उनका मानना था कि ये रिकॉर्ड इस महान क्रिकेटर के नाम पर ही रहना चाहिये। वहीं अब लारा ने मुल्डर से बात की है और कहा कि उन्हें उनका रिकॉर्ड तोड़ना चाहिए था। मुल्डर और लारा की यह बातचीत बुलावायो टेस्ट में मेजबान जिम्बाब्वे के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका की जीत के बाद हुई। इस मैच में मुल्डर ने टेस्ट इतिहास की पांचवीं सबसे बड़ी पारी का रिकॉर्ड बनाया।
मुल्डर ने कहा, 'मैंने लारा से थोड़ी बहुत बात की। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं अपनी खुद की विरासत गढ़ रहा हूं और मुझे उसके लिए जाना चाहिए था। उन्होंने कहा कि रिकॉर्ड्स टूटने के लिए ही होते हैं और उन्होंने मुझे शुभकामनाएं दी कि भविष्य में मैं कभी भी उस स्थिति में रहूं तो मैं उससे भी ज्यादा रन बनाऊं, जितने उन्होंने बनाए थे।' इससे पहले वियान के पारी घोषित करने के फैसले की वेस्टइंडीज के ही आक्रामक बल्लेबाज क्रिस गेल ने आलोचना की थी। उन्होंने कहा कि ऐसे मौके कभी-कभार आते हैं और अगर मुल्डर की तरह उन्हें कभी ऐसा मौका मिला होता तो वह लारा का रिकॉर्ड तोड़ने की कोशिश जरूर करते। लारा से बातचीत के बाद भी मुल्डर घोषित करने के अपने फैसले को सही मानते हैं। उन्होंने कहा, यह सुपर स्पेशल था और कुछ ऐसा था जिसके बारे में मैंने सपने में भी नहीं सोचा होगा।

क्रिकेटर यश दयाल हाई कोर्ट पहुंचे, गिरफ्तारी पर रोक लगाने की मांग की

प्रयागराज (ईएमएस)। यौन शोषण के आरोपों में फंसे क्रिकेटर यश दयाल ने इलाहाबाद हाई कोर्ट में एक याचिका दायर कर गिरफ्तारी पर रोक लगाने की मांग की है। यश के खिलाफ एक युवती ने शादी का झांसा देकर मानसिक और शारीरिक शोषण का आरोप लगाते हुए एफआईआर दर्ज करायी है। वहीं अब यश ने अपनी याचिका में इसी एफआईआर को रद्द करने की मांग की है। यश पर आरोप लगाने वाली लड़की का कहना है कि वे दोनो पिछले पांच साल से रिलेशनशिप में थे। इस दौरान दयाल ने शादी का वादा करके उसका यौन शोषण किया। यह मामला गाजियाबाद के इंदिरापुरम पुलिस स्टेशन में दर्ज किया गया है। हाई कोर्ट इस मामले में अगले सप्ताह सुनवाई कर सकता है।
यश दयाल पर भारतीय दंड संहिता (बीएनएस) की धारा 69 के तहत मामला दर्ज किया गया है। धारा 69 धोखे से यौन संबंध से संबंधित है। युवती का आरोप है कि दयाल ने करीब पांच साल पहले उससे मुलाकात की थी। दयाल ने उससे शादी करने का वादा किया था। लड़की का आरोप है कि दयाल शादी को टालता रहा। बाद में उसे पता चला कि दयाल का दूसरी महिलाओं से भी संबंध है। लड़की ने सबसे पहले 21 जून को मुख्यमंत्री के ऑनलाइन शिकायत पोर्टल (आईजीआर) पर शिकायत दर्ज कराई थी। इसके बाद पुलिस ने एफआई आर दर्ज की। अब यश दयाल ने हाई कोर्ट में याचिका दायर कर FIR को रद्द करने और गिरफ्तारी पर रोक लगाने की मांग की है। कोर्ट इस मामले पर अगले सप्ताह सुनवाई करेगा।

सेंसेक्स 690 अंक गिरकर 82,500 पर बंदः निफ्टी भी 205 अंक लुढ़का; आईटी, ऑटो और रियल्टी शेयर्स सबसे ज्यादा फिसले

मुंबईः हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार (11 जुलाई) को सेंसेक्स 690 अंक गिरकर 82,500 के स्तर पर बंद हुआ। निफ्टी में 205 अंक की गिरावट रही, ये 25,150 के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 23 शेयरों में गिरावट और 7 में तेजी रही। टीसीएस, महिंद्रा और टाटा मोटर्स सहित कुल 14 शेयरों में 1% से 3.5% तक की गिरावट रही। हिंदुस्तान यूनिलीवर 4.65% ऊपर बंद हुआ। निफ्टी के 50 शेयरों में से 39 में गिरावट और 11 में तेजी रही। एनएसई के आईटी में 1.78%, ऑटो में 1.77%, मीडिया में 1.60% और रियल्टी शेयर में 1.21% की गिरावट रही। वहीं, एफएमसीजी, फार्मा और हेल्थकेयर में तेजी चढ़कर बंद हुए।

ग्लोबल मार्केट में तेजी

एशियाई बाजारों में जापान का निक्केई 0.19% नीचे 39,570 के स्तर पर और कोरिया का कोस्पी 0.23% गिरकर 3,176 पर बंद हुआ। हॉन्गकॉन्ग का हैंगसेंग इंडेक्स 0.46% चढ़कर 24,140 पर और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.014% ऊपर 3,510 पर बंद हुआ। 10 जुलाई को अमेरिका का डाउ जोन्स 0.43% ऊपर 44,651 पर बंद हुआ। वहीं, नैस्डेक कंपोजिट 0.094%चढ़कर 20,631 पर और एसएंडपी 500 0.27% ऊपर 6,280 पर बंद हुए। 10 जुलाई को विदेशी निवेशकों ने कैश सेगमेंट में 221.06 करोड़ रुपए और घरेलू निवेशकों ने 591.33 करोड़ रुपए की नेट खरीदारी की। जुलाई महीने में अब तक विदेशी निवेशकों ने 5,179.96 करोड़ रुपए के शेयर्स बेचे हैं। वहीं, घरेलू निवेशकों ने इस दौरान 8,844.35 करोड़ रुपए की नेट खरीदारी की है। जून महीने में विदेशी निवेशकों की नेट खरीदारी 7,488.98 करोड़ रुपए रही। वहीं, घरेलू निवेशकों ने भी महीनेभर में 72,673.91 करोड़ की नेट खरीदारी की थी।

स्मार्टवर्क्स का आईपीओ 60% सब्सक्राइब हुआ

स्मार्टवर्क्स के आईपीओ का आज दूसरा दिन है। सुबह 10 बजे तक यह 60% सब्सक्राइब हो चुका है। आईपीओ की शुरुआत बेहतर रही। पहले दिन गुरुवार (10 जुलाई) को यह आईपीओ 52.22% भर गया। कंपनी को एक करोड़ शेयरों की तुलना में 52.51 लाख शेयरों के लिए बोलियां मिल चुकी हैं। रिटेल निवेशकों ने अपने हिस्से का 57% तक खरीदा। वहीं बड़े निवेशकों में नॉन-इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स का हिस्सा 1.04 गुना भर गया। कंपनी इस आईपीओ से करीब 583 करोड़ रुपए जुटाना चाहती है। इसका इस्तेमाल कारोबार को बढ़ाने और कर्ज कम करने के लिए करेगी। यह इश्यू 14 जुलाई को बंद हो जाएगा। यह देश की सबसे बड़ी 'मैनेज्ड कैंपस ऑपरेटर' कंपनी है। एक करोड़ वर्ग फीट स्पेस मैनेज करती हैं। गूगल, ग्रो, मेक माइ ट्रिप, एलएंडटी, ब्रिजस्टोन और फिलिप ग्लोबल जैसी 700 कंपनियां क्लाइंट है।

चांदी 1,10,300 के ऑल टाइम हाई पर:आज 2,366 बढ़ी कीमत

मुंबईः चांदी का दाम आज यानी शुक्रवार (11 जुलाई) को ऑल टाइम हाई पर पहुंच गया है। इंडिया बुलियन एंड ज्वैलर्स एसोसिएशन के अनुसार एक किलो चांदी की कीमत शुक्रवार को 2,366 रुपए बढ़कर 1,10,300 रुपए प्रति किलो पर पहुंच गई है। कल ये 1,07,934 रुपए पर थी। वहीं, 24 कैरेट सोने के दाम में भी आज तेजी है। ये 427 रुपए महंगा होकर 97,473 रुपए प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। कल सोने का दाम 97,046 रुपए प्रति 10 ग्राम था।

4 महानगरों में 10 ग्राम सोने की कीमत

दिल्लीः 24 कैरेट सोने की कीमत 99,150 और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,900 मुंबईः 24 कैरेट सोने की कीमत 99,000 और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,750 कोलकाताः 24 कैरेट सोने की कीमत 99,000 और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,750 चेन्नईः 24 कैरेट सोने की कीमत 99,000 और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,750।

यूएसआईएसपीएफ की कार्यसमिति में कुमार मंगलम बिड़ला शामिल

नई दिल्ली (ईएमएस)। आदित्य बिड़ला समूह के चेयरमैन कुमार मंगलम बिड़ला को अमेरिका-भारत रणनीतिक साझेदारी मंच (यूएसआईएसपीएफ) के निदेशक मंडल में शामिल किया गया है। इसके साथ ही वह संगठन की कार्यकारी समिति के सदस्य के रूप में भी कार्य करेंगे। यूएसआईएसपीएफ ने शुक्रवार को कहा कि बिड़ला की नियुक्ति से अमेरिका और भारत के बीच रणनीतिक और आर्थिक सहयोग को नई ऊर्जा मिलेगी। कुमार मंगलम बिड़ला ने कहा कि यूएसआईएसपीएफ की कार्यकारी समिति में शामिल होना मेरे लिए सम्मान की बात है। यह मंच दोनों देशों के बीच सहयोग, संवाद और विश्वास को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आदित्य बिड़ला समूह अमेरिका में सबसे बड़ा भारतीय ग्रीनफील्ड निवेशक है। समूह ने अब तक अमेरिका में 15 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक का निवेश किया है। इसका संचालन अमेरिका के 15 राज्यों में फैला हुआ है, जो मुख्यतः धातु, कार्बन ब्लैक और रसायन क्षेत्रों में कार्यरत है। यूएसआईएसपीएफ एक गैर-लाभकारी, गैर-सरकारी और निष्पक्ष संगठन है, जिसका उद्देश्य भारत और अमेरिका के बीच साझेदारी को बढ़ावा देना है। इसके सदस्यों में विश्व की प्रमुख कंपनियां शामिल हैं, जिनका संयुक्त बाजार मूल्य 10,000 अरब डॉलर से अधिक है।

एचसीएल टेक का प्रदर्शन जून तिमाही में रह सकता है कमजोर

नई दिल्ली (ईएमएस)। आईटी क्षेत्र की दिग्गज कंपनी एचसीएल टेक्नोलॉजीज़ को वित्त वर्ष 2025 की जून तिमाही में रेवेन्यू और नेट प्रॉफिट दोनों में गिरावट का सामना करना पड़ सकता है। विश्लेषकों के अनुमान के अनुसार कंपनी का प्रदर्शन इस तिमाही में मौसमी कारणों और सेवाओं के क्षेत्र में सुस्ती के कारण कमजोर रह सकता है। अनुमान है कि एचसीएल टेक का रेवेन्यू तिमाही-दर-तिमाही आधार पर 0.02 फीसदी घटकर 30,240.28 करोड़ रुपए रह सकता है। यह गिरावट मुख्यतः सर्विसेज बिज़नेस में सीजनल प्रोडक्टिविटी पास-थ्रू के चलते मानी जा रही है, जो हर साल की पहली तिमाही में सामान्य रूप से देखने को मिलता है। वहीं कंपनी को इस तिमाही में 4,145.13 करोड़ का मुनाफा होने का अनुमान है, जो पिछली तिमाही के मुकाबले 3.76 फीसदी कम है।

अब हॉस्पिटल्स भी अदाणी के! 60,000 करोड़ से बनेगा एआई वाला 'हेल्थ टेंपल', नए अंदाज में होगा इलाज

देश के अरबपति उद्योगपति गौतम अदाणी अब हेल्थकेयर के क्षेत्र में भी उतर रहे हैं। उन्होंने ऐलान किया है कि अदाणी परिवार स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और स्किल डेवलपमेंट के लिए पहले से घोषित 60,000 करोड़ के निवेश का बड़ा हिस्सा अब देश की हेल्थकेयर व्यवस्था को बेहतर बनाने में लगाएगा। शुक्रवार को मुंबई में देशभर के सर्जनों को संबोधित करते हुए गौतम अदाणी ने कहा कि भारत में लोगों की रीढ़ की समस्याएं बहुत बढ़ रही हैं और पीठ दर्द देश में दिव्यांगता का सबसे बड़ा कारण बन गया है। उन्होंने कहा, "अगर हमारे लोग खड़े नहीं हो सकते, तो भारत कैसे उठेगा?"

अदाणी समूह की योजना है कि मुंबई और अहमदाबाद से शुरुआत करते हुए वे 'अडाणी हेल्थकेयर टेंपल्स नाम के बड़े और आधुनिक अस्पताल बनाएंगे। हर एक अस्पताल में 1000 बेड होंगे और ये पूरी तरह से एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) पर आधारित होंगे। इस प्रोजेक्ट के लिए अदाणी ग्रुप ने अमेरिका की मशहूर मेयो क्लिनिक से साझेदारी की है। ये अस्पताल सिर्फ इलाज के लिए नहीं होंगे, बल्कि यहां मेडिकल रिसर्च, पढ़ाई और ट्रेनिंग भी एक ही परिसर में होगी। अदाणी ने कहा कि इन अस्पतालों का मकसद मौजूदा हेल्थ सिस्टम से मुकाबला करना नहीं, बल्कि उन जगहों पर काम करना है जहां अभी सुविधाएं नहीं हैं।

अदाणी ने कहा – "यह बदलाव नहीं, क्रांति है"

गौतम अदाणी ने कहा, "हमने हेल्थकेयर में इसलिए कदम रखा क्योंकि इस क्षेत्र में जो गति थी, वह काफी नहीं थी। यह सिर्फ बदलाव नहीं, एक क्रांति है।" उन्होंने मेडिकल प्रोफेशनल्स से अपील की कि वे इस मिशन से जुड़ें, चाहे वो एआई से स्पाइन डायग्नोसिस बनाना हो, मोबाइल ऑपरेशन थिएटर तैयार करना हो या फिर नई पीढ़ी के सर्जिकल सेंटर।

देशभर में और शहरों में भी फैलाएंगे ये अस्पताल

अदाणी ने बताया कि मुंबई और अहमदाबाद के बाद इस अस्पताल श्रृंखला को देश के दूसरे शहरों में भी ले जाया जाएगा। उन्होंने कहा कि उनकी कोशिश है कि देश में एक ऐसा हेल्थ सिस्टम तैयार हो, जो सस्ता, टिकाऊ और भविष्य की किसी भी महामारी के लिए तैयार हो।

इंफ्रास्ट्रक्चर से अब समाज सेवा की ओर रुख

अब तक ऊर्जा और इन्फ्रास्ट्रक्चर में बड़ी भूमिका निभाने वाले अदाणी समूह की ये नई पहल दिखाती है कि वे अब समाज को सीधे प्रभावित करने वाले क्षेत्रों में भी बड़े निवेश कर रहे हैं। गौतम अदाणी ने इसे भारत के उत्थान की "रीढ़" कहा और बताया कि उनका लक्ष्य अगले पांच साल में कुल $100 अरब (लगभग 8.3 लाख करोड़) का निवेश करना है।

अमेरिका की नीतियों से तंग आकर देशों ने डॉलर के विकल्प अपनाएः जीटीआरआई

- नई दिल्ली (ईएमएस)। अमेरिका की आर्थिक और भू-राजनीतिक नीतियों ने कई देशों को डॉलर की जगह अन्य मुद्राओं में व्यापार करने को मजबूर कर दिया है। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनीशिएटिव (जीटीआरआई) के मुताबिक अमेरिका द्वारा रूस, ईरान और वेनेजुएला पर लगाए गए प्रतिबंधों के चलते डॉलर आधारित भुगतान बाधित हुआ है, जिससे भारत, चीन और अन्य देशों ने स्थानीय मुद्राओं में व्यापार शुरू किया। जीटीआरआई के सह-संस्थापक ने कहा कि यह बदलाव कोई विद्रोह नहीं, बल्कि विवशता का परिणाम है। उदाहरणस्वरूप, रूस-चीन का 90 फीसदी से अधिक व्यापार अब रूबल और युआन में हो रहा है। भारत भी रूस से तेल खरीदने के लिए रुपये और यूएई की मुद्रा दिरहम का उपयोग कर रहा है। यहां तक कि सऊदी अरब भी अब तेल व्यापार में डॉलर के बजाय अन्य मुद्राओं को स्वीकार करने को तैयार है, जिससे 1970 के दशक के पेट्रो-डॉलर समझौते पर असर पड़ रहा है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने डॉलर छोड़ने वाले ब्रिक्स देशों पर 10 फीसदी शुल्क लगाने और रूसी तेल खरीदने वालों पर 500 फीसदी जुर्माना लगाने का प्रस्ताव रखा है। इससे वैश्विक व्यापारिक समझौते और कठिन हो सकते हैं।

सैमसंग की भारत में प्रोडक्शन बढ़ाने की तैयारीः एपल 97% आईफोन इंडिया में बना रहा

नई दिल्लीः एपल के बाद सैमसंग भी अमेरिकी बाजार में बेचे जाने वाले स्मार्टफोन्स भारत में बनाने की तैयारी में है। अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नई ट्रेड पॉलिसी और टैरिफ बढ़ोतरी के चलते कई कंपनियां अपने प्रोडक्शन बेस को लेकर रणनीति बदल रही हैं। सैमसंग फिलहाल वियतनाम से अमेरिका को स्मार्टफोन एक्सपोर्ट करता है, लेकिन अगर वहां से शिपमेंट पर 20% तक टैरिफ लगा तो कंपनी के लिए लागत बढ़ जाएगी। इस वजह से सैमसंग अब भारत में अपनी ग्रेटर नोएडा फैक्ट्री को अमेरिका के लिए एक्सपोर्ट हब बनाने की प्लानिंग कर रहा है। सैमसंग के ग्लोबल प्रेसिडेंट वॉन-जून चोई ने कहा कि हम पहले से ही भारत में कुछ ऐसे स्मार्टफोन बना रहे हैं, जो अमेरिका भेजे जा रहे हैं। अगर टैरिफ को लेकर कोई बड़ा फैसला हुआ, तो हम तुरंत अपने प्रोडक्शन को शिफ्ट कर सकते हैं।

अमेरिका में बिकने वाले 97% आईफोन भारत में बन रहे

एपल को ट्रम्प की धमकी के बावजूद अमेरिका में बिकने वाले लगभग सभी आईफोन भारत में बन रहे हैं। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक एपल ने मार्च से मई 2025 के बीच भारत से जितने भी आईफोन एक्सपोर्ट किए, उनमें से 97% अमेरिका भेजे गए हैं। इनकी कीमत 3.2 बिलियन डॉलर (27,000 करोड़ रुपए) रही। सिर्फ मई में ही करीब 1 बिलियन डॉलर यानी 8,600 करोड़ के आईफोन भारत से अमेरिका भेजे गए हैं। यानी एपल अब भारत में आईफोन एक्सक्लूसिव तौर पर अमेरिकी बाजार के लिए बना रहा है। जनवरी से मई 2025 तक भारत से अमेरिका को 4.4 बिलियन डॉलर(37 हजार करोड़) के आईफोन एक्सपोर्ट हो चुके हैं। ये आंकड़ा 2024 के 3.7 बिलियन एक्सपोर्ट से भी ज्यादा है। 2024 तक अमेरिका में बेचे जाने वाले 50% आईफोन भारत में बनते थे।

ट्रम्प ने एपल पर 25% टैरिफ लगाने की धमकी दी थी

डोनाल्ड ट्रम्प ने 23 मई को कहा था कि अमेरिका में बेचे जाने वाले आईफोन की मैन्युफैक्चरिंग भारत या किसी अन्य देश में नहीं, बल्कि अमेरिका में ही होनी चाहिए। उन्होंने एपल के सीईओ टिम कुक को बता दिया है कि यदि एपल अमेरिका में आईफोन नहीं बनाएगा तो कंपनी पर कम से कम 25% का टैरिफ लगाया जाएगा। ट्रम्प ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ पर लिखा, मैंने बहुत पहले एपल के टिम कुक को सूचित कर दिया था कि जो आईफोन अमेरिका में बेचे जाएंगे, वे अमेरिका में निर्मित किए जाएंगे, न कि भारत या कहीं और। यदि ऐसा नहीं होता है, तो एपल को कम से कम 25% का टैरिफ देना होगा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प नहीं चाहते कि एपल के प्रोडक्ट भारत में बने। पिछले हफ्ते ट्रम्प ने कंपनी के सीईओ टिम कुक से कहा था कि भारत में फैक्ट्रियां लगाने की जरूरत नहीं है।

दैनिक पंचांग

12 जुलाई 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

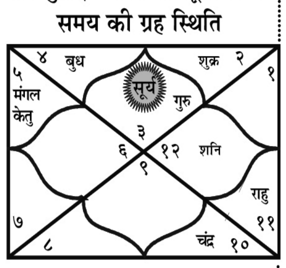

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	मिथुन में	**कर्क**	05.45 बजे से
चंद्र	मकर में	**सिंह**	08.02 बजे से
मंगल	सिंह में	**कन्या**	10.13 बजे से
बुध	कर्क में	**तुला**	12.24 बजे से
गुरु	मिथुन में	**वृश्चिक**	14.39 ब.से
शुक्र	वृष में	**धनु**	16.55 बजे से
शनि	मीन में	**मकर**	19.00 बजे से
राहु	कुंभ में	**कुंभ**	20.47 बजे से
केतु	सिंह में	**मीन**	22.19 बजे से
राहुकाल 9.00 से 10.30 बजे तक		**मेष**	23.50 बजे से
		वृष	01.30 बजे से
		मिथुन	03.28 बजे से

शनिवार 2025 वर्ष का 193 वा दिन **दिशाशूल** पूर्व **ऋतु** वर्षा। **विक्रम संवत्** 2082 **शक संवत्** 1947 **मास** श्रावण (दक्षिण भारत में आषाढ) **पक्ष** कृष्ण **तिथि** द्वितीया 01.47 बजे रात्र को समाप्त। **नक्षत्र** उत्तराषाढ़ा 06.36 बजे को समाप्त। **योग** विष्कुम्भ 19.32 बजे को समाप्त। **करण** तैतिल 14.01 बजे तदनन्तर गर 01.47 बजे रात्र को समाप्त। **चन्द्रायु** 16.6 घण्टे **रवि क्रान्ति** उत्तर 21° 58' **सूर्य** उत्तरायन **कलि अहर्गण** 1872403 **जूलियन दिन** 2460868.5 **कलियुग संवत्** 5126 **कल्पारंभ संवत्** 1972949123 **सृष्टि ग्रहारंभ संवत्** 1955885123 **वीरनिर्वाण संवत्** 2551 **हिजरी सन्** 1446 **महीना** मोहर्रम **तारीख** 16

दिन का चौघड़िया				रात का चौघड़िया			
काल	05.55 से	07.23 बजे तक		**लाभ**	05.37 से	07.10 बजे तक	
शुभ	07.23 से	08.51 बजे तक		**उद्वेग**	07.10 से	08.42 बजे तक	
रोग	08.51 से	10.19 बजे तक		**शुभ**	08.42 से	10.14 बजे तक	
उद्वेग	10.19 से	11.46 बजे तक		**अमृत**	10.14 से	11.47 बजे तक	
चर	11.46 से	01.14 बजे तक		**चर**	11.47 से	01.19 बजे तक	
लाभ	01.14 से	02.42 बजे तक		**रोग**	01.19 से	02.51 बजे तक	
अमृत	02.42 से	04.10 बजे तक		**काल**	02.51 से	04.23 बजे तक	
काल	04.10 से	05.37 बजे तक		**लाभ**	04.23 से	05.56 बजे तक	

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अतः आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■ Jagrutidaur.com, Bangalore

शब्द पहेली - 7344

■	1		2	■	3		4	■
5		■		■		■	6	7
	■	■	8	9		10	■	
11		12	■		■	13		
■	■	14		■	15		■	■
16			■	17	■	18		19
	■	20	21		22	■	■	
23	24	■		■		■	25	
■	26			■	27			■

बाएँ से दाएँ

1. नियंत्रण, घोड़े की रास-3
3. ध्वज, झंडा-3
5. माहिर, होशियार-2
6. बेल, लतिका-2
8. अस्वीकृत करना-4
11. अदृश्य-3
13. फटकार, धिक्कार-3
14. अधर, होठ-2
15. सलाह, सुझाव-2
16. आश्रय-3
18. अनुमान, अंदाज-3
20. आलता, माहुर-4
23. नासिका-2
25. रहस्य-2
26. रेखा, लाइनू-3
27. परिमूल्य-3

ऊपर से नीचे

1. लाख, सौ हजार-2
2. बारीक, सूक्ष्म-3
3. तीन घंटे का समय-3
4. समय, वक्त-2
5. कोतवाल-3
7. बल, जोर, दम-3
9. श्रवणेंद्रिय-2
10. जो लायक न हो-4
12. कृष्ण के बड़े भाई-4
16. दर्पण, शीशा-3
17. नौका -2
19. आसान, सरल-3
21. उपस्थित-3
22. रस से भरा-3
24. बीता हुआ दिन-2
25. रजनी, निशा-2

शब्द पहेली - 7343 का हल

■	आ	र	ति	■	अ	ना	मि	का
आ	ना	■	ल	जी	ज	■	■	र
ले	■	श	मि	■	र	न	■	तू
ख	ल	ब	ला	ना	■	र	ई	स
■	ग	■	ना	■	म	■	मा	■
ख	न	न	■	म	नो	न	न	य
लि	■	ल	क	■	रं	ग	■	ती
हा	■	■	हा	फि	ज	■	का	म
न	स	वा	र	■	न	ज	ला	■

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

अंकजाल - 6885

खाली स्थानों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर दाएँ से बाएँ एवं ऊपर से नीचे जोड़ना है जिसका सही उत्तर मटमैले रंग के खानों में दिया गया है.

■	13	13	35	19	19	■	22	26	■
30		8		5		■		2	11
32	7		8		5	■	3		11
■	■	■		7		4		6	24
19	7		3	■	7		5		16
29		7		9	■	2		8	13
31	5		7		6		■	■	■
10		5	■	6		4		8	28
13	8		■		6		4		27
■	30	32	■	26	15	20	11	13	■

अंकजाल 6884 का हल

■	18	11	37	37	■	■	14	17	■
22	3	4	7	8	■	7	2	5	14
21	7	2	5	7	■	9	2	3	14
■	8	5	6	7	3	6	4	5	44
■	■	■	2	5	5	8	6	4	30
32	6	8	7	3	5	6	■	■	■
34	7	3	2	7	1	5	6	3	■
16	7	8	1	■	8	2	3	4	17
18	5	6	7	■	8	9	1	2	20
■	25	25	■	■	30	52	10	9	■

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

अष्टयोग- 5829

4	2		3	5	1	
2	32	4	39	7	34	4
	1		4		5	2
	30	3	38	6	31	
1	2		6		7	
3	27	2	25	1	31	
	6	1	4		3	5

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5828 का हल

7	6	1	4	2	3	5
2	28	4	33	7	35	4
1	2	5	6	4	7	3
5	28	3	38	6	34	1
4	2	6	3	5	1	7
3	31	2	31	1	30	6
6	1	7	4	3	5	2

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

गणित पहेली - 5189

49		5		32		24	=	52
	■		■		■		■	
20		59		90		90	=	79
	■		■		■		■	
50		2		5		1	=	20
	■		■		■		■	
60		25		36		95	=	26
=	■	=	■	=	■	=	■	=
19		37		81		19	=	85 / 118

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

संकेत

खाली जगहों में आपको केवल (+), (-), (x) व (÷) के निशान लगाने हैं जिनका उत्तर (=) पूर्णतः मेल खाता हो.

गणित पहेली - 5188

130	÷	5	-	3	+	5	=	28
-	■	x	■	+	■	x	■	+
65	+	5	÷	2	+	5	=	40
-	■	+	■	+	■	-	■	-
50	-	25	+	10	-	20	=	15
+	■	÷	■	-	■	+	■	-
15	x	2	x	2	-	25	=	35
=	■	=	■	=	■	=	■	=
30	-	25	+	13	+	30	=	18 / 48

शब्दजाल - 6876

ब्रा	य	न	ला	रा	द	जै	क्स	का	लि	स
दा	वि	ल	ग	व	रा	हु	ल	द्र	वि	ड़
गि	म	हे	ला	ज	य	व	र्ध	ने	क	क
री	इं	र	स	चि	न	तें	दु	ल	क	र
मै	खु	ज	कु	लू	लं	का	यु	ग	व	ए
थ्यू	द	ल	मा	य	ख	पू	व	हि	र	ड
है	लो	म	र	म	प	र	रा	र	र	म
ड	र्ज	ल्जा	सं	धा	उ	क	ज	लो	श	गि
न	बा	म	ग	ब्रा	ह	ल	सिं	श	प	ल
तें	दु	आ	का	व	जी	र्त	ह	बें	हा	क्रि
क	दु	ल्हे	रा	नी	ल	गा	य	क	प	स्ट

शब्द जाल में 10 शीर्ष बल्लेबाजों के नाम ढूंढिए. नाम उपर से नीचे एवं तिरछे हो सकते हैं.

सचिन तेंदुलकर, ब्रायन लारा, एडम गिलक्रिस्ट, राहुल द्रविड़, मैथ्यू हैडन, महेला जयवर्धने, इंजमाम उल हक, कुमार संगकारा, जैक्स कालिस, युवराज सिंह

शब्दजाल - 6875 का हल

श	रा	आ	स्ट्रे	लि	या	ह	ट	झ	क	अ
छ	क	र	ह	रिं	लै	ता	दि	शा	को	मे
ट	र	ना	झि	दा	इ	सिं	बे	ला	ल	रि
प	म	दा	डा	ल	क	डो	हा	दा	र	का
व	रा	र	ष	हा	मि	री	ने	स	र	ट
ह	ह	प	व	पे	ह	ला	ती	शि	न	ती
भा	र	त	अं	रू	स	ट	ह	ला	या	क
बा	जी	वा	ला	क	छ	सौ	न	कों	जू	ट
स	थो	तें	ब्रा	जी	ल	दा	ने	गो	र	द
र	ल	प	ति	रं	ट	ऐ	बें	न	रु	थो
ची	न	पा	ह	ट	ख	बौ	ख	ला	ह	ट

■ Jagrutidaur.com, Bangalore

आज का इतिहास

1941 द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटेन सोवियत आपसी सहायता समझौता हुआ.

1959 युवराज करीम दो करोड़ इस्माइल मुसलमानों के आगा खान बने.

1960 फ्रांस दाहोमी, नाइजर अपर वोल्टा, आईवरी कोस्ट, चाड, सेंट्रल अफ्रीका और कांगो को स्वतंत्र करने के लिए राजी हुआ.

1979 किरिबाती 80 वर्ष के ब्रिटिश शासन के बाद स्वतंत्र हुआ.

1990 लेबनान के विधिमंत्री नबी बेरी ने वित्तीय आपात स्थिति लागू करने की मांग की.

1993 उत्तरी जापान में भूस्खलन और समुद्री लहरों से दो सौ से अधिक लोग मारे गए.

1996 ब्रिटेन के युवराज चार्ल्स और राजकुमारी डायना के बीच तलाक हुआ.

1998 फ्रांस, ब्राजील को 3 0 से हराकर विश्वकप फुटबॉल चैम्पियन बना.

2007 8वां विश्व हिन्दी सम्मेलन अमरीका के न्यूयॉर्क में शुरू.

संक्षिप्त खबरें

लातेहार पुलिस को बड़ी सफलता, राहुल सिंह गिरोह के 6 गुर्गे हथियार के साथ गिरफ्तार

लातेहार : कुख्यात अपराधी राहुल सिंह गिरोह के छह गुर्गों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है. पुलिस ने उनके पास से हथियार भी बरामद किया है. इस आशय की जानकारी पुलिस अधीक्षक कुमार गौरव ने पुलिस मुख्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में दी है. उन्होंने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि कुख्यात अपराधी राहुल सिंह के इशारे पर कुछ अपराधी हथियारों से लैश होकर चंदवा के चिरो मोड़ स्थित यात्री शेड के पास जमे हुए हैं. इसी सूचना पर कार्रवाई करते हुए उन्हें दबोच लिया गया. लातेहार एसपी कुमार गौरव ने बताया कि गिरफ्तार अपराधियों ने 10 जून 2025 को चंदवा के टोरी साइडिंग पर रंगदारी के लिए गोली चलायी थी. इसमें एक गोली एक कंटेनर में लगी थी. बावजूद इसके उन्हें किसी प्रकार की रंगदारी नहीं मिली. इसके बाद सभी अपराधी फिर वहां रंगदारी के लिए शराब पी कर गोलीबारी एवं लूटपाट की योजना बना रहे थे. वहां पर कुछ मोटरसाइकिल एवं स्कूटी भी खड़ी थी. खबर सत्यापन के बाद एसडीपीओ अरविंद कुमार के नेतृत्व में छापामारी दल का गठन किया गया. छापामारी दल ने चिन्हित स्थल पर छापामारी की.

गिरिडीह में एसीबी की दबिश, रिश्वत के साथ राजस्व कर्मचारी को दबोचा

गिरिडीह: एंटी करप्शन ब्यूरो धनबाद की टीम ने गिरिडीह में एक बार फिर से दबिश दी है. इस बार जिला के गावां में छापा मारा गया है. एंटी करप्शन ब्यूरो धनबाद की टीम ने यहां से शंकर त्रिगुनाइक नाम के राजस्व कर्मचारी को गिरफ्तार किया है. शंकर को 20 हजार रुपये के साथ गिरफ्तार किया गया. शंकर की गिरफ्तारी शुक्रवार को गावां बाजार स्थित बेलु राम के घर में स्थित आवास से की गई. गिरफ्तारी के बाद शंकर को लेकर एंटी करप्शन ब्यूरो की टीम धनबाद निकल गई. एसीबी ने यह कार्रवाई गावां थाना इलाके के सांख निवासी राजू प्रसाद यादव की शिकायत पर की है. दरअसल राजू को अपनी जमीन का दाखिल खारिज करवाना था. इसे लेकर उसने राजस्व कर्मचारी शंकर त्रिगुनाइक से सम्पर्क किया. राजू के मुताबिक कर्मचारी ने उससे दाखिल-खारिज और रसीद काटने के एवज में 50 हजार की मांग रखी. राजू को यह नागवार लगा वह सीधे धनबाद एसीबी के एसपी के पास जा पहुंचा और लिखित शिकायत कर दी.

सांप के काटने से विधायक आलोक चौरसिया के दो नाती समेत तीन की मौत, दो की हालत गंभीर

पलामू: जिले के चैनपुर क्षेत्र में सर्पदंश की दो अलग-अलग घटनाओं में विधायक आलोक चौरसिया के दो नाती और एक महिला की मौत हो गई. जबकि विधायक आलोक चौरसिया के दामाद और मृतक महिला के पति की हालत गंभीर बनी हुई है. घटना पलामू के चैनपुर थाना क्षेत्र के नरसिंहपुर पथरा और बासडीह गांव की है. नरसिंहपुर पथरा गांव में विधायक आलोक चौरसिया के भाई भीषम चौरसिया के दामाद प्रेम चौरसिया और उनके दो बेटों अर्जुन कुमार और देव कुमार को गुरुवार देर रात एक जहरीले सांप ने डस लिया. तीनों को इलाज के लिए मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया. जहां से सभी को बेहतर इलाज के लिए रिम्स रेफर कर दिया गया. परिजन तीनों को इलाज के लिए तुंबागड़ा स्थित नवजीवन अस्पताल ले गए. लेकिन रास्ते में ही अर्जुन कुमार और देव कुमार की मौत हो गई. वहीं प्रेम चौरसिया की हालत गंभीर बनी हुई है. तीनों घर में एक साथ सो रहे थे और इसी दौरान उन्हें सांप ने डस लिया.

तेज नारायण बने बहरीन यूथ कबड्डी टीम के हेड कोच, झारखंड के लिए गौरव का क्षण

रांची: झारखंड के कबड्डी प्रेमियों के लिए गर्व की खबर है. बोकारो निवासी और अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी कोच तेज नारायण प्रसाद माधव को तृतीय यूथ एशियन गेम्स 2025 में मेजबान देश बहरीन की यूथ कबड्डी बालक टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया गया है. यह नियुक्ति बहरीन ओलंपिक एसोसिएशन और अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी महासंघ (IKF) की हाई पावर कमेटी की अनुशंसा पर बहरीन सरकार द्वारा की गई है. 22 से 31 अक्टूबर 2025 तक बहरीन में आयोजित हो रहे तीसरे यूथ एशियन गेम्स में पहली बार कबड्डी खेल को शामिल किया गया है, जिससे यह जिम्मेवारी और भी ऐतिहासिक बन जाती है. तेज नारायण 14 जुलाई को बहरीन रवाना होंगे और प्रतियोगिता समाप्ति के बाद नवंबर के पहले सप्ताह में लौटेंगे.

सावन के पहले दिन बाबा धाम में श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़

दूर-दूर से भक्त पहुंच रहे देवघर, ट्रैफिक को लेकर तय किए गये रूट

देवघरः आज से सावन शुरू हो गया है. सावन के पहले दिन देवघर के बाबा धाम मंदिर में सुबह से ही भक्तों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी. सुबह से ही श्रद्धालु बाबा बैद्यनाथ पर जल अर्पण करने के लिए कतार में लगे रहे. सावन के पहले दिन दिल्ली, मुंबई, नासिक, गोवा, उत्तर प्रदेश और बिहार से भी कई श्रद्धालु देवघर के बैद्यनाथ धाम मंदिर पहुंचे हैं.

पुजारियों के अनुसार, सबसे पहले पुजारी और पंडाओं द्वारा भगवान भोलेनाथ की विधिवत पूजा की गई और जलाभिषेक किया गया. इसके बाद सुबह 4:00 बजे मंदिर के पट श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए. तब से ही श्रद्धालु बैद्यनाथ धाम स्थित मनोकामना लिंग पर जलाभिषेक करने पहुंच रहे हैं. बाबा मंदिर आए श्रद्धालुओं ने बताया कि पहले दिन को देखते हुए व्यवस्था अच्छी है. भीड़ के कारण थोड़ी परेशानी हो रही है, लेकिन जिला प्रशासन द्वारा मंदिर के आसपास की गई पुख्ता व्यवस्था लोगों की परेशानी कम कर रही है. श्रावणी मेला शुरू होते ही मंदिर में अर्घा प्रणाली के माध्यम से जलाभिषेक किया जा रहा है. यह व्यवस्था पहले दिन से ही शुरू कर दी गई है. चूंकि श्रावणी मेला में श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए स्पर्श दर्शन संभव नहीं है, इसलिए अर्घा प्रणाली के माध्यम से जलाभिषेक किया जा रहा है. मंदिर में सुरक्षा के भी पुख्ता इंतजाम किए गए हैं. बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है. देवघर के श्रीराम झा चौक से लेकर मंदिर परिसर के चप्पे-चप्पे पर पुलिस तैनात है.

मंदिर के पुजारियों और छोटे व्यापारियों ने बताया कि पिछले साल की तुलना में इस साल श्रद्धालुओं की भीड़ काफी ज्यादा रहने की उम्मीद है. पहले दिन की भीड़ को देखते हुए उम्मीद जताई जा रही है कि शाम तक लगभग एक लाख श्रद्धालु जलाभिषेक कर सकेंगे. गौरतलब है कि इस साल लगभग पचास से साठ लाख श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद है और इसी आंकड़े को देखते हुए जिला प्रशासन ने अपने स्तर पर व्यवस्था की है. बता दें कि 10 जुलाई को राज्य के पर्यटन मंत्री ने श्रम और पंचायती राज मंत्री के साथ मिलकर देवघर के श्रावणी मेले का आधिकारिक उद्घाटन किया है.

14 जुलाई को सावन का पहला सोमवार

मालूम हो आज 11 जुलाई से सावन शुरू हुआ है, जो कि 9 अगस्त तक चलेगा. मान्यता है कि सावन का महीना भोले बाबा को सबसे अधिक प्रिय होता है. महादेव अपने भक्तों की हर मनोकामना पूरी करते हैं. इस बार सावन में 4 सोमवार पद रहे हैं. पहला सोमवार 14 जुलाई को पड़ेगा. जबकि आखिरी सोमवार 4 अगस्त को पड़ेगा. सोमवार को सभी शिवालयों में शिव भक्तों का जनसैलाब उमड़ता है.

श्रावणी मेला को लेकर बनाया गया अस्थायी बस स्टैंड

देवघरः श्रावणी मेले को लेकर जिला प्रशासन की तरफ से हर विभाग को सारी तैयारियों को दुरुस्त रखने का दिशा निर्देश दिया गया है. परिवहन व्यवस्था को सरल और सुगम बनाकर रखने के लिए देवघर उपायुक्त नमन प्रियेश लकड़ा के द्वारा यह स्पष्ट कहा गया है कि श्रद्धालुओं को किसी भी तरह की कोई परेशानियों का सामना न करना पड़े. श्रावणी मेला के दौरान जाम की समस्या को देखते हुए उपायुक्त ने यह निर्णय लिया है कि इस दौरान आईएसबीटी बस स्टैंड को शहर के क्लब ग्राउंड के पास शिफ्ट किया जाएगा. इसको लेकर उपायुक्त के द्वारा बस एसोसिएशन और ई-रिक्शा संगठन के लोगों से बात हो चुकी है. उन्हें निर्देश दे दिया गया है कि कौन से रूट से अपनी गाड़ियों का परिचालन करना है. ट्रैफिक को लेकर जिला प्रशासन के द्वारा रूट तय कर दिए गए हैं. क्लब ग्राउंड के पास बस स्टैंड को सिर्फ एक महीने के लिए शिफ्ट किया गया है. यहां से सिर्फ बासुकीनाथ के लिए गाड़ियों का आवागमन होगा. इसके अलावा अन्य शहरों के लिए आईएसबीटी बस स्टैंड से ही बसों का परिचालन किया जाएगा. उपायुक्त ने बताया कि यह निर्णय इसलिए लिया गया है, क्योंकि मंदिर से बाघमारा स्थित आईएसबीटी बस स्टैंड की दूरी ज्यादा है. इसीलिए बासुकीनाथ जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए वैकल्पिक बस स्टैंड बनाया गया है.

बाबा बासुकीनाथ धाम में उमड़ी कांवरियों की भीड़

दुमकाः विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला शुरू हो गया है. आज सुबह से ही बासुकीनाथ शिवगंगा तट पर जल चढ़ाने के लिए कांवरियों की कतार लगी रही. कांवरियों को क्यू कॉम्प्लेक्स से मंदिर में प्रवेश कराया जा रहा है. सावन का पूरा महीना बिना किसी बाधा के संपन्न हो, इसके लिए पंडा समाज ने बाबा भोलेनाथ की विशेष पूजा-अर्चना की. सावन माह के पहले दिन बाबा बासुकीनाथ का फौजदारी दरबार भगवाधारी कांवरिया शिवभक्तों से गुलजार हो गया है. ब्रह्म मुहूर्त में बाबा बासुकीनाथ मंदिर के पट आम श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए. शिवगंगा तट से क्यू कॉम्प्लेक्स होते हुए पूजा-अर्चना के लिए श्रद्धालुओं की कतार लगी हुई है. शिवभक्त अपनी बारी का इंतजार करते हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे हैं.

विधायक सरयू राय के आवास पर 25वां रामार्चा पूजा व रुद्राभिषेक संपन्न

70,000 से अधिक श्रद्धालुओं ने ग्रहण किया महाप्रसाद

जमशेदपुरः जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय ने शुक्रवार को रुद्राभिषेक किया। रुद्राभिषेक का यह कार्यक्रम दोपहर पौने दो बजे तक चला। रुद्राभिषेक के संपन्न होने के बाद महाप्रसाद वितरण प्रारंभ हुआ। मोटे तौर पर 70 हजार से ज्यादा श्रद्धालुओं ने महाप्रसाद ग्रहण किया। महाप्रसाद का आयोजन मिलानी हॉल में और सेवा सड़क (सर्विस लेन) पर किया गया था। शुक्रवार की सुबह रुद्राभिषेक की शुरुआत भगवान गणेश जी और माता अंबिका जी के पूजन के साथ हुई। इसके बाद वरुण देवता की स्थापना की गई और उनका पूजन किया गया। इसके पश्चात मात्रिका पूजन हुआ। फिर सूर्यादि नवग्रह, रक्षा विधान, पार्थिवेश्वर महादेव का षोडषोप्रचार (16 प्रकार) से पूजन हुआ। इसके बाद नमक-चमक रुद्राभिषेक किया गया। इसके पश्चात आरती और पुष्पांजलि दी गई। फिर ब्राह्मणों ने भगवान भोलेनाथ के भजन गाए। भजन के साथ ही रुद्राभिषेक संपन्न हुआ। इस रुद्राभिषेक के मुख्य यजमान जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय थे। अन्य यजमानों में आकांक्षा नायर, युगांतर भारती के अध्यक्ष अंशुल शरण, पारुल सिंह, रोहेल रंजन आदि सपरिवार इसमें शामिल हुए।

खूंटी में बाबा आम्रेश्वर धाम पहुंचे केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री

सावन मेले का किया उद्घाटन, भोलेनाथ से मांगी देश के लिए सुख समृद्धि

खूंटीः बाबा आम्रेश्वर धाम में आज से श्रावणी मेला शुरू हो गया है. इस अवसर पर केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ और खूंटी विधायक रामसूर्या मुंडा ने नारियल फोड़कर सावन मेले का उद्घाटन किया.

यह आयोजन बाबा आम्रेश्वर धाम प्रबंध समिति द्वारा आयोजित किया गया. इस दौरान केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने बाबा भोलेनाथ की पूजा-अर्चना की और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए विशेष प्रार्थना की. उन्होंने बाबा से आशीर्वाद मांगा कि प्रधानमंत्री मोदी और अधिक शक्तिशाली हों तथा उनके संकल्प के अनुसार 2047 तक भारत विश्व का सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बन सके.

हर हर महादेव के जयघोष से गूंजा मंदिरः इस अवसर पर खूंटी विधायक रामसूर्या मुंडा ने सभी झारखंडवासियों को सावन की शुभकामनाएं दीं और धन्यवाद व्यक्त किया. उन्होंने कहा, "सावन का यह पर्व इसी तरह आता-जाता रहे और हम सभी का मिलन होता रहे." केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री व सांसद संजय सेठ ने कहा कि आज सावन का पहला दिन है और देवों के देव महादेव का जलाभिषेक व रुद्राभिषेक न केवल पूरे देश में, बल्कि विश्व भर में किया जा रहा है.

झारखंड के विकास के लिए मांगा आशीर्वादः संजय सेठ ने झारखंड के विकास के लिए भी बाबा भोलेनाथ से आशीर्वाद मांगा और कहा कि झारखंड के लोग विकसित हों, स्वस्थ रहें और विकसित भारत के निर्माण में अपना योगदान दें. उन्होंने 40 वर्ष पहले अपनी कांवड़ यात्रा का जिक्र करते हुए बताया कि वे रांची के अल्बर्ट एक्का चौक से खूंटी तक और फिर वहां से पैदल बाबा आम्रेश्वर धाम पहुंचते थे. उन्होंने कामना की कि सावन के पावन महीने में सभी देशवासियों को बाबा महादेव का भरपूर आशीर्वाद प्राप्त हो.

उपायुक्त, एसपी और एसडीओ सहित कई गणमान्य व्यक्ति रहे उपस्थितः सावन के शुभारंभ के अवसर पर तोरपा विधायक सुदीप गुड़िया, खिजरी के पूर्व विधायक रामकुमार पाहन, उपायुक्त आर. रोनिता, पुलिस अधीक्षक मनीष टोप्पो, अनुमंडल पदाधिकारी दीपेश कुमारी, उप विकास आयुक्त आलोक कुमार, सहायक पुलिस अधीक्षक क्रिस्टोफर केरकेट्टा, डीएसपी वरुण रजक, मुरहू व तोरपा के अंचल अधिकारी व प्रखंड विकास अधिकारी उपस्थित थे. इसके अलावा, बाबा आम्रेश्वर धाम प्रबंध समिति के अध्यक्ष लाल ज्ञानेंद्रनाथ शाहदेव, उपाध्यक्ष प्रेम महतो, रामेश मांझी, महामंत्री मनोज कुमार सिंह, सचिव संतोष पोद्दार, कार्यालय प्रभारी सत्यजीत कुंडू सहित अन्य पदाधिकारी और श्रद्धालु भी मौजूद रहे.

चाईबासा में जवानों ने नक्सलियों के बंकर किए तबाह

2 आइईडी समेत अन्य सामग्री बरामद

चाईबासाः कोबरा 209 और जिला पुलिस बल द्वारा संयुक्त दल बनाकर नक्सलियों के खिलाफ सर्च अभियान किया गया. इस दौरान छोटानागरा थानान्तर्गत जंगली पहाड़ी के क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा पूर्व से लगाये गये लगभग 2 आईईडी और अन्य दैनिक सामग्री 5 नक्सल बंकर से बरामद की गई है. बरामद आईईडी को सुरक्षा की दृष्टिकोण से उसी स्थान पर बम निरोधक दस्ता की सहायता से नष्ट कर दिया गया. इसके साथ ही नक्सल बंकर को सुरक्षा बलों ने ध्वस्त कर दिया.

पुलिस अधीक्षक कार्यालय ने जानकारी दी कि प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा (माओ) के शीर्ष नेता मिसिर बेसरा, अनमोल, मोछु, अनल, असीम मंडल, अजय महतो, सागेन अंगरिया, अश्विन, पिंटु लोहरा, चंदन लोहरा, अमित हांसदा उर्फ अपटन, जयकांत, रापा मुंडा एवं अन्य नक्सली अपने दस्ता सदस्यों के साथ सारंडा कोल्हान क्षेत्र में विध्वंसक गतिविधि के लिए भ्रमणशील हैं. जिसके चलते चाईबासा पुलिस, कोबरा, सीआरपीएफ और झारखंड जगुआर की टीमों का संयुक्त दल गठित कर लगातार अभियान का संचालन किया जा रहा है.

सुरक्षाबलों को नुकसान पहुंचाने की मकसद रखी गई थी आईईडीः पुलिस अधीक्षक, पश्चिमी सिंहभूम चाईबासा को 7.7.2025 को गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी कि प्रतिबंधित भाकपा (माओ) नक्सली संगठन के उग्रवादियों के द्वारा छोटानागरा थानान्तर्गत जंगली पहाड़ी क्षेत्र में गोला बारूद छिपाकर सुरक्षाबलों के खिलाफ उनका अभियान रोकने और लक्षित कर नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से रखा गया है. जिसके आलोक में झारखंड पुलिस (चाईबासा पुलिस) एवं कोबरा 209 बटालियन के साथ एक संयुक्त अभियान दल का गठन करते हुए 8 जुलाई को छोटानागरा थानान्तर्गत जंगली पहाड़ी क्षेत्र में सर्च अभियान शुरू किया गया था. संयुक्त अभियान दल के द्वारा अग्रतर सर्च अभियान के दौरान शुक्रवार को छोटानागरा थानान्तर्गत जंगली पहाड़ी के क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा पहले से लगाए गए लगभग 2 IED समेत लगभग 5 नक्सल बंकरों से दैनिक सामग्री बरामद की गई है. बरामद आईईडी को सुरक्षा की दृष्टिकोण से उसी स्थान पर बम निरोधक दस्ता की सहायता से नष्ट कर दिया गया.

पूर्व मंत्री आलमगीर आलम को बड़ा झटका, हाईकोर्ट ने नहीं दी बेल

रांचीः टेंडर घोटाला के जरिए करोड़ों रुपए की मनी लॉन्ड्रिंग करने के आरोपी पूर्व मंत्री आलमगीर आलम की जमानत याचिका पर झारखंड हाईकोर्ट ने सुना दिया है. हाईकोर्ट ने आलमगीर आलम को जमानत देने से इनकार कर दिया है. हाईकोर्ट के आदेश से आलमगीर आलम को बड़ा झटका लगा है. दरअसल 26 जून को ईडी और बचाव पक्ष की ओर से बहस पूरी होने के बाद कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था. आलमगीर आलम की जमानत याचिका पर हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद की कोर्ट में सुनवाई हुई. आलमगीर आलम को रांची पीएमएलए (प्रीवेन्शन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट) की विशेष कोर्ट ने बेल देने से इंकार करते हुए जमानत याचिका खारिज कर दी थी. जिसके बाद उन्होंने हाईकोर्ट में जमानत के लिए गुहार लगाई गई थी. लेकिन हाईकोर्ट से उन्हें राहत नहीं मिली.

झारखंड में 1 सितंबर से शराब दुकानों पर लागू होगी नई उत्पाद नियमावली

उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग की ओर से अधिसूचना जारी

रांची: झारखंड में अब 1 सितंबर से निजी हाथों में शराब की खुदरा बिक्री का काम शिफ्ट हो जाएगा. उस दिन से झारखंड उत्पाद (मदिरा की खुदरा बिक्री हेतु दुकानों की बंदोबस्ती एवं संचालन) नियमावली, 2025 के तहत खुदरा उत्पाद दुकानों का संचालन होगा. उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग की ओर से इस बाबत अधिसूचना जारी कर दी गई है. अब सवाल है कि क्या 1 सितंबर तक राज्य में शराब की सभी खुदरा दुकानें बंद रहेंगी. इसका जवाब है नहीं. अगर ऐसी बात है तो फिर ज्यादातर खुदरा शराब की दुकानें बंद क्यों हैं. झारखंड शराब व्यापारी संघ के महासचिव सुबोध कुमार जायसवाल ने कहा की. 1 सितंबर से इस व्यवस्था से होगी शराब की बिक्री। सुबोध कुमार जायसवाल का कहना है कि आज से 45 दिनों के भीतर लॉटरी के जरिए निजी हाथों में शराब दुकानों के आवंटन की प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी. इससे पहले दुकानों के रेवेन्यू और टारगेट की लिस्ट तैयार होगी. उसी आधार पर ऑनलाइन लॉटरी होगी. उनके मुताबिक 15 अगस्त तक इस प्रक्रिया को पूरा करना है. तबतक खुदरा दुकानों का संचालन झारखंड बिवरेज कॉर्पोरेशन लिमिटेड के स्तर से किया जाएगा. इस दौरान मैनपावर की कमी की वजह से आधी से ज्यादा दुकानों के बंद रहने की संभावना है. फिलहाल, प्लेसमेंट एजेंसियों से जुड़े स्टॉफ के जरिए जेएसबीसीएल की देखरेख में दुकानें संचालित होगी.

बता दें कि झारखंड में फिलहाल 1,453 शराब की खुदरा दुकानें संचालित हो रही थी. अब नई व्यवस्था के तहत शराब दुकानों की संख्या बढ़कर 1600 के करीब होने की संभावना है. इससे राज्य सरकार के राजस्व में इजाफा होगा. साथ ही निजी हाथों से दुकानों का संचालन होने पर बाजार में एक प्रतिस्पर्धा विकसित होगी. इसका फायदा ग्राहकों को मिलेगा. दुकानों में हर तरह के कलेक्शन रखने होंगे. अब तक प्लेसमेंट एजेंसियों की मोनोपॉली थी. दुकान के स्टॉफ ग्राहकों से प्रिंट से ज्यादा रकम वसूलते थे. लेकिन 1 सितंबर से इस तरह की धांधली और मनमानी पूरी तरह बंद हो जाएगी.

ज्यादातर दुकानों में क्यों नहीं है शराब का स्टॉक

इस सवाल पर सुबोध कुमार जायसवाल का कहना है कि अब तक प्लेसमेंट एजेंसियों के जरिए खुदरा शराब दुकानों का संचालन हो रहा था. लिहाजा, नई व्यवस्था को लागू करने के लिए पिछले कुछ दिनों तक दुकानों में सटॉक का मिलान, हैंडओवर और टेकओवर के साथ-साथ सेल और डिपोजिट की प्रक्रिया पूरी की जा रही थी. इस वजह से शराब कंपनियों को ऑर्डर निर्गत नहीं हुआ था. अब कंपनियों को भुगतान हो गया है. पूरी संभावना है कि दो से तीन दिन के भीतर वैकल्पिक व्यवस्था के तहत संचालित दुकानों में शराब का स्टॉक उपलब्ध हो जाएगा.

-:श्री श्री विश्वविद्यालय में गुरुपूर्णिमा:-

ध्यान, पूजा और संगीत का मधुर संगम

राँचीः ओड़िशा के कटकस्थित श्री श्री विहार अन्तर्गत श्री श्री विश्वविद्यालय परिसर में ध्यान, गुरुपूजा और संगीत की मधुर ध्वनियों के साथ भव्य समारोह में पावन गुरुपूर्णिमा मनाई गई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में पूरे दिन विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस उत्सव में विश्वविद्यालय की प्रेसिडेण्ट प्रोफेसर रजिता कुलकर्णी ने उपस्थित रहकर गुरुदेव श्री श्री रविशंकर की अमृतवाणी को स्मरण करते हुए गुरु तत्व के गहन महत्व को बहुत सुंदर ढंग से समझाया। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह सात बजे से लंबी सुदरशन क्रिया से हुई, जिसमें भाग लेने वाले छात्र और कर्मचारियों को गहरी मानसिक शांति की अनुभूति हुई। इसके पश्चात् सुबह दस बजे शारीरिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए आयुष होमयज्ञ आयोजित किया गया। दोपहर तीन बजे विश्वविद्यालय के फैकल्टी सदस्यों के लिए दीर्घ क्रिया का आयोजन किया गया। इसके पश्चात् शाम लगभग छह बजे से सामूहिक गुरुपूजा, गुरु वंदना और भजन संगीत की प्रस्तुति की गई। इस सबके साथ संपूर्ण सत्संग और प्रसाद वितरण के माध्यम से उत्सव को सर्वसुलभ और आनंददायक बनाया गया। वास्तव में गुरुपूर्णिमा का यह दिन ध्यान, आनंद और श्रद्धा के माध्यम से गुरु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का एक अद्भुत अवसर बन गया। इस कार्यक्रम में श्री श्री विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर तेजप्रताप, कार्मिक निर्देशक स्वामी सत्यचैतन्य, कार्यनिर्वाही प्रबंधक प्रो. अनिल कुमार शर्मा, मानव संसाधन विभाग के उप निर्देशक ज्योतिरंजन गड़नायक समेत कई विशिष्टजन उपस्थित थे।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक किशोर कुमार पाण्डेय द्वारा डी. बी. कॉर्प लिमिटेड, प्लॉट नं. 535 एवं 1272, लालगुटुआ, रांची से मुद्रित एवं फर्स्ट फ्लोर, 105, नायल कॉम्प्लेक्स, कांटाटोली, रांची-834001 (झारखण्ड) से प्रकाशित, आर.एन.आई. नं. JHAHIN/50549 फोन नं. 8084372014, Email : koylanchalsamvad@gmai.com & koylanchal.hindi@gmail.com *समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट तहत जिम्मेदार।